दैनिक नर्मदापुरम् जिले का प्रथम दैनिक K ✌ K RNI No.61546/95

क्षितिज ✌ किरण

त्वदीय पाद पंकजम् नमामि देवी नर्मदे | नर्मदापुरम् संभाग सीहोर जिले एवं जबलपुर से एक साथ प्रकाशित एकमात्र समाचार-पत्र

प्रेरणापुंज -विचित्र कुमार सिन्हा वर्ष-30 अंक-280 नर्मदापुरम (होशंगाबाद) रविवार 22 दिसम्बर 2024 पृष्ठ-8 मूल्य -1 रूपये सम्पादक- कृष्णाकान्त सक्सेना

चुनाव से पहले अरविंद केजरीवाल की बढ़ी मुसीबतें

आबकारी नीति मामले में अब ईडी चलाएगी केस,एलजी ने दी हरी झंडी

नई दिल्ली (आरएनएस)। विधानसभा चुनाव से पहले अरविंद केजरीवाल की बढ़ी मुसीबतें, आबकारी नीति मामले में अब ईडी चलाएगी केस, एलजी ने दी हरी झंडी दिल्ली में विधानसभा चुनाव से पहले पूर्व सीएम अरविंद केजरीवाल एक बार फिर मुसीबत में फंसने वाले हैं। उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने आबकारी नीति मामले में अरविंद केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को मंजूरी दे दी है। ये जानकारी उपराज्यपाल के कार्यालय की ओर से दी गई है। 5 दिसंबर को प्रवर्तन निदेशालय ने अरविंद केजरीवाल के खिलाफ मुकदमा चलाने की मंजूरी मांगी थी। वहीं, अब जाकर उपराज्यपाल ने ईडी को आबकारी नीति मामले में केजरीवाल के खिलाफ केस चलाने की हरी झंडी दे दी है। केजरीवाल पर ये एक्शन अगले साल फरवरी में होने वाले दिल्ली विधानसभा चुनाव से कुछ महीने पहले ही लिया गया है।

केजरीवाल और सिसोदिया को कोर्ट से मिला अतिरिक्त समय

इस बीच, दिल्ली होई कोर्ट ने शुक्रवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया द्वारा दायर याचिका पर अपना जवाब दाखिल करने के लिए अतिरिक्त समय दिया है। याचिका में दिल्ली आबकारी शराब नीति मामले में आरोपपत्रों पर संज्ञान लेने के ट्रायल कोर्ट के फैसले को चुनौती दी गई है।हाल ही में दिल्ली हाई कोर्ट ने आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया की याचिका पर नोटिस जारी किया था, जिसमें कथित आबकारी नीति घोटाले में उनके खिलाफ प्रवर्तन निदेशालय की चार्जशीट पर संज्ञान लेने के ट्रायल कोर्ट के फैसले को चुनौती दी गई थी।

आबकारी नीति मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने आरोप लगाया था कि इस घोटाले में 6प्रतिशत रिश्वत के बदले में निजी संस्थाओं को 12 प्रतिशत मार्जिन के साथ थोक शराब वितरण अधिकार दिए गए।

देवास में आग का तांडव, पति-पत्नी और दो बच्चे जिंदा जले

देवास (आरएनएस)। मध्य प्रदेश के देवास में शनिवार तड़के सुबह एक दर्दनाक हादसा हुआ। नयापुरा क्षेत्र में एक मकान में भीषण आग लगने से एक ही परिवार के 4 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। मृतकों में दिनेश कारपेंटर, उनकी पत्नी गायत्री, बेटी इशिका और बेटा चिराग शामिल है।जानकारी के अनुसार, घर के नीचे दूध डेयरी में लगी आग ने विकराल रूप लिया और बिल्डिंग की दूसरी मंजिल को अपने चपेट में ले लिया। स्थानीय लोगों ने आग लगने की सूचना पुलिस को दी, जिसके बाद पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची। काफी देर की मशक्कत के बाद फायर ब्रिगेड ने आग पर काबू पाया जा सका।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कुवैत पहुंचने पर गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

सहारनपुर में किसानों ने कलेक्ट्रेट के गेट को ट्रैक्टर से तोड़ा, एडीएम को कुचलने का प्रयास

सहारनपुर (आरएनएस)। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले में प्रदर्शन के बाद कलेक्ट्रेट में ज्ञापन देने पहुंचे किसानों की पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों में तीखी नोकझोंक हो गई। ज्ञापन देने पहुंचे किसानों के ट्रैक्टर को जिला प्रशासन के अधिकारियों ने अंदर जाने से मना किया तो एक ट्रैक्टर चालक ने एडीएम को कुचलने का प्रयास किया। इसके बाद हंगामा खड़ा हो गया।इस दौरान किसानों ने प्रशासन पर लाठीचार्ज करने का आरोप लगाया। किसानों ने बंद गेट में टक्कर मारकर गेट तोड़ दिया। इसके बाद एडीएम भी किसानों पर भड़क गई।दरअसल जब किसान कलेक्टर के गेट पर पहुंचे तो पुलिस प्रशासन ने किसानों को रोकने का प्रयास किया, इसके बाद किसानों ने बंद कलेक्ट्रेट के गेट को ट्रैक्टर से तोड़ दिया। सामने खड़ी एडीएम को आगे से हटना पड़ा, वरना बड़ा हादसा हो सकता था। किसानों ने ट्रैक्टर की स्पीड बढ़ा दी और कलेक्ट्रेट के अंदर घुस गए।किसान मजदूर संगठन (पूरण सिंह) के जिलाध्यक्ष ठाकुर अजब सिंह के नेतृत्व में अपनी मांगों को लेकर कलेक्ट्रेट में ज्ञापन देने पहुंचे थे। किसान नानौता से ट्रैक्टर से चलकर दिल्ली रोड पहुंचे थे। वहां से पैदल ही कलेक्ट्रेट पहुंचे। लेकिन उससे पहले ही जिला प्रशासन ने कलेक्ट्रेट का गेट बंद कर दिया।

उज्जैन को तकनीकी, संस्कृति और आर्थिक शक्ति का बनायेंगे केन्द्र : मुख्यमंत्री डॉ.यादव

उज्जैन को मिला आईटी पार्क, डिजिटल भविष्य की ओर ऐतिहासिक कदम

मुख्यमंत्री ने 46 करोड़ रूपये की लागत से बनने वाले आईटी पार्क का किया भूमि-पूजन

भोपाल (आरएनएस)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि आज का दिन उज्जैन के निवासियों के लिए और हम सबके लिए अत्यंत गौरव का क्षण है। यह एक अलग इतिहास बनकर स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज किया जाएगा। उज्जैन जो अपनी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर के लिए विश्व प्रसिद्ध है, अब तकनीकी क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनाएगा। उज्जैन में प्राचीनकाल से ही विज्ञान, खगोलशास्त्र और गणित के विद्वान रहे हैं। इसी भूमि पर आधुनिक विज्ञान की नींव रखी गई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव उज्जैन में आईटी पार्क के भूमि-पूजन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने शनिवार को शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज के सामने इंदौर रोड़ पर एमपी इंडस्ट्रीयल डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड के द्वारा 46 करोड़ रूपये की लागत से निर्मित होने वाले आईटी पार्क का भूमि पूजन किया। मुख्यमंत्री डॉ.

यादव ने आगामी फरवरी-2025 में भोपाल में आयोजित होने वाली ग्लोबल इंवेस्टर समिट के लोगो को लॉन्च किया। साथ ही इंवेस्टर समिट की ऑफिशियल वेबसाईट investmp.in का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारे युवाओं को अब रोजगार की तलाश में घर से अधिक दूर नहीं जाना होगा। हम एक नए ईको सिस्टम का निर्माण करेंगे। वर्तमान समय में देश और प्रदेश में महत्वपूर्ण बदलाव हो रहे हैं। हमारे देश में सबसे अधिक आबादी युवा वर्ग की है।

हमारी युवा शक्ति में भविष्य की संभावनाओं को लेकर आगे बढ़ने की सकारात्मक शक्ति है। हमारे युवाओं के हाथ में शक्ति, उनके पैरों में गति और मस्तिष्क में भविष्य की दूरदृष्टि है। बस उन्हें सरकार के प्रोत्साहन की आवश्यकता है। आज हमारे देश के युवा विश्व की कई बड़ी कंपनियों में सीईओ के पद पर पदस्थ हैं तथा भारत का नाम रोशन कर रहे हैं। आज पूरी दुनिया आशा से भारत की तरफ देख रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि उज्जैन में आईटी पार्क के निर्माण के बाद प्रत्यक्ष रूप से 500 से अधिक स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे और सहायक सेवाओं (कैफे, परिवहन और आवास) के माध्यम से 1 हजार से अधिक लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर मिलेंगे।

जम्मू-कश्मीर में पारा -8.5 डिग्री पहुंचा

मध्य प्रदेश में अभी राहत, चार दिन बाद बढ़ेगी ठंड, राजस्थान में छाया घना कोहरा

श्रीनगर,(ए)। जम्मू-कश्मीर में शनिवार से चिल्लई कलां की शुरुआत हुई। चिल्लई फारसी शब्द है, हिंदी में इसका मतलब बहुत ज्यादा ठंड होता है। अब अगले 40 दिन यहां बहुत ज्यादा बर्फबारी होगी। श्रीनगर में तापमान -8.5 डिग्री पहुंच गया है। यहां 133 साल में तीसरी बार पारा इतने नीचे गिरा है। मौसम विभाग ने बताया कि मध्य प्रदेश में पिछले तीन दिनों से ठंड से राहत है। यह दौर 4 दिन तक जारी रहेगा, लेकिन उसके बाद तापमान में गिरावट आएगी।वहीं, राजस्थान में शनिवार सुबह घना कोहरा छाया रहा। सीकर में विजिबिलिटी 50 मीटर दर्ज की गई। यूपी में भी कई जिलों में शीतलहर का अलर्ट जारी किया है। राज्य में सबसे ज्यादा सर्दी कानपुर में पड़ रही है। यहां तापमान 5.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। 22 दिसंबर से 2 राज्यों में सीवियर कोल्डवेव का अलर्ट जारी किया गया है। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हरियाणा, राजस्थान में कोल्ड वेव का अलर्ट। 23 दिसंबर को 3 राज्यों में बारिश हो सकती है, वहीं पंजाब-हरियाणा में घना कोहरा देखने को मिलेगा। जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और राजस्थान में शीतलहर चलेगी। आंध्र प्रदेश, ओडिशा और पश्चिम बंगाल में बारिश हो सकती है। 55 किमी की रफ्तार से हवा चलेगी। हिमाचल के लाहौल स्पीति, चंबा और कुल्लू की ऊंची चोटियों पर हल्की बर्फबारी हो सकती है। 7 जिलों शीतलहर चलेगी। 24 दिसंबर को पंजाब, हरियाणा, असम, मेघालय में घना कोहरा छाया रहेगा। हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख में कोल्ड वेव का अलर्ट।

बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हमले से संत समाज उद्वेलित, केंद्र सरकार से की सख्त कदम उठाने की अपील

नई दिल्ली (आरएनएस)। बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे हमले की जगतगुरु परमहंस आचार्य और संत दिवाकराचार्य महाराज ने निंदा की। उन्होंने अपील की कि भारत सरकार को हिंदुओं पर हो रहे हमले को रोकने की दिशा में यथाशीघ्र कदम उठाना चाहिए।जगद्गुरु परमहंस आचार्य ने अपने बयान में कहा, यह बेहद चिंताजनक है कि कभी भारत का हिस्सा रहे पाकिस्तान और बांग्लादेश में हिंदू बहन-बेटियों की इज्जत लूटी जा रही है, निर्मम हत्या की जा रही है, उनको तड़पा कर मारा जा रहा है, हिंदुओं की दुकानों को लूटा जा रहा है, हिंदुओं के घरों को आग लगाई जा रही है और मंदिरों को तोड़ा जा रहा है। उसे देखते हुए केंद्र सरकार को तुरंत कदम उठाना चाहिए।उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार को इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिए। केंद्र सरकार को बांग्लादेश में हिंदुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए।

अहमदाबाद के साबरमती इलाके में पार्सल में विस्फोट, दो घायल, आरोपी गिरफ्तार

अहमदाबाद (आरएनएस)। अहमदाबाद के साबरमती इलाके में पार्सल में विस्फोट से दो लोग घायल हो गए। शुरुआती पुलिस जांच में पता चला कि यह विस्फोट पारिवारिक झगड़े का नतीजा है। पार्सल पहुंचाने वाला व्यक्ति और रिसीव करने वाला इस घटना में घायल हुए हैं। आईपीएस नीरज कुमार बडगुजर ने आईएएनएस से बातचीत के दौरान बताया कि साबरमती थाना क्षेत्र के अंतर्गत शिव रो हाउस में सुबह करीब 10.45 बजे पार्सल में धमाका हो गया। गौरव गढ़वी, बलदेव सुखाड़िया के घर पार्सल देने के लिए आए थे। आरोपी गौरव गढ़वी ने जब पार्सल सौंपा तो प्राप्तकर्ता ने धुआं उठते देखा। पार्सल में विस्फोट हो गया, जिससे सुखाड़िया के भाई किरीट को चोटें आईं हैं। उन्होंने आगे बताया कि घटना में गौरव गढ़वी भी घायल हुआ है। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस पूछताछ कर रही है। जांच के दौरान अन्य संदिग्धों के नाम सामने आए हैं और पुलिस उनकी तलाश जारी रखे हुए है। उन्होंने बताया कि बम निरोधक दस्ता (बीडीएस) और फॉरेंसिक टीम वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों के साथ घटनास्थल पर पहुंच गई है।

महाराष्ट्र में 16 दिन बाद विभागों का बंटवारा, फडणवीस ने अजित पवार और शिंदे को किया खुश

मुंबई (आरएनएस)। महाराष्ट्र की महायुति सरकार ने आखिरकार शनिवार को विभागों के बंटवारे की घोषणा कर दी. मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस के पास गृह, ऊर्जा, न्याय और कानून, सामान्य प्रशासन, सूचना और प्रसारण विभाग रहेंगे. उप-मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के पास ग्रामीण विकास मंत्रालय, आवास, लोक निर्माण विभाग का विभाग रहेगा, जबकि उप-मुख्यमंत्री अजुत पवार के पास वित्त एवं योजना, राज्य उत्पाद शुल्क का प्रभार रहेगा.देवेंद्र फडणवीस नीत सरकार के पहले मंत्रिमंडल का विस्तार बीते 15 दिसंबर को हुआ था, जिसमें महायुति के सहयोगी दलों के कुल 39 विधायकों ने शपथ ली थी, जिनमें 16 नए चेहरे शामिल थे, जबकि दस पूर्व मंत्रियों को मंत्रिमंडल में जगह नहीं मिल पाई थी. 4. चन्द्रशेखर बावनकुले - राजस्व , 5. राधाकृष्ण विखेपाटील - जल संरक्षण (गोदावरी और कृष्णा बेसिन विकास), 6. हसन मुश्रीफ - चिकित्सा शिक्षा, 7. चंद्रकात पाटिल - उच्च और तकनीकी शिक्षा, संसदीय कार्य मंत्री , 8. गिरीश महाजन - जल संरक्षण (विदर्भ, तापी, कोंकण विकास), आपदा प्रबंधन 9. गणेश नाइक - पर्यटन, 10. गुलाबराव पाटिल - जल आपूर्ति, 11. दादा हस्क - स्कूल शिक्षा, 12. संजय राठौड़ - मृदा एवं जल परीक्षण ,13. धनंजय मुंडे - खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण 14. मंगलप्रभात लोढ़ा - कौशल विकास, रोजगार, उद्योग और अनुसंधान ,15. उदय सामंत - उद्योग और मराठी भाषा, 16. जयकुमार रावल - मार्केटिंग, प्रोटोकॉल 17. पंकजा मुंडे - पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन, पशुपालन, 18. अतुल सावे - ओबीसी विकास, डेयरी विकास मंत्रालय, ऊर्जा नटनीकर , 19. अशोक उइके - आदिवासी विकास मंत्रालय , 20. शंभुराज देसाई - पर्यटन, खनन और स्वतंत्रता सेनानी कल्याण मंत्रालय।

हिमाचल प्रदेश : स्कूल बंद करने वाले मुद्दे को लेकर विपक्ष का सदन से वॉक आउट

धर्मशाला,(आरएनएस)। हिमाचल प्रदेश विधानसभा में शुक्रवार को चौथे दिन विपक्ष ने सरकार के स्कूल बंद करने वाले मुद्दे पर वॉक आउट किया। मुख्यमंत्री चर्चा के दौरान बंद किए संस्थानों को ज़रूरत के अनुसार शुरू करने की बात कही। मुख्यमंत्री के उत्तर से असंतुष्ट विपक्ष ने वॉक आउट किया। उसका कहना था कि उसका मापदंड क्या है।नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने इस संबंध में कहा, आज प्रश्नकाल के दौरान सदस्य रणवीर शर्मा ने एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा। उन्होंने कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में संस्थान बंद करने, नए संस्थान खोलने और पुराने संस्थानों के बारे में जानकारी मांगी। उन्होंने पूछा था कि कांग्रेस सरकार ने जब से सत्ता संभाली है, तब से कितने संस्थानों को डिनोटिफाई किया गया है, कितने नए संस्थान खोले गए हैं और कितने संस्थानों को फिर से नोटिफाई किया गया है। इस प्रश्न के जवाब में पेश आंकड़े सही नहीं थे, क्योंकि उन्हें ठीक तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया था।जयराम ठाकुर ने कहा, आज इस प्रश्न के माध्यम से हमें जो जानकारी मिली है, वह यह है कि हिमाचल प्रदेश में कुल 1865 संस्थानों को डिनोटिफाई किया गया है।

मध्यप्रदेश में 20 साल में परिवहन विभाग में 15 हजार करोड़ का घपला, कांग्रेस कोर्ट जाएगी - जीतू पटवारी

भोपाल (आरएनएस)। मध्य प्रदेश में परिवहन विभाग के पूर्व आरक्षक सौरभ शर्मा के पास करोडों रुपये की संपत्ति मिलने के बाद कांग्रेस हमलावर है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने आरोप लगाया है कि बीते 20 साल में परिवहन विभाग में 15 हजार करोड़ रुपये से अधिक का घपला हुआ है। उन्होंने कहा कि इस मामले की सीबीआई या सेवा निवृत्त न्यायाधीश से जांच की मांग को लेकर कांग्रेस उच्च न्यायालय जाएगी।

कांग्रेस कार्यालय में संवाददाताओं से चर्चा करते हुए पटवारी ने कहा कि परिवहन विभाग के एक पूर्व आरक्षक सौरभ शर्मा के यहां करोड़ों की संपत्ति मिली। फिर एक कार में 52 किलोग्राम सोना तथा 10 करोड़ रुपये नकद मिले हैं। लोकायुक्त और आयकर की कार्रवाई से दो दिन पहले सौरभ दुबई चला जाता है। इसका आशय साफ है कि उसे जांच एजेंसी से ही छापे की सूचना मिली होगी।

जीतू पटवारी का कहना है कि जब एक आरक्षक के यहां करोड़ों की संपत्ति मिल सकती है तो परिवहन विभाग के प्रमुख सचिव तथा मंत्री के पास कितनी संपत्ति होगी। इन लोगों ने राज्य में बड़ा भ्रष्टाचार किया है। बीते 20 साल में राज्य में 15 हजार करोड़ रुपये से ज्यादा का घोटाला हुआ है। पटवारी ने एक अधिकारी के जरिए मिली जानकारी का हवाला देते हुए बताया कि राज्य में हर माह 30 से 35 करोड़ की विभिन्न नाकों से परिवहन विभाग वसूली करता है। इस तरह साल में चार से पांच सौ करोड़ और 20 साल में 15 हजार करोड़ रुपये का भ्रष्टाचार हुआ है। इस पूरे मामले की सीबीआई या सेवा निवृत्त न्यायाधीश से जांच कराई जाए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस इस मामले की जांच के लिए उच्च न्यायालय जाएगी।

पटवारी ने राज्य द्वारा लिए जा रहे कर्ज पर भी सरकार को घेरा है। उन्होंने कहा कि राज्य में पर्ची की सरकार है जो बहुत महंगी पड़ रही है। हर रोज कई लाख रुपये हेलिकॉप्टर पर खर्च किए जा रहे हैं। राज्य सरकार अपनी राजनीतिक अय्याशी के लिए कर्ज ले रही है।

कांग्रेस प्रदेशाध्यक्ष ने जल संसाधन विभाग में भी बड़े पैमाने पर घोटाले होने का आरोप लगाया है और कहा है कि बगैर किसी कमीशन के ठेका ही नहीं मिलता है।

बीकानेर : सेरूणा में बस से भिड़ी कार, कांस्टेबल और नर्स की मौत

बीकानेर (आरएनएस)। राजस्थान के बीकानेर में शनिवार सुबह सेरूणा थाना इलाके में कार और बस की भीषण टक्कर में एक पुलिस कांस्टेबल और एक नर्सिंग स्टाफ की मौत हो गई। मृतक की पहचान हरियाणा पुलिस के कांस्टेबल 30 वर्षीय अजय और उनकी पत्नी रितु के रूप में हुई है। सेरूणा थानाधिकारी पवन शर्मा ने बताया कि दुर्घटना जोधासर व झंझेऊ के बीच स्थित शाही होटल के पास हुआ। मृतक अर्टिगा कार में थे। संभवत: हादसा ओवरटेकिंग के वक्त हुआ है। थानाधिकारी के अनुसार, दोनों वाहनों की स्पीड 70 से अधिक नहीं थी। घटनास्थल पर सड़क की बैलेंसिंग सही नहीं है। सड़क ऊबड़-खाबड़ है। इसी वजह से ओवरटेकिंग के समय कार गति नहीं पकड़ पाई होगी। बता दें कि बीकानेर से श्रीडूंगरगढ़ तक की रोड पर काफी खामियां हैं।पवन कुमार के अनुसार बस लोक परिवहन की थी। बताया जा रहा है कि यह बस किसी विक्रम सिंह की है। दुर्घटना के वक्त कोहरा भी था। श्रीडूंगरगढ़ पुलिस के हेड कांस्टेबल भगवानाराम अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे। वे घायलों को अस्पताल लेकर गए, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।बता दें कि इससे पहले 20 दिसंबर को राजस्थान की राजधानी जयपुर में अजमेर रोड पर भांकरोटा स्थित पुष्पराज पेट्रोल पंप के पास सुबह करीब साढ़े पांच बजे एलपीजी गैस से भरे एक टैंकर में आग लग गई थी, इसके बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई थी।विस्फोट की आवाज 10 किलोमीटर दूर तक सुनी गई। आग इतनी भीषण थी कि 300 मीटर के दायरे में कई वाहन इसकी चपेट में आ गए थे और पूरी तरह जलकर राख हो गए थे। इस दौरान ईंधन टैंक के फटने से बार-बार विस्फोट हुए थे। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया था कि आग की लपटें दूर से दिखाई दे रही थीं। हादसे में कई लोग हताहत हुए।

विविध-समाचार

युवक को कार ने मारी टक्कर, मौत

भोपाल,(आरएनएस)। बजरिया इलाके में स्थित सेमरा कला में रहने वाले युवक को एक कार ने टक्कर मार दी। हादसे में घायल युवक की अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। यह घटना शनिवार सुबह साढ़े सात बजे की है। पुलिस ने मामले में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक, शेखर लोधी पुत्र संजू लोधी (19) सेमरा कला का निवासी था। वह एक प्राइवेट कॉलेज से बीएससी फर्स्ट ईयर की पढ़ाई कर रहा था और मंडीदीप की एक फैक्ट्री में नौकरी करता था। हर रोज की तरह, वह नौकरी पर जाने के लिए निकला था। घर से करीब 50 मीटर की दूरी पर उसकी बाइक को कार नंबर एमपी 09 सीए 2588 ने टक्कर मार दी।हादसे में युवक गंभीर रूप से घायल हो गया था। आरोपी चालक कार को मौके पर छोड़कर फरार हो गया। मोहल्ले के युवकों ने घायल शेखर को अस्पताल पहुंचाया, लेकिन इलाज के दौरान करीब एक घंटे बाद उसकी मौत हो गई। अस्पताल से मिली सूचना के आधार पर पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है।

शेखर परिवार का बड़ा बेटा था। उसका छोटा भाई शिवम एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाई करता है। हादसे की सूचना मिलते ही शिवम अस्पताल पहुंचा, जहां उसे भाई की मौत की खबर दी गई। शेखर के पिता ऑटो चालक हैं।

विधायक सबनानी ने वार्ड 31 में सीसी रोड निर्माण के लिए किया भूमि पूजन

भोपाल, (आरएनएस)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री व दक्षिण-पश्चिम विधानसभा के विधायक भगवानदास सबनानी ने वार्ड 31 के अर्जुन नगर में सीसी रोड निर्माण कार्य के लिए शनिवार को भूमि पूजन किया।इस अवसर पर सबनानी ने कहा कि क्षेत्र की सुविधाओं का विस्तार हो इसके लिए हम सबको मिलकर प्रयास करना है, क्षेत्र में कोई विकास कार्य होता है तो आप सभी का कर्तव्य बनता है कि उसकी गुणवत्ता का ध्यान आप लोगों द्वारा रखा जाए और किसी भी प्रकार की कोई शिकायत या लापरवाही हो तो उससे अपने जनप्रतिनिधि को अवगत कराएं, सुविधाओं के विस्तार के साथ ही गुणवत्ता का ध्यान रखना अति आवश्यक है, आप सभी ने ही मुझे विधायक बनाया है, इसलिए क्षेत्र की प्रगति के लिए में हर संभव प्रयास करूंगा और अपने क्षेत्र में छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी योजनाओं का लाभ मिल सके इसके लिए प्रयत्नशील रहूंगा।क्षेत्र की पार्षद और जोन अध्यक्ष ब्रजुला सचान ने कि हम सब का सौभाग्य है कि हमें सबनानी जी जैसा विधायक मिला है, जिनका सहयोग हमें निरंतर मिलता रहता है। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष सोनू पालीवाल, चंद्रशेखर तिवारी, सत्यनारायण शर्मा,प्रमोद पोलघनटलवाल,सुनीता पनोरे, वेदमणि शर्मा, विनोद गुप्ता, विकास गौतम, किरण तिवारी, विमलेश यादव,करिश्मा शर्मा, बब्ली जैन, शिखा अरसे,मनीषा कुशवाहा, विशाल सपकाले, संदीप माथुर,जितेंद्र मालवीय सहित क्षेत्र के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

विधायक सबनानी ने वार्ड 29 में विकास कार्यों के लिए किया भूमि पूजन

भोपाल (आरएनएस)। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री व विधायक भगवानदास सबनानी ने महापौर मालती राय के साथ दक्षिण-पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के नेहरू नगर में विकास कार्यों के लिए भूमि पूजन किया। सबनानी ने अपने संबोधन में कहा कि जनप्रतिनिधि होने के नाते मेरा कर्तव्य बनता है कि क्षेत्र की जनता की सुविधा के लिए जितना संभव हो उन्हें अधिक से अधिक योजनाओं का लाभ दिला सकूं,और जनता की सुविधाओं का विस्तार हो सके इसके लिए हर संभव प्रयास कर सकू, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा भी जनता की सुविधाओं के लिए अतिरिक्त धन देकर उनकी सुविधाओं में बढ़ोतरी के लिए हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं, हमारे मुख्यमंत्री विकास कार्यों के लिए अति गंभीर हैं, और प्रदेश के विकास के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं हमें विकास की गति को निरंतर आगे बढ़ते हुए दक्षिण-पश्चिम विधानसभा क्षेत्र को सुंदर और सुविधाजनक विधानसभा बनाना है।इस अवसर पर राजेंद्र राठौर, आशुतोष तिवारी लक्ष्मी गोरेवर, सत्येंद्र नेगी कुंजी लाल यादव, राजेश महावर, पंकज त्रिपाठी, नंदू तेलकर, संतोष ब्रह्मभट्ट सहित बड़ी संख्या में क्षेत्रीय नागरिक उपस्थित रहे।

मध्यप्रदेश वर्ष-2025 तक होगा टीबी मुक्त : मुख्यमंत्री डॉ.यादव

मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के साथ ही चलेगा टीबी मुक्त अभियान
मुख्यमंत्री ने की केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री नड्डा से वीसी में चर्चा

भोपाल, (आरएनएस)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश में टीबी मुक्त अभियान के लिए व्यापक प्रचार प्रसार किया जा रहा है। जिला स्तर पर जरूरी निर्देश भी जारी किए गए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश को पूरी तरह टीबी मुक्त किया जाएगा। इस दिशा में हम लगातार कार्य कर रहे हैं। विशेष कर सघन बस्तियों और अन्य जगहों पर कार्य किया जा रहा है। मध्यप्रदेश में 2 हजार से अधिक ऐसी ग्राम पंचायत हैं जो पूर्णत: टीबी मुक्त हो चुकी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज उज्जैन जिले की 56 ग्राम पंचायत को भी टीबी मुक्त घोषित किया जा रहा है। मध्यप्रदेश में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मिशन को पूरी तरह से सफल बनाने के लिए वर्ष 2025 तक मध्यप्रदेश को पूर्ण रूप से टीबी मुक्त बनाया जाएगा।केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे.पी. नड्डा की अध्यक्षता में शनिवार को 100 दिवसीय तीव्र टीबी उन्मूलन अभियान और टीबी मुक्त भारत बनाने के लिए नई दिल्ली में बैठक हुई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में उज्जैन से सम्मिलित हुए। इस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में गुजरात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान के साथ ही अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री भी शामिल हुए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश फूड बास्केट बांटने में देश में दूसरे स्थान है। प्रदेश में 3 हजार से

अधिक शिविरों का आयोजन किया जा चुका है। साथ ही 122 से अधिक जन जागरूकता रैली भी निकाली गई हैं। यही नहीं 5 हजार से अधिक लोगों ने निक्षय मित्र बनने की शपथ ली है। मध्यप्रदेश में व्यापक अभियान चलाया जा रहा है। इसके लिए उद्योग, कारखानों, ईंट भट्टों और सघन बस्तियों में विशेष टीबी जांच अभियान भी चलाया जा रहा है।

जनकल्याण अभियान के साथ चलेगा टीबी उन्मूलन अभियान

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के साथ ही 40 दिन का विशेष अभियान चलाया जाएगा, जिसमें टीबी परीक्षण और उसके उपचार के संबंध में भी व्यापक जानकारी देकर के साथ निक्षय मित्र बनाए जा रहे हैं। आगामी 26 जनवरी तक चलने वाले जनकल्याण अभियान में टीबी मुक्त बनाने के लिए मध्यप्रदेश में पूरी ताकत के साथ कार्य किया जाएगा।

केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आहवान पर भारत को वर्ष 2025 तक टीबी मुक्त बनाना है। इसके लिए सभी राज्य अपने स्तर पर कार्य करें। देश के 347 जिलों में टीबी के मरीज मिल रहे हैं, ऐसे लोगों का व्यापक रूप से परीक्षण करें।

उनके उपचार, स्वास्थ्य और पोषण की व्यवस्था के साथ जन-जागरुकता के लिए व्यापक प्रचार-प्रचार किया जाना सुनिश्चित किया जाए। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री नड्डा ने कहा कि रोगियों की टेस्टिंग करें और उनके समुचित उपचार की सुविधा शुरू करें। इसके लिए व्यापक स्तर पर प्रचार अभियान के साथ कार्य-योजना बनाकर कार्य किया जाए। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री की वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए।

गुजरात के शेरों से गूंजेगा भोपाल का वन-विहार

वन विहार में अब 2 नर एवं 3 मादा लॉयन

भोपाल (आरएनएस)। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल में 21 दिसंबर को सक्करबाग जू-जूनागढ़, गुजरात से लॉयन का जोड़ा (नर एवं मादा) लगभग 1000 किलोमीटर की यात्रा तय कर सकुशल पहुँचा है। नर लॉयन एव मादा लॉयन दोनों की उम्र लगभग 3 वर्ष है। वन विहार में दोनों लॉयन की देखभाल एवं परीक्षण के लिए क्वारेन्टाईन में रखा गया है। वर्तमान में सत्या. गंगा एवं नदी सहित वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में 2 नर एवं 3 मादा लॉयन हो गये हैं। वन विहार राष्ट्रीय उद्यान को यह सौगात शासन एवं विभाग स्तर पर विशेष प्रयासों से प्राप्त हुई है। लॉयन जोड़े के बदले वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल से नर बाघ (बाँधवगढ़-2) एवं मादा बाघ (बाँधनी) को दिया गया है। दोनों की उम्र लगभग 06 वर्ष है।उल्लेखनीय है कि केन्द्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण, नई दिल्ली से प्राप्त अनुमति अनुसार आदान-प्रदान योजना अंतर्गत 17 दिसम्बर 2024 को 9 सदस्यीय दल वन विहार राष्ट्रीय उद्यान, भोपाल से नर बाघ एवं मादा बाघ को लेकर सक्करबाग जू-जूनागढ, गुजरात के लिए रवाना हुआ एवं 21 दिसम्बर 2024 को सक्करबाग जू-जूनागढ़, भोपाल से लॉयन जोड़े को लेकर वन विहार आया। नौ सदस्यीय दल में वन विहार के इकाई प्रभारी पर्यटन एव सहायक वन्य प्राणी चिकित्सक भी शामिल है। इस अवसर पर वन विहार संचालक, सहायक संचालक, वरिष्ठ वन्यप्राणी स्वास्थ्य अधिकारी और अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

थाना प्रभारी के घर चोरी करने वाला यूपी से गिरफ्तार

भोपाल,(आरएनएस)। हबीबगंज इलाके में रहने वाले क्राइम ब्रांच के थाना प्रभारी अशोक मरावी के घर चोरी करने वाले आरोपी को पुलिस ने शुक्रवार को बांदा (यूपी) से गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ बांदा में हत्या-चोरी सहित 6 केस दर्ज हैं। वारंट में फरार चल रहा था, फरारी के दौरान चोरी के इरादे से पहले इंदौर आया। दो दिन वहां रहा, नाकाम होने के बाद भोपाल आया। यहां दो दिन अलग-अलग रैन बसेरे और लॉज में रहने के साथ ही रैकी करता रहा। थाना प्रभारी मरावी का घर उसे सुनसान दिखा। जहां उसने डेढ़ लाख रुपए कैश और एक लाख की ज्वेलरी पर हाथ साफ कर दिया। पुलिस ने चोरी गया पूरा माल रिकवर कर लिया है। अन्य वारदातों के संबंध में आरोपी से पूछताछ की जा रही है। हबीबगंज थाना प्रभारी अजय कुमार सोनी ने बताया आरोपी का नाम राजेश वाजपाई (52) है। वह बांदा उत्तर प्रदेश का रहने वाला है। उसके खिलाफ उत्तर प्रदेश में कई अपराध दर्ज हैं। राजेश को जमीन विवाद के बाद रिश्तेदार की हत्या के आरोप में आजीवन कारावास की सजा भी हो चुकी है। आरोपी से 1.50 लाख कैश और सोना चांदी के जेवरात बरामद कर लिया गया है। सोना-चांदी की कीमत 1 लाख रुपए है।पुलिस की पूछताछ में उसने बताया कि वह वारदात के दो दिन पहले ही इंदौर से भोपाल आया। दो रातें उसने रैन बसेरों में बिताई।

मंत्री श्री सारंग ने किया अल्पना टॉकीज तिराहे पर सड़क व नाली निर्माण कार्य का निरीक्षण

सर्वे कर प्लान बनाने के दिये निर्देश

भोपाल, (आरएनएस)। सहकारिता मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने अल्पना तिराहे से भारत टॉकीज तिराहे पर निर्माणाधीन सड़क एवं नाले के निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान मंत्री श्री सारंग ने निर्माण कार्य में अनियमितताओं और लापरवाही पर नाराजगी व्यक्त की। मंत्री श्री सारंग ने लोक निर्माण विभाग, नगर निगम, मेट्रो और यातायात सहित सम्बंधित सभी विभागों को समेकित प्लान तैयार करने के निर्देश दिये। मंत्री श्री सारंग ने निरीक्षण के दौरान कहा कि निर्माण कार्य बिना उचित सर्वेक्षण और योजना के शुरू किया गया है। नगर निगम द्वारा बनाई गई नाली नीचे है, जबकि पीडब्लूडी द्वारा बनाई गई नाली ऊंची है। नालियों का निर्माण भी सही तरह से नहीं किया गया है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिये कि प्लानिंग और सर्वेक्षण के अनुसार अधिकारी कार्य करें। मंत्री श्री सारंग ने विधिवत प्लान तैयार कर निर्माण कार्य करने के निर्देश दिये । उन्होंने निर्माण कार्य की गुणवत्ता में सुधार करने के साथ ही अतिक्रमण हटाने के लिये कहा। उन्होंने कहा कि अनियमितता करने वाले अधिकारियों के विरूद्ध कार्रवाई की जायेगी। मंत्री श्री सारंग ने कहा कि बगैर योजनाबद्ध चैनेलाइजेशन के पातरा नाले में पानी डिस्चार्ज करने से यह शहर में बाढ़ का कारण बन सकता है। इसके लिये सभी संबंधित विभागों द्वारा समन्वय के साथ योजना बनाई जाए। निर्माण कार्य तत्काल रोक कर सर्वे और प्लानिंग करने के बाद ही काम शुरू किया जाये।

अक्षय पात्र फाउंडेशन का समर्पण और सेवाभाव अनुकरणीय : उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

फाउंडेशन की भोपाल स्थित केंद्रीयकृत रसोई का किया अवलोकन

भोपाल (आरएनएस)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि अक्षय पात्र फाउंडेशन द्वारा स्वच्छ और पौष्टिक भोजन विद्यार्थियों तक पहुँचाने का पुनीत कार्य किया जा रहा है। यहाँ जिस साफ़-सफ़ाई से और पोषक तत्वों की आवश्यकता को ध्यान में रखकर भोजन बनाने का कार्य किया जा रहा है, वह अनुकरणीय है। उन्होंने संस्था में कार्यरत सभी कर्मचारियों के समर्पण और सेवा-भाव की सराहना की। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने भोपाल में अक्षय पात्र फाउंडेशन की केंद्रीयकृत रसोई का अवलोकन किया।

राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि अक्षय पात्र फाउंडेशन का यह प्रयास न केवल बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास में सहायक है, बल्कि यह राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। उन्होंने संस्था के समर्पित कर्मचारियों और प्रबंधन टीम के प्रयासों की सराहना करते हुए विश्वास व्यक्त किया कि भविष्य में यह संस्था और अधिक बच्चों तक अपनी सेवाएं पहुंचाएगी और अन्य संस्थानों को भी प्रेरित करेगी।उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने संस्था की स्वचालित प्रक्रिया, सुव्यवस्थित संचालन और योजनाबद्ध कार्यप्रणाली की सराहना की। उन्होंने कहा कि अक्षय पात्र फाउंडेशन न केवल बच्चों को स्वच्छ और पौष्टिक भोजन उपलब्ध करा रहा है, बल्कि यह कार्य अत्यंत प्रभावशाली और अनुकरणीय तरीके से किया जा रहा है। संस्था का सुव्यवस्थित संचालन इसके योजनाबद्ध दृष्टिकोण को दर्शाता है। भोजन वितरण के लिए विशेष वाहनों का उपयोग, समय प्रबंधन का सख्त पालन, पोषण गुणवत्ता की नियमित जाँच और प्रबंधन टीम के बीच उत्कृष्ट समन्वय इसे और अधिक प्रभावी बनाते हैं।

शासकीय और निजी क्षेत्र के बीच मजबूत साझेदारी का उत्कृष्ट उदाहरण

उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने राष्ट्रीय स्तर पर अक्षय पात्र फाउंडेशन के योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि यह मॉडल शासकीय और निजी क्षेत्र के बीच मजबूत साझेदारी का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह संस्था पूरे भारत में 16 राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों में 23 हज़ार से अधिक विद्यालयों में लगभग 22 लाख 50 हज़ार बच्चों को पौष्टिक भोजन प्रदान कर रही है। उल्लेखनीय है कि अक्षय पात्र फाउंडेशन के भोपाल स्थित किचन से मध्यान्ह भोजन के तहत 645 विद्यालयों के लगभग 35 हज़ार बच्चों को भोजन प्रदाय किया जा रहा है। अक्षय पात्र फाउंडेशन के भोपाल क्लस्टर के अध्यक्ष आचार्य रत्न दासा उपस्थित थे।

अंतर्राष्ट्रीय वन मेला-2024

अलीराजपुर के दाल-पानिये के स्वाद के लिए लोगों की लगी भीड़

वन मेले में लगभग 35 लाख के हर्बल, वनोपज उत्पादों की ब्रिकी हुई

भोपाल (आरएनएस)। अंतर्राष्ट्रीय वन मेले के 5वें दिन लगभग 32 हजार लोगों ने मेले का आनंद लिया। लोगों के इतनी बड़ी तादाद से मेले प्रांगण स्थित स्टॉल्स के संचालकों में उत्साह है। वन मेले मेंलगभग 35 लाख के हर्बल, वनोपज उत्पादों की ब्रिकी हुई। फूड स्टॉल्स के व्यंजनों का लोगों ने लुत्फ उठाया। जहाँ एक ओर कॉलेज के छात्र-छात्राओं के द्वारा बनाए जा रहे व्यंजन अपनी ओर लोगों को आकर्षित करते रहे। यहीं दूसरी ओर अलीराजपुर के दाल-पानिये के स्वाद के लिए लोगों की भीड़ लगी रही। मेले की ओ.पी.डी. में लगभग 300 से अधिक आगंतुको ने निशुल्क चिकित्सीय परामर्श प्राप्त किया। ओ.पी.डी. में 90 आयुर्वेदिक चिकित्सकों तथा अनुभवी वैद्य द्वारा निशुल्क परामर्श मेले में दिया गया, जो अंतिम दिन तक जारी रहेगा।वन मेले, का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है कि लघु वनोपज के संग्रहण में सम्मिलित प्राथमिक संग्राहकों को एक मंच प्रदान करना। लघु वनोपज संग्राहक, उत्पादक एवं वनोपज समितियों की जड़ी बूटिया, हर्बल उत्पाद तथा आयुर्वेदिक के व्यवसाय से जुड़े विभिन्न निर्माता, विभिन्न मंडियों के लघु वनोपज के व्यापारी, उत्पादक, प्र-संस्करण कर्ताओं के प्रतिनिधि के साथ सीधा वार्तालाप हो और बाजार के अवसरों को खोजा जा सके। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये एक दिवसीय क्रेता-विक्रेता सम्मेलन प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं प्रबंध संचालक, लघु वनोपज संघ विभाष कुमार ठाकुर के मुख्य आथित्य में संपन्न हुआ।श्री ठाकुर ने कहा कि महिलाओं के सशक्तिकरण एवं आर्थिक विकास के लिये लघु वनापेज के क्रय विकय में उनकी भागीदारी बड़ी है। आयुर्वेदिक कॉलेज एवं हॉस्पीटल के प्रतिनिधियों को भी आमंत्रित किया गया। इससे लघु वनोपज प्र-संस्करण एवं अनुसंधान केन्द्र में तैयार किए जा रहे आयुर्वेदिक दवाइयों के क्र य-विक्रय के लिये अनुबंध किए जा सके। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद उत्पादों की सफलता लघु वन उपज की गुणवत्ता पर निर्भर करती हैं। श्री ठाकुर ने कहा कि वन उपज समिति को गुणवत्ता सुधार पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। सम्मेलन में लगभग 4.80 करोड़ रुपए का MFPPARC एवं विभिन्न संस्थाओं के मध्य व्यापारिक अनुबंध करने पर सहमति हुई। कुछ स्टॉलों पर टोने-टोटके हेतु अंगूठियां बेचने की शिकायत प्राप्त हो रही थी जिन्हें छापा मारकर जसी की कार्रवाई की गई। मेला प्रांगण में आज सुबह 11:00 बजे से दोपहर 4:00 बजे तक नृत्य (सोलो और ग्रुप) की रंगारंग प्रस्तुति चलती रही। इस प्रस्तुति में बच्चों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुति देकर दर्शकों के मन को मोहित कर लिया। मेले में आयोजित एकल और सामूहिक नृत्य प्रस्तुति में लगभग 19 विद्यालयों से 150 से भी अधिक छात्र छात्राओं ने अपनी अद्भुत कला का प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। दोपहर 5:00 बजे से 7:00 बजे तक माला उइके म्यूजिकल ग्रुप द्वारा आर्केस्ट्रा प्रस्तुति दी गई। सायं 7:30 बजे से 10:00 बजे तक मानसरोवर आयुर्वेदिक कॉलेज के छात्र छात्राओं के द्वारा (Fiddle Craft) की आकर्षक प्रस्तुति दी गई।

रविवार 22 दिसम्बर के कार्यक्रम

रविवार को प्रात: 10:30 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक फैंसी ड्रेस एवं सोलो एक्टिंग की प्रस्तुति है। 3:00 बजे से 4:30 बजे तक आत्मजा महिला यूनिक बैंड की आकर्षक प्रस्तुति दी जाएगी। सायं 7:30 बजे से 10:00 बजे तक एक शाम वन विभाग के नाम (फारेस्ट मेलोडी) प्रस्तुति दी जाएगी।

पीर गेट पर रजाई-गद्दों के गोदाम में लगी आग

भोपाल, (आरएनएस)। पीर गेट स्थित एक रजाई-गद्दों के गोदाम में शनिवार को आग लग गई। आग की लपटें उठने से इलाके में दहशत फैल गई। लोग आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े। ताकि, वह ज्यादा न फैले। इधर, दमकल को सूचना दी गई। बावजूद 1 घंटे में आग बुझाई जा सकी।आगजनी की घटना शनिवार दोपहर की है। पीर गेट पर कफ्यू वाली माता मंदिर के पास मोहम्मद फरीद उर्फ गुड्डू की रजाई-गद्दों की दुकान है। वहीं, पास की बिल्डिंग में फर्स्ट फ्लोर पर गोदाम है। यहां पर रुई और रजाई-गद्दे रखे थे। मोहम्मद फरीद ने बताया, शार्ट सर्किट की वजह से आग लगी है। गोदाम में सीधे पोल से बिजली की लाइन पहुंची है। जब आग लगी, तब वॉल्टेज कम-ज्यादा हो रहा था। इसके चलते ही आग लग गई। समय रहते आग बुझा ली गई। फिर भी हजारों रुपए के रजाई-गद्दे जल गए और रुई भींगकर खराब हो गई।जिस गोदाम में आग लगी, वहां काम करके कुछ देर पहले ही दो कर्मचारी निकले थे। ऐसे में वे आग की चपेट में आने से बच गए और कोई जनहानि नहीं हुई।

सुशासन सप्ताह के अंतर्गत ग्राम सुजेड व विभिन्न पंचायतों में शिविर आयोजित किए गए

दतिया, (आरएनएस)। भारत सरकार एवं राज्य सरकार की चिन्हित हितग्राही मूलक योजना एवं कार्यक्रमों का पूरा लाभ उसके वास्तविक रूप से पात्र हितग्राहियों तक समय-सीमा में शत प्रतिशत सैचुरेशन के लक्ष्य को प्राप्त करने के उददेश्य शासन के निर्देशानुसार कलेक्टर संदीप कुमार माकिन के आदेशानुसार मुख्यमंत्री जनकल्याण अभियान के तहत सुशासन सप्ताह '' प्रशासन गांव की ओर'' के अंतर्गत ग्राम सुजेड तथा जिले की विभिन्न ग्राम पंचायतों में शिविर लगाकार ग्रामीणजनों की समस्याऐं सुनीं गई एवं कई आवेदनों का मौके पर ही निराकरण कर शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभांवित किया गया एवं योजनाओं की जानकारी दी गई।

अवैध डीजल/पेट्रोल के संग्रहण एवं विक्रय करने वालों की आकस्मिक जांच की गई

दतिया(आरएनएस)। कलेक्टर संदीप कुमार माकिन के निर्देशानुसार जिला खाद्य आपूर्ति अधिकारी मालवीय एवं उनकी टीम द्वारा आज अवैध रूप से डीजल/पेट्रोल के संग्रहण एवं विक्रय करने वालो के विरूद्व लगातार कार्यवाही की जा रही है।

इसीक्रम में भाण्डेर रोड दतिया में आकस्मिक जांच कार्यवाही कर जितेन्द्र पाल से 25 लीटर पेट्रोल एवं रामजी की दुकान मोहनी से 11 लीटर पेट्रोल जप्त किया गया। जप्त पेट्रोल में सुंदरानी पेट्रोल पंप की सुपुर्दगी में दिया गया। अवैध रूप से डीजल/पेट्रोल का विक्रय करने पर आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा रही है।

कलेक्टर ने 25 दिसम्बर होने वाले किसान सम्मेलन की व्यवस्थाओं की बैठक ली

दतिया, (आरएनएस)। कलेक्टर संदीप कुमार माकिन की अध्यक्षता में आज कलेक्टर बंगले के सभाकक्ष में शासन के निर्देशुनसार 25 दिसम्बर को जिले में बडौनी में होने वाले किसान सम्मेलन की सभी व्यवस्थाओं को लेकर बैठक ली।बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत कमलेश भार्गव, प्रभारी अपर कलेक्टर नीरज शर्मा, अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत धनंजय मिश्रा, एसडीएम ऋषि कुमार सिंघई, उपंसचालक कृषि राजीव वशिष्ठ, कार्यपालन यंत्री जल संसाधन मोहित जैन, परिवहन अधिकारी स्वाती पाठक, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत विनीत त्रिपाठी, मुख्य नगरपालिका अधिकारी नागेन्द्र सिंह गुर्जर, संयोजक आदिम जाति कल्याण विभाग गिरिराज दुवे सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।बैठक में कलेक्टर माकिन ने कहा कि इस सम्मेलन की सभी व्यवस्थाऐं चाक चौबंद रहनी चाहिए। उन्होंने अभी तक हुई व्यवस्थाओं की जानकारी भी ली। बैठक में कलेक्टर माकिन ने कहा कि केन बेतवा लिंक राष्ट्रीय परियोजना का 25 दिसम्बर को भूमिपूजन प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा छतरपुर में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म जयंती के अवसर पर उनके सपने को साकार करने के उपलक्ष्य में करेंगे। यह देश की पहली नदी जोड़ो केन-बेतवा परियोजना स्थापित की जा रही है। जिसका सीधा प्रसारण जिले के सभी पंचायतों में किया जाएगा। जिसमें ग्रामीणजनों केा अधिक से अधिक जानकारी मिल सके। कलेक्टर ने इस सम्मेलन को संपन्न कराने हेतु नोडल अधिकारी के रूप में कार्यपालन यंत्री जल संसाधन विभाग दतिया मोहित जैन एवं उपसंचालक कृषि राजीव वशिष्ठ केा नियुक्त किया गया है। उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में सांसद, विधायक एवं अन्य जनप्रतिनिधियों केा भी आवश्यक रूप से आमंत्रित करने हेतु समन्वय किया जाए।

कमिश्नर श्री वर्मा व कलेक्टर श्री सक्सेना ने धान खरीदी केंद्र का किया औचक निरीक्षण

जबलपुर(आरएनएस)। कमिश्नर अभय वर्मा और कलेक्टर दीपक सक्सेना ने आज पाटन विकासखंड के भोंरदा खरीदी केंद्र का आकस्मिक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने धान खरीदी की व्यवस्थाओं का जायजा लेकर समिति प्रबंधक से कहा कि उपार्जन नीति के अनुसार ही धान का उपार्जन किया जाए। बरदाने की स्थिति की जानकारी लेते हुए कहा कि सभी भरे हुए बोरों में उचित तरीके से टैग लगे हो तथा उपार्जित धान का उचित रखरखाव भी हो। साथ ही कहा कि उपार्जन केंद्र पर सभी आवश्यक अवस्थाएं सुनिश्चित हो।

उन्होंने संबंधित अधिकारी से कहा कि वे वेयरहाउस जिनमें 8% से कम घटी है, उन्हें खरीदी केंद्र बनाएं बशर्ते उनका एफआईआर दर्ज न हुआ हो। इस दौरान धान खरीदी के सभी व्यवस्थाओं की जानकारी लेकर भुगतान की स्थिति की भी जानकारी ली गई। इस दौरान अपर कलेक्टर नाथूराम गोंड, एसडीएम मानवेंद्र सिंह, तहसीलदार व जेएसओ सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

पलायन रोकने के साथ रोजगार के अवसर भी प्रदान करेगी केन बेतबा लिंक योजनाः डॉ. राज गोस्वामी

दतिया,(आरएनएस)। आज प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़एक्सीलेंस दतिया में मध्य प्रदेश शासन जल संसाधन विभाग मंत्रालय, वल्लभ भवन भोपाल के निर्देशानुसार केन बेतवा राष्ट्रीय लिंक परियोजना के प्रचार प्रसार हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें युवा संवाद, चित्रकला, रंगोली, निबंध एवं शपथ का आयोजन किया गया।कार्यक्रम का विधिवत प्रारंभ करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी आर राहुल ने जल के महत्व एवं नदी जोड़ो परियोजना पर व्याख्यान दिया। मुख्य वक्ता के रूप में दतिया शहर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ राज गोस्वामी ने बुंदेलखंड में होने वाले पलायन पर अपने विचार व्यक्त किए एवं इस परियोजना से रोजगार के अवसर प्रदान करने की बात कही। विषय प्रवर्तन भूगोल विभाग के सहायक प्राध्यापक विकास राठौर द्वारा किया गया। इस अवसर पर भौतिक विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ एस सी कौशिक ने जल संवर्धन से संबंधित अपने विचार रखे कार्यक्रम के संयोजक रसायन शास्त्र विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ के एस दादोरिया ने विभिन्न विधाओं में विजेता हुए छात्र-छात्राओं को बधाई दी कार्यक्रम का सफल संचालन जंतु विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ. अभय राहुल द्वारा किया गया।

ध्यान के द्वारा स्वस्थ शरीर, शुद्ध मन और तीव्र बुद्धि से विद्यार्थी वर्ग किसी भी लक्ष्य को हासिल करने में सक्षम हो सकता है

सागर (आरएनएस)। विश्व ध्यान दिवस के अवसर पर शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय अग्रणी सागर द्वारा छात्र छात्राओं के लिए तनाव मुक्ति एवं ध्यान सत्र का आयोजन कर ध्यान के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक किया गया। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ सरोज गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में प्रसिद्ध योगाचार्य विष्णु आर्य ने विद्यार्थी जीवन में ध्यान योग की महत्ता को रेखांकित किया।

मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देश पर आयोजित विश्व ध्यान दिवस कार्यक्रम में योगाचार्य विष्णु आर्य ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन की भागम-भाग और भौतिकता की अंधी दौड़ में आज समाज का हर व्यक्ति मानसिक तनाव में है। इसी तनाव के कारण लोग हार्ट, ब्लड प्रेशर, शुगर जैसी गंभीर बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। बहुत से लोग धन कमाने के लोभ में जरूरत से ज्यादा भागम-भाग करते हैं। लेकिन इस तरह की जिंदगी तनाव को जन्म देती है और यह पैसा डॉक्टर और दवाइयों पर खर्च होता है। उन्होंने कहा कि ठीक तरह से आसान लगा कर बैठने से शरीर के सभी अंग भी ठीक तरह से काम करते हैं। योगाचार्य ने कहा कि हमारे दिमाग में कई तरह की गंदगी भरी रहती है। ध्यान के द्वारा इसे खाली कर मन और आत्मा को शुद्ध बनाया जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए जरूरी है कि उसका शरीर स्वस्थ हो, मन प्रसन्न हो और बुद्धि तीव्र हो तभी व्यक्ति का विकास संभव है। उन्होंने विद्यार्थियों तथा महाविद्यालय के सभी शिक्षकों को ध्यान योग को नियमित दिनचर्या में लाकर अपनी बुद्धि, मन और शरीर को स्वस्थ रखने का प्रशिक्षण भी दिया। विश्व ध्यान योग दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ सरोज गुप्ता ने कहा कि ध्यान और योग हमारी सनातन ज्ञान परम्परा का अंग है। ध्यान के माध्यम से विद्यार्थी अपने बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए जीवन में एकाग्रता को लाकर अपने लक्ष्य को हासिल कर सकता है।

केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री श्री नायडू आज इंदौर एयरपोर्ट को देंगे बड़ी सौगात

नए एटीसी, फायर सेफ्टी भवन एवं जीरो वेस्ट एयरपोर्ट की मिलेंगी सुविधाएं इंदौर देश का पहला जीरो वेस्ट एयरपोर्ट होगा

इन्दौर(आरएनएस)। इंदौर एयरपोर्ट पर सात मंजिला एटीसी भवन एवं तकनीकी ब्लॉक तैयार हो चुका है। इसी भवन में नया फायर स्टेशन भी बनाया गया है। साथ ही इंदौर के नाम अब एक और उपलब्धि जुड़ने जा रही है। यहां का देवी अहिल्या एयरपोर्ट देश का पहला जीरो वेस्ट एयरपोर्ट होगा। रविवार 22 दिसम्बर को केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री किंजरापू राममोहन नायडू इन सुविधाओं का लोकार्पण करेंगे। इस अवसर पर प्रदेश के नगरीय आवास एवं विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय एवं सांसद शंकर लालवानी भी मौजूद रहेंगे। केंद्रीय मंत्री के दौरे के पहले सांसद शंकर लालवानी ने एयरपोर्ट का निरीक्षण किया और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए। सांसद शंकर लालवानी ने बताया कि आने वाले भविष्य के इंदौर को ध्यान में रखकर इंदौर एयरपोर्ट पर यात्री सुविधाओं का विस्तार किया जा रहा है। साथ ही इंदौर एयरपोर्ट के विस्तार के लिए भी केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री से विस्तृत चर्चा हुई है। उन्होंने बताया कि एयरपोर्ट पर नया एटीसी एवं तकनीकी ब्लॉक बनाया गया है, जिसकी लागत 55 करोड़ रूपये है। एटीसी टावर एवं तकनीकी ब्लॉक जिसमें नए फायर स्टेशन भी शामिल है। सात मंजिला एटीसी टावर पुराने टावर के मुकाबले क्षेत्र में दुगना है। इसका कुल एरिया 180 स्क्वायर मीटर है। तकनीकी ब्लॉक 4,410 स्क्वायर मीटर है। नया फायर स्टेशन 1491 स्क्वायर मीटर है।

जनकल्याण अभियान के तहत जिला चिकित्सालय में हितग्राहियों को जन्म प्रमाण पत्र वितरित किए

दतिया, (आरएनएस)। शासन के जन कल्याण अभियान एवं सुशासन सप्ताह को बढावा देने के उद्देश्य से जिला चिकित्सालय दतिया के सिविल सर्जन डॉ. के. सी. राठौर द्वारा चार हितग्राहियों को जन्म प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

इनमें से एक हितग्राही का जन्म प्रमाण पत्र, जो पहले केवल ऑफ्लाइन स्वरूप में था। अब उसे ऑनलाइन पोर्टल पर सफ्लतापूर्वक अपडेट कर दिया गया है और उसे हितग्राही को प्रदान किया गया है। इस कदम से मध्यप्रदेश शासन की डिजिटल पहल को मजबूती मिल रही है।

व्यापार समाचार

भारत की आपूर्ति श्रृंखला को बढ़ावा देने को 350 मिलियन डॉलर के ऋण के लिए केंद्र सरकार व एडीबी के बीच समझौता

नई दिल्ली(ए.) भारत सरकार और एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने शुक्रवार को स्ट्रेंथेनिंग मल्टीमॉडल एंड इंटीग्रेटेड लॉजिस्टिक्स इकोसिस्टम (स्माइल) प्रोग्राम के दूसरे उपप्रोग्राम के तहत घरेलू विनिर्माण क्षेत्र को मजबूत करने और आपूर्ति श्रृंखला में सुधार करने को 350 मिलियन डॉलर के ऋण के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर किए। वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के अनुसार, स्माइल कार्यक्रम भारत में लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में व्यापक सुधार करने में सरकार का समर्थन करने के लिए एक प्रोग्रामेटिक नीति-आधारित ऋण (पीबीएल) है।इस दृष्टिकोण में दो उपकार्यक्रम शामिल हैं। इनका उद्देश्य भारत के विनिर्माण क्षेत्र का विस्तार करना और इसकी आपूर्ति श्रृंखलाओं के लचीलेपन में सुधार करना है। मंत्रालय ने एक बयान में कहा, भारत सरकार और एडीबी के बीच सहयोग लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में विकास और नवाचार को बढ़ावा देने, भारत के व्यापक आर्थिक विकास लक्ष्यों का समर्थन करने की साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है। ऋण समझौते पर हस्ताक्षर करने वालों में वित्त मंत्रालय का आर्थिक मामलों का विभाग (डीईए), वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय का उद्योग और आंतरिक

व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) और एडीबी शामिल थे।स्माइल कार्यक्रम राष्ट्रीय, राज्य और शहर स्तर पर मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक्स बुनियादी ढांचे के विकास के लिए संस्थागत आधारों को मजबूत करने के माध्यम से लॉजिस्टिक्स दक्षता बढ़ाने के लिए एक व्यापक नीति ढांचे का संचालन करता है।

यह आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने और बड़े निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने, बाहरी व्यापार लॉजिस्टिक्स में दक्षता में सुधार करने और कुशल और कम-उत्सर्जन लॉजिस्टिक्स के लिए स्मार्ट सिस्टम अपनाने के लिए वेयरहाउसिंग और अन्य लॉजिस्टिक्स संपत्तियों को मानकीकृत करने में भी मदद करता है।मंत्रालय के अनुसार, भारत के लॉजिस्टिक्स क्षेत्र का विकास इसके विनिर्माण क्षेत्र की प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है। रणनीतिक नीति सुधारों, बुनियादी ढांचे के विकास और डिजिटल एकीकरण के माध्यम से, चल रहे सुधार लॉजिस्टिक्स परिदृश्य को बदलने के लिए तैयार हैं। इस परिवर्तन से लागत कम होने, दक्षता में सुधार, रोजगार के पर्याप्त अवसर पैदा होने और लैंगिक समावेशन को बढ़ावा मिलने-स्थायी आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।गुरुवार को, सरकार और एडीबी ने महाराष्ट्र में स्थानीय समुदायों और प्राकृतिक पारिस्थितिकी प्रणालियों की लचीलापन बढ़ाने के लिए तटीय और नदी तट सुरक्षा प्रदान करने के लिए 42 मिलियन डॉलर के ऋण पर हस्ताक्षर किए। एडीबी द्वारा प्रदान किया जाने वाला कर्ज महाराष्ट्र की तटरेखा को बहाल करने और स्थिर करने और तटीय समुदायों की आजीविका की रक्षा करने में मदद करेगा।

टाटा मोटर्स और बजाज ऑटो को पीछे छोड़ा जोमैटो ने

मुंबई (ए.)। फूड डिलीवरी एग्रीगेटर जोमैटो ने टाटा मोटर्स और बजाज ऑटो को पछाड़ दिया है। जोमैटो 30 कंपनियां वाली सूची में 27 नंबर पर पहुंच गई है। इन दोनों दिग्गज कंपनियों से जोमैटो का मार्केट कैप बड़ा हो गया है।जोमैटो 2.78 लाख करोड रुपए मार्केट कैप की कंपनी बन गई है।

टाटा मोटर्स का मार्केट कैप बीएसई में 2.73 लाख करोड़ का है। वही बजाज ऑटो का 2.50 लाख करोड़ का है। 30 शेयर वाली सूची में जोमेटो शामिल हो जाएगी। वहीं 30 शेयर वाली सूची से जेएसडब्ल्यू स्टील बाहर हो जाएगी।

2024 में जोमैटो के शेयर में लगातार तेजी देखने को मिली। निवेशकों का निवेश दोगुना से ज्यादा हो गया है।

55वीं जीएसटी परिषद बैठक : स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम, एटीएफ, सिन टैक्स पर सबकी निगाहें

नई दिल्ली(ए.) केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में शनिवार को जैसलमेर में जीएसटी परिषद की 55वीं बैठक शुरू होने जा रही है, जिसमें स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम पर प्रस्तावित दर कटौती और एविएशन टर्बाइन फ्यूल (एटीएफ) को जीएसटी के दायरे में शामिल करने पर चर्चा होगी।

जीएसटी परिषद बैठक के दौरान करीब 150 वस्तुओं की दरों में संशोधन पर भी विचार-विमर्श करेगी, जिससे केंद्र को करीब 22,000 करोड़ रुपये का अतिरिक्त राजस्व प्राप्त होने की संभावना है।

जीएसटी परिषद के लिए एक महत्वपूर्ण एजेंडा टर्म स्वास्थ्य और जीवन बीमा प्रीमियम पर प्रस्तावित दर कटौती है।

जीवन और स्वास्थ्य बीमा पर जीएसटी छूट/कटौती उद्योग की लंबे समय से लंबित मांग है, क्योंकि इससे बीमाकर्ताओं और पॉलिसीधारकों दोनों पर कर का बोझ कम होगा।

बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी की अगुवाई में मंत्रियों के समूह (जीओएम) के ज्यादातर पैनल सदस्यों ने स्वास्थ्य और जीवन बीमा पॉलिसी प्रीमियम पर पूरी छूट की वकालत की, जबकि कुछ पैनल सदस्यों ने मौजूदा 18 प्रतिशत से दर को घटाकर 5 प्रतिशत करने का सुझाव दिया।

इसके अलावा, 5 लाख रुपये तक का कवरेज देने वाली बीमा पॉलिसियों को भी जीएसटी से राहत मिल सकती है।

एक अन्य प्रमुख एजेंडा यह तय करना है कि फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म द्वारा डिलीवरी शुल्क पर 5 प्रतिशत जीएसटी 2022 से लागू किया जाएगा या नहीं। वर्तमान में, फूड डिलीवरी कंपनियां डिलीवरी शुल्क पर जीएसटी का भुगतान नहीं करती हैं।

इसके अलावा, जीएसटी परिषद द्वारा विमानन टरबाइन ईंधन को जीएसटी के दायरे में लाने के मुद्दे पर विचार किए जाने की संभावना है।

वर्तमान में, एटीएफ पर 11 प्रतिशत का केंद्रीय उत्पाद शुल्क लगाया जाता है। क्षेत्रीय संपर्क योजना के तहत इसमें 2 प्रतिशत की रियायत भी है।

कैबिनेट ने 2025 सीजन के लिए कोपरा का एमएसपी बढ़ाकर की 12,100 रुपये प्रति क्विंटल

नई दिल्ली (ए.) । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति ने बड़ा फैसला लिया है। समिति ने शुक्रवार को 2025 विपणन सत्र के लिए उचित औसत गुणवत्ता वाले मिलिंग कोपरा का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) बढ़ाकर 11,582 रुपये प्रति क्विंटल और बॉल कोपरा का एमएसपी बढ़ाकर 12,100 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया।आधिकारिक बयान के मुताबिक, एमएसपी में बढ़ोतरी सरकार के उस फैसले के अनुसार की गई है, जिसके तहत फसलों के लिए एमएसपी अखिल भारतीय भारित औसत उत्पादन लागत के कम से कम 1.5 गुना के स्तर पर तय किया जाएगा।

बयान में कहा गया है, सरकार ने विपणन सत्र 2014 के लिए मिलिंग कोपरा और बॉल कोपरा के एमएसपी को 5,250 रुपये प्रति क्विंटल और 5,500 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़ाकर विपणन सत्र 2025 के लिए 11,582 रुपये प्रति क्विंटल और 12,100 रुपये प्रति क्विंटल कर दिया है। यह क्रमश: 121 प्रतिशत और 120 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।

उच्च एमएसपी से न केवल नारियल उत्पादकों को बेहतर लाभ सुनिश्चित होगा, बल्कि घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नारियल उत्पादों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए किसानों को कोपरा उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन भी मिलेगा।

क्रिसमस से पहले शेयर बाजार में मंदी, बैलेंस निवेश रणनीति अपनाने का सही समय

मुंबई (ए.) वैश्विक स्तर पर बिकवाली के बीच इस हफ्ते भारतीय बेंचमार्क सूचकांकों में 5 प्रतिशत की गिरावट आई, जिसके लिए अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा अगले साल ब्याज दरों में कटौती के लिए सतर्कता बरतना भी एक बड़ा कारण रहा।

इसके परिणामस्वरूप विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) द्वारा लगातार बिकवाली की गई।

इस सप्ताह पांच में से तीन कारोबारी सत्रों में सेंसेक्स में 1,000 से अधिक अंकों की गिरावट आई और बीएसई में लिस्टेड फर्मों से लगभग 17 लाख करोड़ रुपये का बाजार पूंजीकरण खत्म हो गया।बाजार के जानकारों के अनुसार, यह इक्विटी बाजारों के लिए एक बेहद खराब सप्ताह रहा, क्योंकि प्रमुख सूचकांकों में तेज गिरावट आई, जिससे पिछले चार हफ्तों की बढ़त खत्म हो गई। एंजेल वन के ओशो कृष्णन ने कहा, बेंचमार्क सूचकांक में इस गिरावट के साथ पिछले सप्ताह के बंद आंकड़े से लगभग 1,200 अंक नीचे आ गया। परिणामस्वरूप, यह सप्ताह 200 सरल मूविंग एवरेज (एसएमए) से नीचे समाप्त हुआ, जो लगभग 5 प्रतिशत की कुल हानि को दर्शाता है।निफ्टी50 में तेज गिरावट देखी गई, सूचकांक ने सभी समर्थन स्तरों को तोड़ दिया। इस नीचे की ओर गति ने सूचकांक को अपने सबसे हालिया स्विंग लो के करीब पहुंचा दिया है, जो बाजार में अस्थिरता का संकेत देता है।

सेंसेक्स और निफ्टी में पांच फीसदी गिरावट रही

- सेंसेक्स 1,176 अंक टूटकर 78,041.59 पर बंद
- निफ्टी 364 अंक फिसलकर 23,587.50 पर बंद

मुंबई (ए.)। घरेलू इक्विटी बाजारों में लगातार चार सप्ताह की तेजी के बाद पहली बार साप्ताहिक गिरावट दर्ज की गई है। फेडरल रिजर्व द्वारा अगले साल ब्याज दरों में कम कटौती की संभावना जताने और विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों की बिकवाली के कारण निवेशकों की धारणा प्रभावित हुई। दोनों सूचकांक पिछले 5 कारोबारी सत्र में नुकसान में रहे, जो निफ्टी का 18 नवंबर, 2024 के बाद और सेंसेक्स का 26 अक्टूबर, 2023 के बाद गिरावट का सबसे लंबा सिलसिला रहा। इस हफ्ते सेंसेक्स 5 फीसदी और निफ्टी 4.7 फीसदी नुकसान में रहे, जो 17 जून, 2022 के बाद सबसे बड़ी साप्ताहिक गिरावट है। बीते सप्ताह पांच कारोबारी ?दिनों पर नजर डालें तो सप्ताह के पहले कारोबारी दिन सोमवार को बीएसई सेंसेक्स शुरुआती कारोबार 215.59 अंक की गिरावट के साथ 81,917.53 अंक पर खुला और 384.55 अंक गिरकर 81,748.57 अंक पर बंद हुआ। वहीं एनएसई निफ्टी 49.45 अंक फिसलकर 24,718.85 अंक पर खुला और 100.05 अंक की गिरावट के साथ 24,668.25 अंक पर आ गया। अमेरिकी फेड के ब्याज दर निर्णय से पहले निवेशकों के सतर्क रुख और रिलायंस इंडस्ट्रीज और एचडीएफसी बैंक जैसे ब्लू-चिप शेयरों में बिकवाली के बीच मंगलवार को शुरुआती कारोबार में शेयर बाजार के प्रमुख सूचकांक सेंसेक्स और निफ्टी में गिरावट दर्ज की गई। बीएसई सेंसेक्स 617.83 अंक गिरकर 81,130.74 अंक पर खुला और 1,064.12 अंक टूटकर 80,684.45 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी 199.75 अंक गिरकर 24,468.50 अंक पर खुला और 332.25 अंक गिरकर 24,336 पर बंद हुआ। घरेलू शेयर बाजार में बुधवार को भी गिरावट का दौर जारी रहा।

दिल्ली-नोएडा डायरेक्ट फ्लाईवे पर टोल टैक्स बंद, सुप्रीम कोर्ट का फैसला

इलाहाबाद हाई कोर्ट के 2016 के आदेश को चुनौती दी गई थी

नई दिल्ली (ए.)। दिल्ली-नोएडा डायरेक्ट (डीएनडी) फ्लाईवे पर टोल टैक?स नहीं लगेगा। सुप्रीम कोर्ट ने इस संबंध में एक महत्वपूर्ण फैसला दिया है। एक याचिका के आधार पर जिसमें इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश के खिलाफ

जायजा लिया गया था। याचिका के अनुसार इलाहाबाद हाई कोर्ट के 2016 के आदेश को चुनौती दी गई थी, जिसमें फ्लाईवे को टोल फ्री करने का सुझाव दिया गया था। सुप्रीम कोर्ट ने नोएडा प्राधिकरण उत्तर प्रदेश और दिल्ली की सरकारों को भी फटकार लगाई, क्योंकि वे अवैध रूप से इस परियोजना को नोएडा टोल ब्रिज कंपनी लिमिटेड (एनटीबीसीएल) को सौंप दिया था। सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां ने कहा कि टोल वसूलने की कोई वजह नहीं है और एनटीबीसीएल को लागत से अधिक धन वसूलने की अनुमति नहीं है। उन्होंने टॉल वसूलने की प्रक्रिया पर सख्त टिप्पणी की और कहा कि एनटीबीसीएल ने जनता की पीड़ा के बदले अनुचित लाभ हासिल किया। सुप्रीम कोर्ट ने भ्रष्टाचार के आरोपों के साथ एनटीबीसीएल के साथ अनुबंध को भी मंजूरी दी, जिसके तहत एनटीबीसीएल ने परियोजना की लागत से कहीं अधिक धन वसूला था। कोर्ट ने कहा कि यह तब तक संभव नहीं था जब तक राज्य सरकारों और नोएडा के अधिकारियों की मिलीभगत न होती, जिन्होंने अनुबंधीय दायित्वों को नजरअंदाज किया।

सम्पादकीय

अभिव्यक्ति हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, सत्य प्रस्तुत करना हमारा कर्तव्य

भारत को नुकसान जवाबदेही भाजपा की ही होगी

देश के अंदर सियासी तू तू-मैं मैं दीगर पहलू है, मगर जिस अमेरिका के साथ भारत का निकट संबंध बनाना मोदी सरकार की प्राथमिकता रही है, उसी पर अब इतना गंभीर इल्जाम सत्ताधारी भाजपा ने लगा दिया है।

भाजपा सत्ताधारी पार्टी है। उसे यह ख्याल अवश्य रखना चाहिए कि वह जो बोलती है, उससे भारत सरकार की राय से जोड़ कर देखा जाएगा। देश के अंदर सियासी चर्चा का स्तर इतना गिर चुका है कि अब कौन, क्या बोलता है, उस पर ज्यादा माथापच्ची करने की जरूरत महसूस नहीं होती। लेकिन जो बातें भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों को प्रभावित कर सकती हैं, उन मामलों में अपेक्षा अवश्य रहती है कि सत्ताधारी दल के नेता जिम्मेदारी से बोलेंगे। वे ख्याल रखेंगे कि उनकी बातों का दूरगामी प्रभाव हो सकता है। इसीलिए भाजपा ने जिस तरह अब अमेरिका के विदेश मंत्रालय और डीप स्टेट' पर निशाना साधा है, उससे व्यग्रता पैदा होती है।

पार्टी के मुताबिक अमेरिकी विदेश मंत्रालय और डीप स्टेट' के कुछ तत्व कुछ खोजी पत्रकारों और विपक्ष के नेता राहुल गांधी के साथ मिल कर भारत को अस्थिर करने में जुटे हुए हैं। ताजा संदर्भ अडानी समूह के खिलाफ अमेरिका में दायर मुकदमे का है, जिससे पार्टी ने पत्रकारों के समूह ऑर्गनाइडज्ड क्राइम एंड करप्शन रिपोर्टिंग प्रोजेक्ट की इस समूह के बारे में कुछ समय पहले आई रिपोर्ट को जोड़ दिया है। चूंकि कांग्रेस, खास कर राहुल गांधी ने इस मामले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को घेरने की कोशिश की है, तो भाजपा ने इसका जवाब इस ताजा हमले के साथ दिया है। स्पष्टत: आरोप का पूरा आधार परिस्थितिजन्य है। एक से दूसरे तार को जोड़ते हुए भाजपा इस नतीजे पर पहुंच गई है कि भारत को अस्थिर करने की बड़ी साजिश रची गई है और उच्चतम स्तर के देशद्रोही (यह आरोप संसद में लगाया गया) राहुल गांधी उसका हिस्सा बन गए हैं। देश के अंदर सियासी तू तू-मैं मैं दीगर पहलू है, मगर जिस अमेरिका के साथ भारत का निकट संबंध बनाना मोदी सरकार की प्राथमिकता रही है, उसी पर अब इतना गंभीर इल्जाम सत्ताधारी पार्टी ने लगा दिया है। यह आरोप इतना गंभीर है कि भाजपा से यह मांग जरूर की जाएगी कि वह साजिश के बारे में ठोस सबूत देश को बताए। वरना, इससे अंतरराष्ट्रीय दायरे में भारत को जो नुकसान होगा, उसकी पूरी जवाबदेही भाजपा की ही होगी।

बेंगलुरु के जगन्नाथ भवन में प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए बीजेपी एमएलसी सीटी रवि.

वन नेशन, वन इलेक्शन से विकास की नई ऊंचाइयों को हासिल करेगा देश

एस. सुनील

सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि हमेशा चलने वाले चुनावों पर विराम लग जाएगा। सरकारों का ध्यान विकास कार्यों की ओर होगा। आचार संहिता की वजह से विकास कार्य ठप्प नहीं होंगे। और सबसे ऊपर हर बार चुनाव में होने वाले बेहिसाब खर्चों पर लगाम लगेगी। चुनाव आयोग से लेकर राजनीतिक दलों का चुनावों पर बेहिसाब खर्च होता है। एक साथ चुनाव से इन खर्चों में कटौती होगी। सुरक्षा बलों को भी लगातार इस राज्य से उस राज्य तक यात्रा करनी पड़ती है। आम लोगों का ध्यान भी चुनाव पर लगा रहता है। यह सब कुछ एक निर्णय से बदल जाएगा।

देश सचमुच बदल रहा है। न सिर्फ बदल रहा है, बल्कि शक्तिशाली हो रहा है। लोकतंत्र सशक्त हो रहा है। वैश्विक स्तर पर देश का मान बढ़ रहा है। देश में आर्थिक और राजनीतिक स्थिरता आई है। अभी जिस समय देश संविधान अंगीकार करने के 75 साल पूरे होने का उत्सव मना रहा है, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने एक और ऐतिहासिक निर्णय किया है। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने एक देश, एक चुनाव' के लिए बनाए गए दो विधेयक को मंजूरी दे दी है। संसद के शीतकालीन सत्र में इसके लिए सरकार दो विधेयक पेश करेगी। इनके जरिए संविधान के अनुच्छेद 82ए, 83, 172 और 327 में संशोधन का प्रस्ताव रखा जाएगा। इससे लोकसभा और सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कराने और लोकसभा व सभी विधानसभाओं के कार्यकाल से जुड़े जरूरी बदलाव किए जाएंगे। केंद्र सरकार ने इससे पहले सितंबर में पूर्व राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली उच्चस्तरीय समिति की रिपोर्ट मंजूर कर ली थी, जिसकी सिफारिशों के आधार पर ये विधेयक तैयार किए गए हैं।

श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता वाली समिति ने सभी संबंधित पक्षों के साथ विचार विमर्श किया था। उनकी समिति के सामने अनेक विपक्षी पार्टियों ने सारे चुनाव एक साथ कराने के प्रस्ताव का विरोध किया था, लेकिन ज्यादातर पार्टियां इस विचार के समर्थन में थीं। चुनाव आयोग और आम लोगों से भी समिति ने राय ली थी। इसके बावजूद सरकार अपने संपूर्ण बहुमत के दम पर एकतरफा तरीके से इन विधेयकों को नहीं पास कराने जा रही है। सरकार इस मामले में आम राय बनाने

का प्रयास कर रही है। इसलिए संविधान संशोधन के विधेयक पेश करने के बाद उसे संयुक्त संसदीय समिति यानी जेपीसी को भेजा जा सकता है, जहां सभी पार्टियों के सांसद इस पर विचार करेंगे। यह समिति सभी संबंधित पक्षों से सलाह मशविरा करेगी और आम लोगों की राय भी लेगी। उसके बाद सहमति बना कर इसे पास कराया जाएगा। वैसे सरकार जब चाहती तब इसे पास करा सकती थी क्योंकि ये साधारण संशोधन हैं, जिनके लिए संसद में साधारण बहुमत की जरुरत है और राज्यों की विधानसभा से मंजूरी लेने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी सरकार आम सहमति का रास्ता अपनाएगी।

जिस समय श्री रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में समिति बनाई गई थी तभी से इसे लेकर कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। विपक्ष पूछ रहा है कि इसका क्रियान्वयन कैसे होगा? अगर 2029 के लोकसभा चुनाव के साथ सभी राज्यों के विधानसभाओं के चुनाव कराने हैं तो अगले चार साल में होने वाले विधानसभा चुनावों का क्या होगा? यह भी पूछा जा रहा है कि अगर लोकसभा और सभी विधानसभाओं का कार्यकाल तय कर दिया जाएगा तो बीच में सरकार ने बहुमत गंवाया या सरकार गिरी तब क्या होगा? क्या वहां राष्ट्रपति शासन लगा रहेगा और अगले लोकसभा चुनाव के साथ ही वहां चुनाव होगा? वैसे इन सभी सवालों का जवाब सरकार की ओर से प्रस्तावित विधेयक में मिल जाएगा। परंतु अगर राजनीतिक पूर्वाग्रह छोड़ दें तो इन सवालों के जवाब बहुत मुश्किल नहीं हैं। कुछ विधानसभाओं के कार्यकाल बढ़ा कर और कुछ के कार्यकाल घटा कर सभी विधानसभाओं के चुनाव लोकसभा के साथ कराए जा सकते हैं।

जहां तक बीच में सरकार गिरने का सवाल है तो पिछले काफी समय से मध्यावधि चुनाव का चलन समाप्त हो गया है। पिछले एक दशक से ज्यादा समय से दिल्ली के एक अपवाद को छोड़ दें तो किसी राज्य में मध्यावधि चुनाव की नौबत नहीं आई है। यह लोकतंत्र की परिपक्वता का प्रतीक है। फिर भी इस संभावना को देखते हुए सकारात्मक अविश्वास प्रस्ताव का प्रावधान किया जा सकता है। यानी सरकार गिरने के साथ ही नई सरकार बनाने का प्रस्ताव भी रखा जाए। इसके बावजूद अगर कहीं सरकार गिरती है और नई सरकार नहीं बनती है तो वहां बचे हुए कार्यकाल के लिए चुनाव कराया जा सकता है। अगर इतने बड़े ऐतिहासिक निर्णय पर अमल करना है तो छोटे छोटे कुछ अपवाद बनाने होंगे।

विपक्ष की ओर से पहले दिन से इस प्रस्ताव का विरोध किया जा रहा है। विपक्ष का विरोध सिर्फ इस कारण से है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने इसका प्रस्ताव किया है। विपक्ष को सरकार के हर प्रस्ताव और हर अच्छी पहल का विरोध करना है इसलिए वह विरोध कर रही है। विरोध में विपक्ष की ओर से ऐसे तर्क दिए जा रहे हैं, जिनसे खुद ही विपक्षी पार्टियां कठघरे में खड़ी होती हैं। कांग्रेस और दूसरी विपक्षी पार्टियां लोकसभा के साथ सभी राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव को लोकतंत्र विरोधी बता रही हैं। प्रश्न है कि पूरे देश में एक साथ चुनाव कराना लोकतंत्र विरोधी कैसे है और अगर यह लोकतंत्र विरोधी है तो स्वतंत्रता के बाद करीब 20 साल तक चार लोकसभा चुनाव और सभी विधानसभाओं के चुनाव एक साथ कैसे हुए?

क्या देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस के दूसरे नेता लोकतंत्र विरोधी कार्य कर रहे थे? ध्यान रहे आजादी के बाद 1952 में हुए पहले चुनाव से लेकर 1967 के चौथे चुनाव तक देश के सारे चुनाव एक साथ होते थे। उस समय भी अगर कांग्रेस पार्टी ने अपनी संविधान विरोधी सोच में गैर कांग्रेसी राज्य सरकारों को बरखास्त करना नहीं शुरू किया होता तो आगे भी एक साथ चुनाव की प्रक्रिया चलती रहती। लेकिन कांग्रेस को बरदाश्त नहीं हुआ कि राज्यों में उसको हरा कर गैर कांग्रेसी सरकारें कैसे बन गई हैं।

अब साल 2024 खत्म होने को है

श्रुति व्यास

हम 2024 के अंतिम दौर में हैं और पीछे मुड़ कर जायज़ा ले सकते हैं कि साल कैसा गुजरा। शुरू से शुरू करते हैं। सन 2024 की शुरूआत रामजी के स्वागत के साथ हुई। अयोध्या में राम मंदिर का उद्घाटन काफी तड़क-भड़क के साथ हुआ। भावनाओं का ज्वार उफान पर था। हर घर भगवान के स्वागत के लिए आतुर था और हर तरफ जय श्रीराम' के उद्घोष सुनाई दे रहे थे। भगवा रंग फैशन में था और यहां तक कि दिल्ली के खान मार्केट को राम मार्केट' तक कहा जाने लगा था। राजनीतिक पंडितों को पक्का भरोसा था कि नरेन्द्र मोदी की भाजपा जबरदस्त बहुमत के साथ सत्ता में वापिस आएगी। कहा जाता है कि जो नैरेटिव निर्धारित करता है, जीत उसी की होती है। नैरेटिव पर मोदीजी का कब्ज़ा था। जाहिर है जीत उन्हीं की होनी थी। यह भी कहा गया कि विचारधारात्मक कारणों' से आने वाला चुनाव महत्वपूर्ण होगा। सर्दियाँ विदा हुईं और वसंत आया। चुनाव अब काफी नज़दीक थे। शुरू में माहौल में न तो रोमांच था और ना ही शोर-शराबा। बल्कि चुनावी परिदृश्य काफी उदास सा था। फिर, कांग्रेस छोड़कर भाजपा में जाने वाली के एक वक्तव्य ने देश का माहौल बदलकर रख दिया। पहले दौर का मतदान समाप्त होते-होते मूड में आया यह बदलाव भाजपा के स्टार प्रचारक मोदी की चाल-ढाल में दिखता होने लगा। अब की बार चार सौ पार' का नारा कहीं गुम हो गया। चुनावी भाषण काफी आक्रामक और निम्न स्तरीय हो गए। मंच से गालियाँ दी जानी लगीं। खतना, मुजरा आदि जैसे शब्द गूंजने लगे। चुनाव प्रचार के दौरान अपनी यात्राओं में मुझे मोदी के बारे में कम, और विपक्ष के बारे में ज्यादा सुनाई देने लगा। महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे एक सशक्त आवाज़ बन कर उभरे और उनके फेंस की संख्या बहुत बढ़ गई। झारखंड में हेमंत सोरेन को जनता की हमदर्दी हासिल हुई। पश्चिम बंगाल में दीदी को जनता के दिल में अपनी जगह बनाए रखने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ा और शेष भारत में छोटी-सी लाल किताब (संविधान) लोकप्रिय हो गई। मतदान के सातों दौरों में, सूरज आग बरसाता रहा और मतदाता खामोश रहे। यहां तक कि मोदी के वाराणसी में भी कोई जोश नजर नहीं आया। चार जून को भारत के मतदाताओं ने अहंकार और हेकड़ी को बुरी तरह से कुचला। उन्होंने अतीत के बारे में झूठी बातों, प्रोपेगेंडा, मुखौटों और उन खतरों को भांप लिया जो भारत के इंडिया और इंडिया के भारत के सामने उपस्थित थे। भारत की जनता ने मोदी और उनके साथियों का कद घटा दिया। और उनके गठबंधन को भी कमज़ोर कर दिया। जनता का विवेक जागृत हुआ और उसने विपक्ष को सशक्त बनाया। सबसे बड़ी बात यह कि उसने विपक्ष में भरोसा दर्शाया। और एक क्षण के लिए ऐसा लगा कि लोकतंत्र पुन: स्थापित हो गया है। जबरदस्त गर्मी में मोदी के प्रति उन्माद कम ही महसूस किया गया। वे भी कम सक्रिय रहे और चुनावी गर्मी तथा मौसमी गर्मी से बचने लिए अधिक विदेश यात्राएं करने लगे। उन्होंने घरेलू राजनीति, घरेलू राजनीतिज्ञों के भरोसे छोड़ दी। विज्ञापनों और उद्घाटन-शिलान्यास के कार्यक्रमों में कमी आई। हरियाणा और जम्मू-कश्मीर के चुनावों में भी उनकी भागीदारी कम ही रही। लेकिन सात महीने और एक जोरदार मानसून के बाद चार राज्यों में चुनाव हुए और मोदी व उनके लोगों का कद और ताकत दुबारा बढ़ गए। खासतौर पर महाराष्ट्र में एक आश्चर्यजनक जबरदस्त जीत के बाद ऐसा लगता है कि मोदी ने अपना खोया हुआ आत्मविश्वास दुबारा हासिल कर लिया। इस बीच विपक्षी एकता में दरारें साफ नजर आने लगीं।

उनकी एकता टूटने लगी और उस पर सवालिया निशान लग गए। इंडिया गठबंधन का भविष्य एक बार फिर कम सुनहरा लगने लगा। टूट-फूट, ताने, अनुचित टिप्पणियां होने लगीं, अहं के टकराव होने लगे, नेतृत्व को लेकर खींच-तान होने लगी और राज्यों के चुनाव अलग-अलग लडने का सिलसिला जारी रहा। जहां तक राहुल गांधी का सवाल है, लोकसभा चुनाव के बाद से एक समृद्ध विरासत के ये वारिस केवल संसद के सत्रों के दौरान अतिसक्रिय नजर आते हैं। बाकी समय वे वही दिखते हैं जिसके लिए वे मशहूर हैं - राजनीति के प्रति उदासीन। यह भारतीय राजनीति के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है कि राजनीति के मूलभूत तत्वों- संगठन, मतदाताओं को जोडने और उत्साहित करने - में राहुल गांधी सक्षम और कुशल नजर नहीं आ रहे हैं। यह भी भारतीय राजनीति और विचारधारा के नैरेटिव की दृष्टि से दुर्भाग्यपूर्ण है कि राहुल गांधी सक्रिय राजनीति से दूर होकर नेतृत्व किसी और को, मसलन अपनी बहन प्रियंका गांधी को, सौंपने के लिए तैयार नहीं हैं। इन सात महीनों के दौरान अडानी के बारे में सही बातें कहने के बावजूद वे लोकसभा चुनाव में हासिल बढ़त को इस्तेमाल कर अपनी स्थिति और मजबूत बनाने में विफल रहे। वे अपनी कमजोर होती और बिखरती पार्टी को पुनर्जीवित करने और उसे सुधारने में भी विफल रहे। बल्कि जिस विचारधारा को अपनाया है, उसके चलते पार्टी काफी हद तक वामपंथ की ओर खिसक गई है - वह पार्टी जो पिछली पीढियों में उच्च-जातियों की एक मध्यमार्गी पार्टी मानी जाती थी। अब साल खत्म होने को है। ठिठुरन भरी सर्दी और धुंध का दौर दुबारा आ गया है। उसके साथ ही पिछले साल की अनिश्चितता की स्थिति भी दुबारा बन गई है। यह साल हमारे देश में लोकतंत्र के लिए अच्छा रहा। क्या नए साल में लोकतंत्र दुबारा लडखड़ाने लगेगा? क्या नरेन्द्र मोदी दुबारा वह सब हासिल कर लेंगे जो 2024 में उनसे छिन गया था? या फिर राहुल गांधी को जनता के रूख और उनकी जरूरतों का अहसास होगा और वे एक फुलटाइम राजनीतिज्ञ की तरह व्यवहार करना शुरू करेंगे? पहली स्थिति बनने की संभावना अधिक नजर आती है।

मेष राशि- आज आप का उत्साह बढ़ेगा। आप अपने आपको भाग्यशाली अनुभव करेंगे। कार्यक्षेत्र में आपको नए मौके मिलेंगे। जीवनसाथी से आपको प्यार और सम्मान मिलेगा। आज जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचें। आप के सामने कुछ भावनात्मक चुनौतियां आएंगी। आप अपने भाई बहनों का सहयोग करेंगे। आज आप नया व्यापार शुरू करने का सोच सकते हैं।

वृष राशि- आपके लिए आज का दिन खुशहाल रहेगा। आपके जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिलेगा। छात्रों की रचनात्मक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। करियर में नए अवसर मिलेंगे। लंबी यात्राओं के योग हैं, जिससे आपके व्यापार में लाभ होगा। आज आर्थिक स्थिति में मजबूती आयेगी। पारिवारिक जीवन से समस्याएं दूर होंगी। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान देने की जरूरत है।

मिथुन राशि- आपके लिए सकारात्मक बदलाव लाने वाला दिन है। प्राइवेट जॉब करने वाले लोगों को अच्छा प्रोजेक्ट मिल सकता है। जिसमें आप अपनी पूरी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे, इससे आपको लाभ होगा। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों को ज्यादा मेहनत करनी पड़ सकती है। विभिन्न स्रोतों से आज आपकी आमदनी बढ़ेगी। आज कुछ विशेष कार्य पर खर्चे भी हो सकते हैं।

कर्क राशि- आपके लिए आज का दिन फायदेमंद रहेगा। आज अचानक किसी बड़े लाभ की प्राप्ति होगी। आपको आध्यात्मिक कार्यों में आनंद आएगा। आप किसी एनजीओ के साथ जुड़कर समाज सेवा करने का मन बनाएंगे। किसी कोर्ट केस का नतीजा आपके पक्ष में आने की संभावना है। आपके विरोधी कुछ परेशानियां खड़ी करने की नाकाम कोशिश करेंगे।

सिंह राशि- आपके लिए सफलता दिलाने वाला दिन है। आज आपके सभी काम बनेंगे। कार्यक्षेत्र में बड़ी जिम्मेदारी मिल सकती है। जिसमें आपको अपनी काबिलीयत दिखाने का मौका मिलेगा। कुछ कार्यों को लेकर आज भाग-दौड़ हो सकती है। आज पॉजिटिव सोच रखने से आपके सारे काम समय से पूरे होते जाएंगे। आपके वैवाहिक रिश्ते में अच्छी बॉन्डिंग बनेगी। परिवार का पूरा सपोर्ट मिलेगा।

कन्या राशि- आपके लिए आज का दिन बेहतर रहेगा। नौकरी में बॉस का सहयोग मिलेगा। जिससे आपको काफी लाभ होने की संभावना है। साझेदारी के व्यापार में तालमेल अच्छा बना रहेगा। आपको किसी के माध्यम से धन लाभ हो सकता है। आपके परिवार में आनंद का वातावरण बना रहेगा। आज आपका सोशल सर्कल बढ़ेगा। बिजनेस से रिलेटेड आपकी यात्रा हो सकती है। सेहत का ध्यान रखें खान-पान की आदतों में सुधार करें।

तुला राशि- आपके लिए बदलाव लाने वाला दिन रहेगा। आज आपकी किसी अनुभवी व्यक्ति से मुलाकात होगी। जिनसे आपको कुछ नया सीखने को मिलेगा। आज आपके व्यापार में लाभ होगा। आज किसी पारिवारिक आयोजन पर धन खर्च हो सकता है। ऐसा करना आपके पारिवारिक रिश्ते को और भी मजबूत बनाएगा।

वृश्चिक राशि- आपके लिए आज का दिन फायदेमंद रहेगा। आज पारिवारिक सुख शांति बनी रहेगी। कार्य क्षेत्र में आपको आज ज्यादा काम मिल सकता है। आपको कलीग्स से पूरा सहयोग मिलेगा। व्यापार करने वालों को लाभ के योग हैं। पहले किए गए निवेश से फायदा होगा। प्राइवेट काम करने वालों को आर्थिक लाभ के संकेत हैं। आज आप अपने अन्दर पॉजिटिविटी लाने का प्रयास करें।

धनु राशि- आज के दिन आपकी पॉजिटिविटी बनी रहेगी। आज कार्य क्षेत्र में काम का दबाव रहेगा। आप समय पर कार्यों को पूरा करने में सफल होंगे। आज आपके आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आपके करियर में प्रगति के योग हैं। खुद का व्यवसाय करने वालों को अपने विरोधियों से बच कर रहना चाहिए। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों को विदेश में पढ़ने के अवसर मिलेंगे।

मकर राशि- आज का दिन आपके लिए अनुकूल रहेगा। आपको नई नौकरी के लिए ऑफर आ सकता है। पारिवारजनों से आपसी तालमेल बनाकर रखें। व्यापार करने वालों के लिए अच्छे लाभ की प्रबल संभावना है। कहीं किए गए निवेश का अच्छा रिटर्न मिलेगा। विद्यार्थियों की रूचि खेलकूद में बढ़ेगी। आपको अच्छे धन लाभ के योग हैं। आज आपको परिवार और जीवनसाथी का पूरा सहयोग मिलेगा।

कुंभ राशि- आपका दिन अच्छा बीतेगा। आज आप अच्छी रणनीति के साथ काम करेंगे तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी। सहकर्मियों के साथ अच्छा ताल-मेल बना रहेगा। आप जीवनसाथी के साथ सुखद समय व्यतीत करेंगे। पारिवारिक खर्च भी बढ़ सकते है। धार्मिक कार्यों में आपकी रुचि रहेगी। आप परिवार के साथ किसी धार्मिक यात्रा पर भी जा सकते हैं। व्यापारी वर्ग को अपने विरोधियों का सामना करना पड़ सकता है।

मीन राशि- आज आपका दिन लकी रहेगा। किसी सिलसिले में विदेश यात्रा का मौका मिल सकता है। आपका मन अध्यात्म में लगेगा। कार्य क्षेत्र में कुछ चुनौतियां आ सकती हैं। आप अपनी समझदारी से आगे बढ़ेंगे, आपको लाभ होगा। आज आप अपने व्यापार को और बढ़ाने के लिए नया प्लान बनायेंगे, योजनाएं सफल होंगी।

संसद में घमासान - शाबाश? हमारे चुने हुए प्रतिनिधियों- एफआईआर बनाम एफआईआर

लोकतंत्र के मंदिर में अपने प्रतिनिधियों की धक्कामुक्की बाचाबाची देखकर मतदाता, जनता हैरान

एडवोकेट किशन सनमुख़दास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के सबसे बड़े लोकतंत्र जिसके बारे में पूरी दुनियाँ चर्चा करती है। दूसरी ओर भारत का संविधान जो हमारे लिए पूज्यनीय है, परंतु इसके ऊपर ही संसद में चर्चा पर घमासान मचा हुआ है। दरअसल संसद के ऊपरी सदन में माननीय गृहमंत्री ने संविधान पर चर्चा का जवाब देते हुए कुछ ऐसा जुमला बोला कि विपक्ष ने उसे हाथों- हाथ लपक लिया, उसे मुद्दा बनाकर गृहमंत्री के पद छोड़नें की मांग तक की बात बना दी जिसके बचाव में माननीय पीएम सहित अनेक मंत्री सामने आए व गृहमंत्री ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस लेकर कहां की उसके बयान को एआई की मदद से तोड़ मरोड़ कर एक अंश को प्रस्तुत किया गया है जिसपर दो दिनों से घमासान चल रहा है, परंतु गुरुवार दिनांक 19 नवंबर 2024 का दिन संसद के काला दिवस के रूप में माना जा सकता है,जहां शाब्दिक घमासान ने धक्का मुकी का रूप ले लिया, जिसमें दो सांसद महोदय घायल हो गए हैं व अस्पताल में भर्ती है,तथा दोनों प्रमुख पार्टियों ने एक दूसरे के खिलाफ़ पुलिसथाने में एफआईआर दर्ज करा दी है सताधारी पार्टी ने नए आईपीसी कानून की धारा 115 117 125 131 351 3(5) तो विपक्षी बड़ी पार्टी ने 114 115 116 117 129 130 131 133 धाराओं के अंतर्गत सांसद मार्ग पुलिस स्टेशन में एफआईआर दर्ज की है जो मैंने एफआईआर के लिए दी गई पांच पुष्ठों की कॉपी देखी उसमें करीब 15 संसद सदस्यों के हस्ताक्षर भी हैं, जो मैंने अपने 40 वर्षों के स्तंभकार लेखन के करियर में शायद पहली बार ही यह देखा हूं, क्योंकि लोकतंत्र के मंदिर में अपने प्रतिनिधियों की धक्कामुकी बाचाबाची देखकर मतदाता,जनता हैरान है,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, संसद में धमासान शाबाश? हमारे चुने हुए प्रतिनिधियों एफआईआर बनाम एफआईआर।

साथियों बात अगर हम गुरुवार दिनांक 19 नवंबर 2024 को संसद परिक्षेत्र में धक्कामुक्की करें तो, बाबासाहेब आंबेडकर से संबंधित मुद्दे पर विपक्ष और सत्तापक्ष के सदस्यों ने गुरुवार को संसद परिसर में प्रदर्शन किया और इस दौरान उनकी कथित तौर पर धक्का-मुक्की भी हुई। सत्ताधारी पार्टी का आरोप है कि

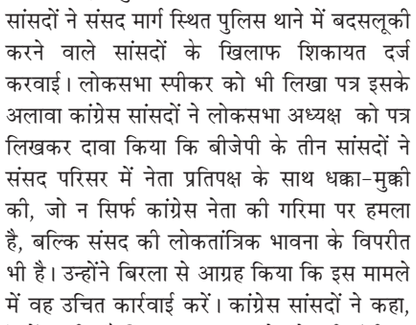

लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने धक्का-मुक्की की जिस वजह से उसके बुजुर्ग सांसद प्रताप सारंगी चोटिल हुए। सारंगी को राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं कांग्रेस का आरोप है कि पार्टी मुद्दे से ध्यान भटकाने की कोशिश कर रही है। दोनों पार्टियों ने एक दूसरे के खिलाफ दिल्ली पुलिस से शिकायत भी दर्ज कराई है।कांग्रेस ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा, गृह मंत्री ने संसद में बाबासाहेब का अपमान किया है। आज बाबासाहेब के अपमान के खिलाफ संसद परिसर में इंडिया गठबंधन के सांसद प्रदर्शन कर रहे थे। जब इंडिया गठबंधन के सांसद मकर द्वार पहुंचे तो वहां पहले से मौजूद पार्टी के सांसदों ने कांग्रेस अध्यक्ष और नेता विपक्ष के साथ धक्का-मुक्की और बदसलूकी की। इस दौरान कांग्रेस अध्यक्ष को चोट भी आई है सत्ताधारी पार्टी की इस गुंडागर्दी के खिलाफ आज कांग्रेस के सांसदों ने संसद मार्ग स्थित पुलिस थाने में बदसलूकी करने वाले सांसदों के खिलाफ शिकायत दर्ज करवाई। लोकसभा स्पीकर को भी लिखा पत्र इसके अलावा कांग्रेस सांसदों ने लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर दावा किया कि बीजेपी के तीन सांसदों ने संसद परिसर में नेता प्रतिपक्ष के साथ धक्का-मुक्की की, जो न सिर्फ कांग्रेस नेता की गरिमा पर हमला है, बल्कि संसद की लोकतांत्रिक भावना के विपरीत भी है। उन्होंने बिरला से आग्रह किया कि इस मामले में वह उचित कार्रवाई करें। कांग्रेस सांसदों ने कहा, 'हमें उम्मीद है कि आप इस मामले को पूरी गंभीरता से लेंगे और उचित कार्रवाई करेंगे।

साथियों बात अगर हम इस धक्कामुक्की का मामला पुलिस थाने की दहलीज पर पहुंचने पर एफआईआर बनाम एफआईआर की करें तो, संसद भवन में गुरुवार को हुई धक्का-मुक्की के बाद लोकसभा सदस्य अनुराग ठाकुर और बांसुरी स्वराज ने नेता प्रतिपक्ष के खिलाफ दिल्ली पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। इस मामले में नेताओं ने राहुल गांधी के खिलाफ लोकसभा अध्यक्ष और राज्यसभा के सभापति से भी शिकायतें की हैं।संसद मार्ग थाने में शिकायत दर्ज कराने के बाद अनुराग ठाकुर ने पत्रकारों से कहा कि के द्वारा शारीरिक हमला और उकसाने के लिए उनके खिलाफ दिल्ली पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। उन्होंने कहा कि एनडीए के सांसद शांतिपूर्ण तरीके से कांग्रेस के झूठ के प्रोपेगेंडा को बेनकाब कर रहे थे और उनसे माफी की मांग कर रहे थे। उसी समय राहुल गांधी अपने इंडी गठबंधन के सांसदों के साथ आए और तय रास्ते से न जाकर एनडीए के सांसदों के बीच आ गए। उन्होंने अपनी पार्टी के सदस्यों को उकसाया भी और दुर्भावनापूर्ण रवैये के साथ आगे बढ़े।राहुल गांधी के खिलाफ उन्होंने बीएनएस की धारा 109, 115, 117, 125, 131 और 351 के तहत शिकायत दर्ज कराई है। इसमें 109 हत्या का प्रयास और 117 स्वेच्छा से गंभीर चोट पहुंचाने का मामला है।दूसरी तरफ, मणिपुर से भाजपा की महिला राज्यसभा सांसद एस. फांगनोन कोन्याक ने राहुल गांधी पर दुर्व्यवहार का आरोप लगाया। उन्होंने सभापति को पत्र लिखकर राहुल गांधी बताया कि वह बाबा साहेब अंबेडकर के खिलाफ कांग्रेस पार्टी द्वारा किए गए अत्याचारों के विरोध में शांतिपूर्ण विरोध-प्रदर्शन में भाग ले रही थीं, तभी यह घटना हुई।कोन्याक ने चिट्ठी में बताया, मैं मकर द्वार की सीढ़ियों के नीचे हाथ में तख्ती लेकर खड़ी थी। सुरक्षाकर्मियों ने वहां घेराबंदी कर दूसरे दलों के सांसदों के प्रवेश के लिए एक रास्ता बनाया हुआ था। उसी समय राहुल गांधी अपनी पार्टी के अन्य सांसदों के साथ मेरे सामने आ गए, जबकि उनके लिए अलग रास्ता बनाया हुआ था। उन्होंने ऊंची आवाज में मेरे साथ दुर्व्यवहार किया और वह मेरे इतने करीब थे कि एक महिला सदस्य होने के नाते मैं बहुत असहज महसूस कर रही थी।. कांग्रेस ने भी बीजेपी सांसदों के खिलाफ दर्ज कराई शिकायतसंसद भवन परिसर में हुई हाथापाई को लेकर कांग्रेस ने भी बीजेपी सांसदों के खिलाफ दिल्ली पुलिस से शिकायत दर्ज कराई। कांग्रेस ने बीजेपी सांसदों पर अध्यक्ष के साथ दुर्व्यवहार करने का आरोप लगाया। इसके अलावा कांग्रेस ने लोकसभा अध्यक्ष को पत्र लिखकर दावा किया कि बीजेपी के तीन सांसदों ने संसद परिसर में नेता प्रतिपक्ष के साथ धक्का-मुक्की की।

K K

राष्ट्रीय समाचार

रविवार, 22 दिसम्बर 2024, नर्मदापुरम (होशंगाबाद)

दैनिक क्षितिज किरण 5

राम मंदिर देखने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ी, ताजमहल को पीछे छोड़ा

एक लाख से ज्यादा भक्त रोज करते हैं रामलला के दर्शन

अयोध्या,(ए)। अयोध्या में 22 जनवरी 2024 को रामलला मंदिर में विराजमान हुए थे। राम मंदिर निर्माण के बाद अयोध्या में पर्यटन बड़ा है। आंकड़ों के मुताबिक हर दिन एक लाख से ज्यादा भक्त दर्शन करने आते हैं। शायद यही वजह है कि 9 महीने में देश के कई महत्वपूर्ण स्थलों जिसमें आगरा यानी ताज महल भी शामिल है। पर्यटन विभाग के आंकड़ों की के मुताबिक जनवरी से सितंबर 2024 के बीच यूपी में 47.61 करोड़ पर्यटक आए हैं। इनमें 47.47 करोड़ घरेलू और 14.11 लाख विदेशी पर्यटकों हैं। पर्यटन विभाग के आंकड़ों के मुताबिक सर्वाधिक 1.84.026 विदेशी पर्यटक ने वाराणसी का भ्रमण किया है जबकि 13,55,87,370 घरेलू पर्यटक जिसमें श्रद्धालु भी शामिल हैं अयोध्या आए। वहीं आगरा में 9 महीने के अंदर 12.51 करोड़ लोग आए जिसमें 11.59 करोड़ भारतीय और 9.5 लाख विदेशी पर्यटक थे।

पर्यटन विभाग के डिप्टी डायरेक्टर ने बताया कि अयोध्या पर्यटन के क्षेत्र में तेजी से विकास कर रहा है। यहां पर्यटकों की संख्या बढ़ रही है। अयोध्या में प्रतिदिन एक लाख पर्यटक आ रहे हैं, लेकिन खास पर्व और त्योहार पर यह संख्या लाखों में पहुंच जाती है।

वसुंधरा राजे और पीएम मोदी की मुलाकात से सियासी गलियारों में हलचल

जयपुर,(ए)। पिछले दिनों बीजेपी के शीर्ष नेतृत्व पर तीखा हमला बोलने वाली राजस्थान की पूर्व सीएम वसुंधरा राजे ने शुक्रवार को दिल्ली में पीएम नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। वसुंधरा राजे ने इसे शिष्टाचार भेंट बताते हुए इस मुलाकात के फोटो अपने एक्स पर शेयर किए हैं, लेकिन राजे की पीएम मोदी से इस मुलाकात के कई मायने निकाले जा रहे हैं।बता दें वसुंधरा राजे बीते कई दिनों से कई आयोजनों में बिना किसी का नाम लिए सियासी बयानबाजी करती रही हैं। राजे की इस मुलाकात के बाद सियासी गलियारों में कई तरह की चर्चाएं शुरु हो गई हैं। राज्य में बीजेपी की सरकार होने के बावजूद उससे दूरी बनाने वाली राजे गाहे-बगाहे गहरे बयान देती रही हैं। राजे के ये बयान सियासी गलियारों में काफी चर्चा में रहते हैं।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने नागपुर में एनएच-44 पर बायो-बिटुमेन आधारित राष्ट्रीय राजमार्ग खंड का उद्घाटन किया.

जौनपुर और मथुरा में पुलिस मुठभेड़, पकड़े गए गो तस्कर

जौनपुर (आरएनएस)। उत्तर प्रदेश के जौनपुर और मथुरा में पुलिस और गो तस्करों के बीच शुक्रवार-शनिवार की दरमियानी रात दो अलग-अलग मुठभेड़ में एक तस्कर को गिरफ्तार किया गया।

जौनपुर के थाना मछलीशहर और सुजानगंज पुलिस ने संयुक्त रूप से गो तस्करों को पकड़ने के लिए अभियान चलाया था। पुलिस मुठभेड़ में एक तस्कर को पैर में गोली लगी और वह घायल हो गया। जबकि उसका साथी मौके से फरार हो गया। पुलिस ने तस्कर के पास से एक बाइक, एक तमंचा और जिंदा कारतूस बरामद किया है।

सीओ विवेक कुमार ने घटना की जानकारी देते हुए बताया कि थाना मछलीशहर और सुजानगंज पुलिस चेकिंग कर रही थी। तभी बाइक सवार दो लोग पुलिस को देखकर भागने लगे। पुलिस ने संदेह होने पर उनका पीछा किया। इस दौरान उनकी घेराबंदी की गई। हालांकि, तभी उन्होंने पुलिस पर फायरिंग शुरू कर दी, जिसके बाद पुलिस की ओर से भी जवाबी कार्रवाई की गई। एक व्यक्ति पुलिस की गोली लगने से घायल हो गया, जबकि दूसरा शख्स अंधेरे का फायदा उठाकर फरार हो गया। घायल व्यक्ति को हिरासत में लेकर इलाज के लिए सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

वहीं, मथुरा में भी पुलिस की गो तस्करों के साथ मुठभेड़ हुई। इस मुठभेड़ के दौरान 25 हजार रुपये के इनामी बदमाश के पैर में गोली लगी है। इसके अलावा प्रदीप नाम का एक सिपाही भी घायल हो गया है। घायल सिपाही को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।सीओ संदीप सिंह ने कहा, मामला थाना जैंत क्षेत्र के धौरेरा के जंगल का है। पुलिस ने एक अभियान के दौरान 25 हजार के इनामी तारीक को गिरफ्तार किया है।

अजमेर हाइवे पर एलपीजी टैंकर ब्लास्ट : 24 घंटे बाद भी मातम का सन्नाटा, मरने वालों की संख्या 14 पहुंची

जयपुर (आरएनएस)। जयपुर के अजमेर हाईवे पर हुए भयावह हादसे को 24 घंटे बीत चुके हैं, लेकिन इस दर्दनाक मंजर की गूंज अब भी लोगों के दिलों में गहरी है। शुक्रवार सुबह 5:44 बजे हुए इस हादसे में मरने वालों की संख्या 14 हो गई है। 33 से ज्यादा लोग अब भी मौत को से संघर्ष कर रहे हैं। इस हादसे ने कई परिवारों की खुशियां हमेशा के लिए छीन लीं।जब एक ट्रक ने LPG गैस से भरे टैंकर को टक्कर मारी, तो किसी को अंदाजा नहीं था कि कुछ ही सेकंड में पूरा इलाका आग के भयानक गोले में बदल जाएगा। टैंकर से लीक हुई गैस ने आग को इतना विकराल बना दिया कि एक किलोमीटर तक हर चीज जलकर राख हो गई। हादसे में एक स्लीपर बस, हाईवे के किनारे की पाइप फैक्ट्री और 40 से ज्यादा गाड़ियां खाक हो गईं।घायलों को सवाई मान सिंह अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां डॉक्टर जिंदगी बचाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हर गुजरते घंटे के साथ घायलों की हालत और गंभीर हो रही है। हादसे में अपनों को खो चुके परिवारों की आंखें अब भी आंसुओं से नम हैं। अस्पताल के बाहर एक पिता अपनी बेटी की जलती हुई तस्वीरें दिखाकर बार-बार पूछ रहा है, क्या मेरी बेटी नहीं बच सकती थी?

गृहमंत्री अमित शाह की टिप्पणी को लेकर बसपा ने किया 24 दिसंबर को देशव्यापी आंदोलन का ऐलान

लखनऊ(आरएनएस)। संसद में बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर को लेकर गृहमंत्री अमित शाह के बयान के बाद शुरू हुई विपक्षी दलों की सियासत ने अब तेजी पकड़ ली है। इसे लेकर बसपा मुखिया मायावती ने अब आंदोलन का ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि 24 दिसंबर को देशव्यापी आंदोलन किया जाएगा।

बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने शनिवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा कि देश के दलित, वंचित व अन्य उपेक्षितों के आत्मसम्मान व मानवीय हकूक के लिए अति-मानवतावादी व कल्याणकारी संविधान के रूप में असली ग्रंथ के रचयिता बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर भगवान की तरह परमपूजनीय हैं। उनका अमित शाह द्वारा किया गया अनादर लोगों के दिलों को आहत पहुंचाता है।

उन्होंने आगे लिखा कि ऐसे महापुरुष को लेकर संसद में इनके द्वारा कहे गए शब्दों से पूरे देश में सर्व समाज के लोग काफी उद्वेलित, आक्रोशित व आंदोलित हैं। अम्बेडकरवादी बीएसपी ने इस क्रम में उनसे बयान वापस लेने व पश्चाताप करने की मांग की है, जिसपर अभी तक भी अमल नहीं किया जा रहा है।

मायावती ने कहा कि ऐसे में मांग न पूरी होने पर फिर पूरे देश में आवाज उठाने की बात बीएसपी द्वारा की गई। इसलिए अब पार्टी ने अपनी इस मांग के समर्थन में 24 दिसंबर 2024 को देशव्यापी आन्दोलन करने का फैसला लिया है। उस दिन देश के सभी जिला मुख्यालयों पर पूर्णत: शांतिपूर्ण धरना-प्रदर्शन किया जाएगा।

उन्होंने आगे लिखा कि दलित/बहुजनों को अपने पैरों पर खड़े होकर आत्म-सम्मान के साथ जीने के लिए आजीवन कड़ा संघर्ष व आरक्षण सहित उनको अनेकों कानूनी हक दिलाने वाले उनके सच्चे मसीहा बाबा साहेब के नहीं रहने पर उनके अनुयायियों का हित व कल्याण ही उनका सबसे बड़ा सम्मान है, जिसके लिए बीएसपी समर्पित है।

मायावती ने कहा कि अत: कांग्रेस, भाजपा आदि पार्टियां अगर बाबासाहेब का दिल से आदर-सम्मान नहीं कर सकती हैं तो उनका अनादर भी न करें। बाबासाहेब के कारण एससी, एसटी एवं ओबीसी वर्गों को जिस दिन संविधान में कानूनी अधिकार मिले उसी दिन उन्हें सात जन्मों का स्वर्ग भी मिल गया है।

अजनाला में नगर निगम चुनाव की वोटिंग से पहले फायरिंग, कांग्रेस नेता के बेटे की गाड़ी को बनाया निशाना

अमृतसर (आरएनएस)। पंजाब के अमृतसर में नगर निगम चुनाव की वोटिंग से पहले अजनाला में गोलियां चलीं। बताया जा रहा है कि कुछ अज्ञात लोगों ने शनिवार सुबह एक गाड़ी पर फायरिंग की। गाड़ी में बैठा युवक बाल-बाल बच गया। युवक कांग्रेस के शहर अध्यक्ष दविंदर सिंह का बेटा है।

एसएचओ अजनाला सतपाल सिंह ने घटना की जानकारी देते हुए बताया कि एक गाड़ी पर फायरिंग की गई थी, जिसकी सूचना मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच की जा रही है। इस घटना में शामिल आरोपियों को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।वहीं, कांग्रेस पार्टी के शहर अध्यक्ष दविंदर सिंह ने कहा कि वह अपने कार्यालय में बैठे थे, तभी उन्हें फोन आया कि आपके बेटे की कार पर किसी ने गोली चलाई है। तीन से चार बाइक सवार अज्ञात युवकों ने इस घटना को अंजाम दिया है।

जयपुर में राज्य सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे राजस्थान युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं को तितर-बितर करने के लिए पुलिस ने पानी की बौछारों का इस्तेमाल किया।

राजस्थान में सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने को लेकर मुख्यमंत्री ने दिए निर्देश, ब्लैक स्पॉट्स को ठीक करने के लिए चलेगा विशेष अभियान

जयपुर (आरएनएस)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश में सड़क दुर्घटनाओं मे कमी लाने के लिए विशेष अभियान चलाकर ब्लैक स्पॉट्स को ठीक करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा है कि सड़कों के दुर्घटना संभावित स्थानों को चिन्हित कर इनका शीघ्र सुधार किया जाए ताकि वाहन दुर्घटनाओं से होने वाले जान-माल के नुकसान को रोका जा सके।मुख्यमंत्री ने सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि अभियान के दौरान कार्यों की गुणवत्ता का पूरा ध्यान रखा जाए और कामों को निर्धारित अवधि में पूरा करवाया जाए। उन्होंने बताया कि प्रदेश में लगभग 2350 करोड़ की लागत से ब्लैक स्पॉट्स को सुधारने का काम किया जा रहा है ताकि दुर्घटनाओं को कम किया जा सके।उन्होंने निर्देश दिए हैं कि सड़क निर्माण और मरम्मत के कार्यों में निर्धारित मानकों का पालन नहीं करने वालों के खिलाफ कठोर कार्यवाही की जाये। गौरतलब है कि प्रदेश में एनएचएआई द्वारा 40 ब्लैक स्पॉट चिन्हित कर 812.64 करोड़ रुपए की लागत से इन्हें सुधारने का कार्य किया जा रहा है, जिनमें से 13 का काम पूरा हो चुका है तथा शेष का प्रक्रियाधीन है।

नोएडा : दिन में ब्लिंकिट डिलीवरी बॉय का काम और रात में करता था लूट, मुठभेड़ में हुआ गिरफ्तार

नोएडा (आरएनएस)। नोएडा के थाना फेस-2 में पुलिस और एक बदमाश के बीच 21 दिसंबर की सुबह-सुबह मुठभेड़ हो गई। पकड़े गए बदमाश की पहचान ब्लिंकिट ऐप का सामान डिलीवरी करने वाले डिलीवरी बॉय के रूप में हुई है। यह बदमाश दिन में डिलीवरी बॉय बन कर सामान की डिलीवरी करता था और रात में लूट और चोरी जैसी घटनाओं को अंजाम देता था।

पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि 21 दिसंबर को थाना फेस-2 नोएडा पुलिस याकूबपुर रेड लाइट पर संदिग्ध व्यक्ति व वाहन की चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान एक बिना नंबर की बाइक पर सवार व्यक्ति को रुकने का इशारा किया गया तो वह नहीं रुका और तेज गति से भागने लगा। पुलिस ने जब बाइक सवार व्यक्ति का पीछा किया तो बाइक सवार सेक्टर-83 मेट्रो स्टेशन की तरफ वाली रोड की तरफ भागने लगा। उसके बाद आगे चलकर गंदे नाले की सर्विस रोड पर दोनो तरफ से अपने आप को घिरता देख वह बाइक छोड़कर भागा और उसने पुलिस टीम पर फायर भी कर दिया। जवाबी कार्रवाई में पुलिस टीम ने भी फायर किया तो पैर में गोली लगने के कारण बदमाश घायल हो गया।

पुलिस के मुताबिक बदमाश की पहचान सुमित गुप्ता (23) जिला बदायूं के रूप में हुई है। उसके कब्जे से 1 तमंचा .32 बोर, नाल में फंसा 1 खोखा कारतूस .32 बोर, 1 जिंदा कारतूस .32 बोर और 1 काले रंग की बाइक बिना नंबर प्लेट की और चोरी के 3 स्मार्टफोन बरामद हुए हैं। बदमाश के आपराधिक इतिहास व अन्य जानकारी की जा रही है। बदमाश द्वारा एनसीआर क्षेत्र में मोटरसाइकिल से लोगों के मोबाइल फोनों को मौका पाकर चोरी की घटनाओं का अंजाम दिया जाता था। पुलिस ने बताया दिन में यह ब्लिंकिट ऐप के डिलीवरी बॉय के रूप में काम करता था और रात में यह चोरी और लूट की घटनाओं को अंजाम देता था।

लूट व डकैती की साजिश रचते साइबर ठगी करने वाले 04 आरोपी एवं फर्जी खाता उपलब्ध कराने वाला एक आरोपी गिरफ्तार

भीलवाड़ा (आरएनएस)। भीलवाड़ा जिले की पुर थाना पुलिस ने गश्त के दौरान अरिहंत विहार रोड पर झाड़ियों में बैठ डकैती की योजना बना रहे चार बदमाशों को गिरफ्तार कर मौके से एक कार, दो मोटरसाइकिल, एक तलवार व एक गुप्ति बरामद की है। आरोपी डकैती की घटना के अतिरिक्त साइबर ठगी में भी शामिल है। इन्हें फर्जी खाता उपलब्ध कराने वाले एक साथी को भी बाद में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने इनके पास साइबर ठगी में प्रयुक्त 15 मोबाइल व 16 सिम कार्ड भी जब्त किए हैं। पुलिस को उनके पास से अनेक बैंक खातों का विवरण भी मिला है, जिनकी जांच की जा रही है।

एसपी धर्मेन्द्र सिंह ने बताया कि जिले में अवैध हथियारो के विरुद्ध एवं आपराधिक गतिविधियों पर प्रभावी कार्रवाई के लिए निर्देशित किया गया। जिस पर एएसपी पारस जैन के निर्देशन व सीओ श्याम सुन्दर विश्नोई के सुपरविजन में एसएचओ जय सुल्तान सिंह कविया मय टीम द्वारा आसूचना संकलित कर 17 दिसम्बर को एनएच 48 पर लूट व डकैती की साजिश रचते 04 आरोपियो को अवैध हथियार, वाहन, 15 मोबाइल व 16 सिम सहित पकड़ा गया था।

नेशनल हाईवे पर गश्त के दौरान 17 दिसम्बर को एएसआई गोपाल लाल व टीम को सूचना मिली कि अलास्का होटल के पास से अरिहन्त विहार जाने वाले रास्ते पर कुछ मोटरसाईकिले व एक कार खड़ी है। जहां 5-6 युवक एकान्त में झाडियों के बीच बैठकर बड़ी घटना करने की योजना तैयार कर रहे है।

मौके पर पहुंच पुलिस टीम ने लूट व डकैती की साजिश करते आरोपी जुनैद खान पुत्र राजू खान (22) निवासी चेम्बूर नाका, मुम्बई हाल प्रतापनगर, भीलवाडा, दिनेश सिंह पुत्र शंकर सिंह पंवार (24) निवासी भिनाय अजमेर हाल मण्डपिया थाना मंगरोप जिला भीलवाडा, अनुराग उर्फ चेतन कोली पुत्र अमित (19) निवासी अलवर गेट अजमेर हाल तिलक नगर थाना भीमगंज जिला भीलवाड़ा एवं देवेन्द्र कलाल पुत्र रामलाल (22) निवासी गुरूनानक कॉलोनी थाना कोतवाली बूंदी को डिटेन किया गया।

इनके पास से पुलिस ने एक कार, 02 मोटरसाईकिल, 01 तलवार, 01 गुप्ती नुमा हथियार, 15 मोबाईल फोन व 16 सिमे जप्त की। मुकदमा दर्ज कर आरोपियों को किया गया। अनुसंधान में आरोपियों के पास मिले मोबाईल एवं सिमों के विश्लेषण तथा पूछताछ में सामने आया कि आरोपी टेलीग्राम एवं अन्य एप्प से चैटिंग कर उसके स्क्रीनशॉट मंगवाते। फिर पुलिस अधिकारी बनकर पीड़ित को कॉल कर धमका रकम ऐंठते है।

गिरफ्तार आरोपी रकम ऐंठने के बाद अपने साथियों द्वारा उपलब्ध करवाये गये फर्जी बैंक अकाउण्टस मे उक्त रकम ट्रांसफर कर देते है।

जिला जेल रोपड़ में कैदी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत, पुलिस ने शुरू की जांच

रोपड़ (आरएनएस)। जिला जेल रोपड़ में एक कैदी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है। जानकारी के अनुसार, कैदी बीर चंद, पुत्र दीवान चंद, निवासी बनूड़ की आज सुबह करीब 11:30 बजे मौत हो गई। मृतक का शव रोपड़ के सरकारी अस्पताल के शव गृह में रखा गया है।

मृतक के खिलाफ 12 नवंबर 2021 को एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया था, और 4 नवंबर 2024 को मोहाली कोर्ट ने उसे 12 साल की सजा सुनाई थी। इस घटना के बाद मृतक के परिजन अपनी मौत को लेकर संदेह जता रहे हैं। हालांकि, पुलिस ने कहा है कि मौत की न्यायिक जांच की जाएगी, और जांच रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

मुंबई : पार्किंग विवाद में शख्स की हत्या, 3 आरोपी गिरफ्तार

मुंबई (आरएनएस)। मुंबई के विक्रोली पश्चिम स्थित सूर्य नगर में पार्किंग को लेकर हुए विवाद के बाद 41 वर्षीय व्यक्ति की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई। इस घटना के बाद पार्क साइट पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के अनुसार, विक्रोली में इस्लामपुरा नूरानी मस्जिद से जाने वाली सड़क पर एक दुकान के सामने टेम्पो पार्क करने को लेकर विवाद हो गया। इसके बाद देखते ही देखते यह विवाद झगड़े में बदल गया और मोहम्मद तारिक जैनुर आब्दीन,फुरकान इश्तियाक अहमद खान और जीशान इश्तियाक अहमद खान ने किताबउल्लादिन शेख की पिटाई शुरू कर दी। आरोपियों ने लोहे की मेज,पाइप और हाथों में जंजीर लेकर किताबउल्ला को पीटना शुरू कर दिया, जिसके बाद वह गंभीर रूप से घायल हो गया। गंभीर रुप से घायल किताबउल्ला रफीक उल्ला शेख को इलाज के लिए महात्मा फुले अस्पताल ले जाया गया, जहां उसे मृत घोषित कर दिया गया। इसके बाद मुंबई की पार्कसाइट पुलिस ने केस दर्ज कर तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा, सांसद मनोज तिवारी और वरिष्ठ नेता अरविंदर सिंह लवली नई दिल्ली के कॉनॉट प्लेस में भाजपा के संकल्प पत्र 2025 के लिए आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान।

फ्लोरल लहंगे में अमायरा दस्तूर ने दिखाया ग्लैमरस अवतार, एक्ट्रेस ने लेटेस्ट लुक से एक बार फिर धड़काया फैंस का दिल

बॉलीवुड एक्ट्रेस अमायरा दस्तूर आए दिन अपने बोल्ड और एथनिक लुक से फैंस के बीच कहर बरपाती रहती हैं। उनका कातिलाना अवतार इंटरनेट पर आते ही तेजी से वायरल होने लगता है। अब हाल ही में अमायरा की कुछ तस्वीरें इंस्टाग्राम पर आते ही छा गई हैं। इन तस्वीरों में उनकी हॉटनेस देखकर फैंस उनकी तारीफों के पुल बांधते नहीं थक रहे हैं। एक्ट्रेस अमायरा दस्तूर आज किसी भी पहचान की मोहताज नहीं हैं। उन्होंने अपनी अदाकारी और हॉटनेस से फैंस को इस कदर दीवाना बनाया है कि लोग उनकी तारीफों के पुल बांधते नहीं थकते हैं।अब हाल ही में एक्ट्रेस की कुछ फोटोज इंस्टाग्राम पर वायरल हो रही हैं। इन फोटोज में उनका स्टनिंग अवतार देखकर फैंस बेकाबू हो गए हैं। बता दें कि अमायरा दस्तूर अपने हर एक लुक में कहर बरपाती हैं फिर चाहे वो वेस्टर्न हो या एथनिक उनका हर एक लुक कमाल का है।अमायरा दस्तूर की इन फोटोड में आप देख सकते हैं एक्ट्रेस ने पिंक कलर का फ्लोरल लहंगा पहना हुआ है और साथ ही स्लीवलेस ब्लाउज और फ्लोरल लुक में दुपट्टा भी कैरी किया है। एक्ट्रेस अपने इस ट्रेडिशनल लुक में बला की खूबसूरत नजर आ रही हैं।गले में नेकलेस, खुले बाल और मिनिमल मेकअप कर के एक्ट्रेस अमायरा दस्तूर ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है। उनका कातिलाना अवतार फैंस को बेहद पसंद आ रहा है।बता दें कि एक्ट्रेस जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी तस्वीरों पर लाइक्स और कॉमेंट्स के जरिए जमकर अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएं देते हैं। इन फोटोज में आप देख सकते हैं एक यूजर ने तस्वीरों पर कॉमेंट करते हुए लिखा है- यू लुक सो ब्यूटिफुल। दूसरे यूजर ने लिखा है- गुड लुकिंग। तीसरे यूजर ने लिखा है- लुकिंग गॉर्जियस इन दिस लुक। ऐसे ही लोगो एक के बाद एक रिएक्शंस दे रहे हैं।

सलमान के भाई सोहेल खान की साउथ सिनेमा में एंट्री, नंदमुरी कल्याण राम फिल्म एनकेआर21 से करेंगे धमाल

सलमान खान के छोटे भाई-एक्टर सोहेल खान अपने 54वां जन्मदिन के इस खास अवसर पर एक्टर के फैंस को बड़ा तोफहा दिया. लंबे समय के बाद सोहेल खान बड़े पर्दे पर वापसी कर रहे हैं. इतना ही नहीं, वे अपने नए प्रोजेक्ट से तेलुगू फिल्म इंडस्ट्री में डेब्यू करने जा रहे हैं.

नंदमुरी कल्याण राम स्टारर एनकेआर 21 की शूटिंग शुरू हो गई है. इसकी शूटिंग हैदराबाद से शुरू हुई है. कल्याण राम भी शूटिंग में भाग ले रहे हैं. इस बीच, फिल्म के खलनायक सोहेल खान को जन्मदिन की शुभकामनाएं देते हुए मेकर्स ने फिल्म से उनका पहला लुक जारी किया है.एनकेआर 21 से सोहेल का फर्स्ट लुक जारी करते हुए मेकर्स ने उनका तेलुगू सिनेमा में स्वागत किया. उन्होंने पोस्ट के कैप्शन में लिखा है, एनकेआर 21 के खलनायक सोहेल खान को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं. तेलुगू सिनेमा में आपका स्वागत है, सर. हमें आपका साथ पाकर बहुत खुशी हुई.

भारत में 1000 करोड़ के करीब पुष्पा 2, हिंदी कलेक्शन में स्त्री 2-जवान को पछाड़ा, वर्ल्डवाइड 1500 करोड़ का आंकड़ा पार

अल्लू अर्जुन की नई एक्शन फिल्म पुष्पा 2: द रूल को दुनियाभर के बॉक्स ऑफिस पर रिलीज हुए 15 दिन हो चुके हैं. इन 15 दिनों में सुकुमार की निर्देशित फिल्म ने कई ब्लॉकबस्टर फिल्मों को धूल चटाई है, वो चाहे फिल्म घरेलू बॉक्स ऑफिस हो या वर्ल्डवाइड. 15वें दिन पुष्पा 2 ने हिंदी बॉक्स ऑफिस पर श्रद्धा कपूर-राजकुमार राव की ब्लॉकबस्टर फिल्म स्त्री 2 और शाहरुख खान की जवान को पीछे छोड़ दिया है और सबसे ज्यादा कमाई करने वाली हिंदी नेट ग्रॉसर बन गई है. वहीं, वर्ल्डवाइड बॉक्स ऑफिस पर इसने 1500 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है. आरआरआर को पीछे छोड़ने के बाद इसकी नजर बाहुबली 2 पर टिकी हुई है.

सैकनिल्क के मुताबिक, सुकुमार की निर्देशित पुष्पा 2 ने अपने श्रद्धा कपूर और राजकुमार राव की हॉरर कॉमेडी स्त्री 2 (598 करोड़ नेट लगभग) और शाहरुख खान की जवान के लाइफटाइम कलेक्शन को पीछे छोड़ दिया है और हिंदी में अब तक की नंबर 1 फिल्म बन गई है. शाहरुख खान की जवान 582 करोड़ नेट कलेक्शन के साथ तीसरे नंबर पर है.

5 दिसंबर को रिलीज होने के बाद पुष्पा 2 ने दो हफ्तो के भीतर हिंदी में 618.50 करोड़ रुपये का नेट कलेक्शन किया. इसके साथ अल्लू अर्जुन की फिल्म 600 करोड़ से ज्यादा नेट कलेक्शन करने वाली पहली फिल्म बन गई है, जो अब सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर बन गई है.पुष्पा 2 ने पहले दिन से ही रिकॉर्ड तोड़ कमाई की है और अब तक इसने बॉक्स ऑफिस पर अपनी पकड़ बनाए रखी है. उम्मीद है कि यह फिल्म 750 करोड़ से ज्यादा की कमाई के साथ अपना सफर खत्म करेगी और एक कदम आगे बढ़कर 800 करोड़ तक पहुंच सकती है, जो भविष्य की फिल्मों के लिए एक बड़ा रिकॉर्ड होगा.

इस बीच, मेगा-ब्लॉकबस्टर पुष्पा 2 सभी भाषा में 1000 करोड़ की कमाई के करीब पहुंच गई है. रिलीज के 15वें दिन पुष्पा 2 ने सभी भाषाओं में 990.7 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया है.

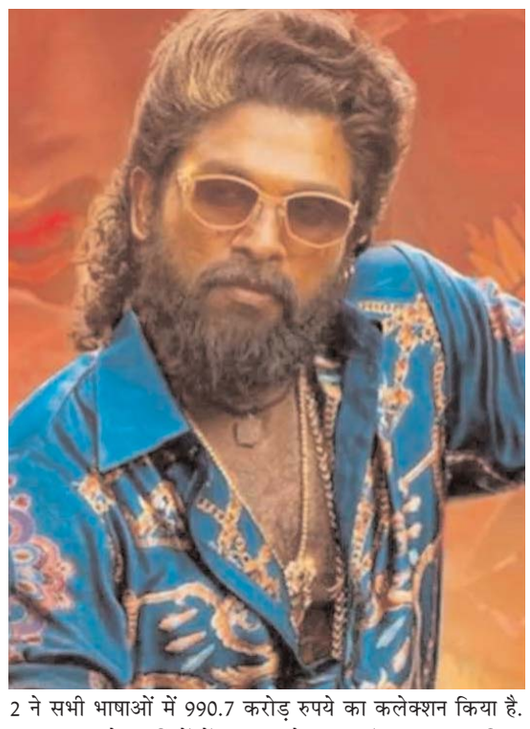

पुष्पा 2 ने 14 दिनों में 1500 करोड़ का आंकड़ा पार कर लिया है. मेकर्स ने बीते गुरुवार को पुष्पा 2 के वर्ल्डवाइड कलेक्शन का अपडेट साझा किया. अल्लू अर्जुन-रश्मिका मंदाना की फिल्म ने 14 दिनों में1508 करोड़ रुपये का बिजनेस किया है. आरआरआर को पछाड़ने के बाद से ही पुष्पा 2 दुनिया भर में तीसरी सबसे बड़ी भारतीय फिल्म बनी हुई है और अब बाहुबली 2 को पछाड़कर दंगल के बाद दूसरी सबसे बड़ी फिल्म बनने की राह पर है.

गोविंदा के बेटे यशवर्धन अभिनय की दुनिया में कदम रखने को तैयार, साई राजेश से मिलाया हाथ

भारतीय सिनेमा के जाने-माने अभिनेता गोविंदा को किसी परिचय की जरूरत नहीं है। अपने डांस, स्टाइल और कॉमेडी से उन्होंने लाखों दिलों पर राज किया है। गोविंदा ने हिंदी सिनेमा को कई सुपरहिट फिल्में दी हैं।अब खबर आ रही है कि गोविंदा के बेटे यशवर्धन आहूजा अभिनय की दुनिया में कदम रखने जा रहे हैं।उन्होंने अपनी पहली फिल्म के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता निर्देशक साई राजेश से हाथ मिलाया है, जिसे लेकर वह काफी उत्साहित हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक, साई दर्शकों के बीच एक दिलचस्प फिल्म लेकर आ रहे हैं, जिसकी कहानी रोमांस और कॉमेडी से भरपूर होगी।फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने के लिए निर्माताओं ने यशवर्धन से संपर्क किया है और उन्होंने इसके लिए हामी भर दी है।फिल्म की शूटिंग अगले साल यानी 2025 में शुरू हो जाएगी और यह 2026 तक सिनेमाघरों में रिलीज हो सकती है।इस खबर का आधिकारिक ऐलान जल्द ही किया जा सकता है।

यशवर्धन ने साजिद नाडियावाला के अधीन रहकर बतौर असिस्टेंट डायरेक्टर के रूप में काम किया है।उन्होंने ढिशूम, किक 2 और तड़प जैसी फिल्मों को असिस्ट किया है। असिस्टेंट डायरेक्टर के रूप में उनका अनुभव एक्टिंग में काम आ सकता है।गोविंदा की एक बेटी टीना आहूजा भी हैं। उन्होंने 2015 में स्मीप कांग की फिल्म सेकेंड हैंड हसबैंड के साथ अभिनय की शुरुआत की थी। फिल्म में गिप्पी ग्रेवाल, गीता बसरा और धर्मेंद्र भी थे।

अनन्या पांडे की नई फिल्म चांद मेरा दिल का ऐलान, लक्ष्य लालवानी के साथ बनी जोड़ी

पिछली बार अभिनेत्री अनन्या पांडे को फिल्म सीटीआरएल में देखा गया था, जिसमें उनकी अदाकारी की खूब तारीफ हुई। यह फिल्म नेटफिलक्स पर उपलब्ध है।अब अनन्या ने अपनी नई फिल्म का ऐलान कर दिया है, जिसका नाम चांद मेरा दिल है। इस फिल्म में अनन्या की जोड़ी किल के अभिनेता लक्ष्य लालवानी के साथ बनी है।यह पहला मौका है, जब दोनों कलाकार पहली बार बड़े पर्दे पर साथ दिखाई देंगे।

चांद मेरा दिल के निर्देशन की कमान विवेक सोनी ने संभाली है, वहीं करण जौहर इस फिल्म के निर्माता हैं।यह फिल्म अगले साल सिनेमाघरों में दस्तक देगी। फिलहाल इसकी रिलीज तारीख सामने नहीं आई है।

महाराजा ने बाहुबली 2 को पछाड़ा, चीन में सबसे ज्यादा कमाई करने वाली साउथ फिल्म बनी

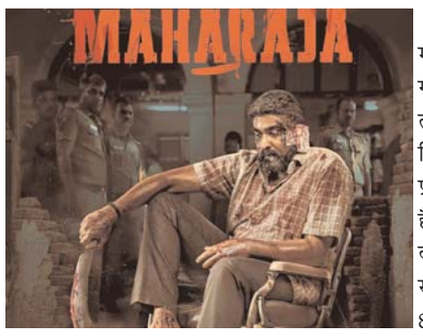

विजय सेतुपति और अनुराग कश्यप की फिल्म महाराजा को 20 नवंबर, 2024 को चीन में रिलीज किया गया था और यह पहले दिन से ही बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा रही है। आए दिन यह फिल्म कोई न कोई रिकॉर्ड भी तोड़ रही है।अब महाराजा ने एक महीने के भीतर प्रभास की फिल्म बाहुबली 2: द कन्क्लूजन को पछाड़ दिया है।इसी के साथ यह चीन में सबसे ज्यादा कमाई करने वाली दक्षिण भारतीय फिल्म बन गई हैं। बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क के मुताबिक, महाराजा ने अब तक चीन में 85.75 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार कर लिया हैं।इन आंकड़ों के साथ यह चीन में सबसे ज्यादा कमाई करने वाली दक्षिण भारतीय फिल्म बन चुकी हैं। पहले इस स्थान पर 80.50 करोड़ रुपये के साथ बाहुबली 2 ने कब्जा किया हुआ था।इसके अलावा महाराजा चीन में 10वीं सबसे बड़ी भारतीय फिल्म भी बन गई है। इस फिल्म को आप नेटफ्लिक्स पर देख सकते है।महाराजा 14 जून को भारत में रिलीज हुई थी और यह बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट साबित हुई।

तेजस्वी प्रकाश के लिए भोजन प्रेम की भाषा

लोकप्रिय कुकिंग-आधारित शो 'मास्टर शेफ इंडिया' में टीवी इंडस्ट्री की मशहूर अभिनेत्री तेजस्वी प्रकाश भाग लेने को तैयार हैं। उत्सुक अभिनेत्री ने भोजन को एक प्रेम भाषा बताया।शो में शामिल होने के बारे में बात करते हुए तेजस्वी ने कहा, रियलिटी टीवी शो ने मुझे निडर होना सिखाया है, लेकिन नेशनल टेलीविजन पर खाना बनाने को लेकर थोड़ी घबराहट है। मेरा वास्तव में मानना है कि भोजन एक प्रेम की भाषा है, इसलिए मैंने दर्शकों को प्रभावित करने के लिए अपना दिल (पाक कौशल) दांव पर लगाने का फैसला किया और मुझे उम्मीद है कि यह सफलता की वजह बनेगा।लोकप्रिय टीवी शो 'मास्टरशेफ इंडिया' का नया सीजन 'सेलिब्रिटी मास्टर शेफ-अब उन सबकी सीटी बजेगी' सेलिब्रिटी प्रतियोगियों के साथ दर्शकों के सामने आने को तैयार है। इस शो में हस्तियां अपने पाक कौशल का प्रदर्शन करते और रसोई में अपनी योग्यता दिखाते नजर आएंगे।दिलचस्प बात यह है कि पहली बार 'मास्टर शेफ इंडिया' में लोकप्रिय टेलीविजन और इंटरनेट की हस्तियां प्रतियोगियों के रूप में शामिल होंगी। 'सेलिब्रिटी मास्टर शेफ' इंडिया 2024 के लिए पुष्टि किए गए प्रतियोगियों में गौरव खन्ना, उषा नादकर्णी, दीपिका कक्कड़, राजीव अदातिया और कॉमेडियन चंदन प्रभाकर जैसे लोकप्रिय टेलीविजन के चेहरे शामिल हैं। शो में बिग बॉस फेम एल्विश यादव और रुबीना दिलैक जैसी हस्तियों के भी शामिल होने की चर्चा है। 'सेलिब्रिटी मास्टर शेफ इंडिया' सोनी टीवी पर प्रसारित होने वाला शो है। नौवें सीजन को फराह खान होस्ट करेंगी। शेफ विकास खन्ना और रणवीर बरार जज के रूप में वापसी करने को तैयार हैं। हालांकि, शो कब से शुरू होगा इसकी आधिकारिक तारीख अभी तक सामने नहीं आई है। 'मास्टर शेफ इंडिया' के अलावा, मास्टर शेफ तमिल और मास्टर शेफ तेलुगू भी लोकप्रिय है। शो का पिछला सीजन सोनी लिव पर स्ट्रीम हो रहा है।

शादी-पार्टी के लिए स्किन टोन के हिसाब से ऐसे करें परफेक्ट लिपस्टिक शेड का चुनाव

शादी का सीजन चल रहा है. वहीं क्रिसमस और न्यू ईयर भी आने वाला है. ऐसे में जगह-जगह पार्टी होस्ट की जाएंगी. अक्सर किसी भी शादी-पार्टी में जाने के लिए जब भी लड़कियां तैयार होती हैं तो उनके मन में एक सवाल जरूर होता है कि वो कैसी लिपस्टिक लगाएं. लिपस्टिक किसी के लुक को निखारने का काम करती है. लिपस्टिक के बिना मेकअप अधूरा रहता है. महिलाएं हमेशा अपने लिपस्टिक के शेड का चुनाव बड़े ही सोच-समझ कर करती है. विंटर सीजन में अगर आप ब्यूटीफुल लुक चाहती हैं तो आप अपनी स्किन टोन के हिसाब से लिपस्टिक के शेड का चुनाव करें. आइए जानते हैं परफेक्ट लिपस्टिक शेड का चुनाव करने के लिए कुछ हैक्स.

डार्क स्किन टोन

जिन महिलाओं की स्किन डार्क टोन है उन्हें डार्क वाइन, कॉपर ब्राउन, पर्पल कलर के शेड्स वाली लिपस्टिक चुननी चाहिए. इस तरह की लिपस्टिक में आपका लुक बेहद ही बोल्ड और रिच नजर आएगा.

डस्की स्किन टोन

जिन महिलाओं की स्किन डस्की है उन्हें रिच और ब्राइट कलर्स लिपस्टिक का चुनाव करना चाहिए. इसी के साथ इस टोन की महिलाएं मैरून, डीप प्लम, चॉकलेट ब्राउन शेड्स का भी चुनाव कर सकती हैं. इस तरह की लिपस्टिक डार्क कलर के आउटफिट के साथ परफेक्ट रहेगी.

मीडियम स्किन टोन

अगर आपकी स्किन टन मीडियम है तो आप मोव, वॉर्म ब्राउन या पिंच कलर की लिपस्टिक का चुनाव कर सकती हैं. इस तरह के लिपस्टिक का शेड न्यू लुक पाने के लिए बेस्ट है और इसे अप्लाई करने के बाद आप लुक बेहद ही खूबसूरत नजर आएगा. वहीं इस तरह की लिपस्टिक आप लाइट कलर के आउटफिट के साथ मैच करके अप्लाई कर सकती हैं.

फेयर स्किन टोन

जिन महिलाओं का स्किन फेयर है उन्हें लाइट और पेस्टल टोन शेड्स वाली लिपस्टिक चुननी चाहिए. इस तरह की लिपस्टिक ब्यूटीफुल लुक पाने के लिए बेट्स हो सकती हैं. फेयर स्किन टोन वाली महिलाएं पिंक न्यूड कोरल, लाइट पिंक, क्लासिक रेड कलर की लिपस्टिक का चुनाव कर सकती हैं और इस तरह की लिपस्टिक आप अपने आउटफिट के हिसाब से मैच करके अप्लाई कर सकती हैं. वहीं ग्लैमरस लुक के लिए आप वाइन कलर की लिपस्टिक अप्लाई कर सकती हैं.

सर्दियों में आइसक्रीम खाना सही है या नहीं? जानिए डाइटिशियन की राय

सर्दियों में आईसक्रीम खाना ट्रेंड बनता जा रहा है. अक्सर लोग बाहर घूमने जाते हैं तो आइसक्रीम खाना तो बनता है. सर्दियो में लोगों को आइसक्रिम खाने में मजा भी आ रहा है. कुछ लोग इस समय पहाड़ों की बर्फबारी का मजा लेना पसंद करते हैं, तो कुछ समुद्र किनारे छुट्टियां बिताते हैं. क्या आप जानते हैं कि सर्दियों में आइसक्रीम खाना कितना सही है? जहां एक तरफ आइसक्रीम का मजा हर उम्र के लोगों को आता है, वहीं दूसरी तरफ सर्दियों में इसका ज्यादा सेवन करना नुकसानदायक हो सकता है. इस पर विशेषज्ञों की राय जानना बेहद जरूरी है.

क्या सर्दियों में आइसक्रीम खाना सेफ है?

डाइटिशियन के मुताबिक, किसी भी मौसम में आइसक्रीम का ज्यादा सेवन हेल्द के लिए सही नहीं है.आइसक्रीम में शुगर और कैलोरी की मात्रा अधिक होती है, जो वजन बढ़ाने के साथ-साथ कई स्वास्थ्य समस्याएं भी पैदा कर सकती है. खासकर सर्दियों में इसे खाने से बचना चाहिए.

सर्दियों में ठंड के कारण शरीर का मेटाबॉलिज्म धीमा हो जाता है, जिससे शरीर का इम्यून सिस्टम कमजोर हो सकता है. इस दौरान आइसक्रीम खाने से सर्दी-जुकाम, खांसी और अन्य इंफेक्शन्स का खतरा बढ़ जाता है.

अगर आइसक्रीम खाने का मन करे तो क्या करें?

डाइटिशियन का कहना है कि अगर आपको आइसक्रीम खाने का बहुत मन कर रहा हो, तो इसे दिन के समय (दोपहर या शाम) में कम मात्रा में खा सकते हैं। लेकिन रात में आइसक्रीम खाने से बचना चाहिए, क्योंकि ठंड के कारण सर्दी-जुकाम का खतरा और बढ़ सकता है।

किन लोगों को आइसक्रीम से पूरी तरह बचना चाहिए?

आइसक्रीम इन समस्याओं को बढ़ा सकती है और गले में जलन या दर्द हो सकता है.

ऐसे लोग जल्दी सर्दी-जुकाम की चपेट में आ सकते हैं.

आइसक्रीम में मौजूद शुगर उनके ब्लड शुगर लेवल को बढ़ा सकती है, जिससे स्थिति बिगड़ सकती है.

अमेरिका गैंगस्टर जैसा देश, जापान और दक्षिण कोरिया भी कम नहीं : प्योंगयांग

सोल, (आरएनएस) । उत्तर कोरिया ने शनिवार को दक्षिण कोरिया, अमेरिका और जापान के बीच हाल ही में हुई त्रिपक्षीय बैठक की आलोचना की। उसने इस वार्ता को शांति का अपमान बताया। उत्तर कोरिया के मुख्य समाचार पत्र ने 11 दिसंबर को टोक्यो में आयोजित त्रिपक्षीय हिंद-प्रशांत वार्ता की आलोचना करते हुए वाशिंगटन पर शांति को नष्ट करने वाला गैंगस्टर जैसा देश बताया। योनहाप समाचार एजेंसी ने रोडोंग सिनमुन के हवाले से बताया, संयुक्त राज्य अमेरिका का इतिहास दुनिया भर में युद्ध का इतिहास रहा है। इसकी विदेश नीति दूसरे देशों पर आक्रमण करने, शांति और सुरक्षा को नष्ट करने की है। अखबार ने जापान को शांति चाहने वाले देश के रूप में खारिज कर दिया। इसने दक्षिण कोरिया को आक्रमण और युद्ध की अमेरिकी नीतियों का अगुआ भी करार दिया। इसने कहा, संयुक्त राज्य अमेरिका बुराई का साम्राज्य है और शांति को नष्ट करने वाला एक गैंगस्टर जैसा देश है। कठपुतली जापान और दक्षिण कोरिया भी कम दोषी नहीं हैं। सोल के विदेश मंत्रालय के अनुसार, इस महीने की वार्ता के दौरान, तीनों देशों ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और समृद्धि में सामूहिक रूप से योगदान करने के तरीकों की खोज करने की जरुरत को स्वीकारा। जनवरी में अपने उद्घाटन सत्र के बाद यह अपनी तरह की दूसरी बैठक थी। यह वार्ता ऐसे समय में हुई जब दक्षिण कोरिया, अमेरिका और जापान उत्तर कोरिया के परमाणु और मिसाइल खतरों के बीच त्रिपक्षीय सुरक्षा सहयोग को गहरा करने की मांग कर रहे थे। बता दें प्योंयांग दक्षिण कोरिया, अमेरिका और जापान के गठबंधन को अपने लिए खतरे के तौर पर देखता है।

कनाडा के प्रधानमंत्री ने मंत्रिमंडल में किया फेरबदल , आठ नए मंत्री शामिल

ओटावा ,(आरएनएस) । कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने अपने मंत्रिमंडल में बदलाव की घोषणा की। प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर से जारी सूची के अनुसार, मंत्रिमंडल में आठ नए मंत्रियों को शामिल किया गया और चार मंत्रियों की भूमिका बदल दी गई है। शिन्हुआ समाचार एजेंसी ने बताया कि इन बदलावों के बाद मंत्रिमंडल में प्रधानमंत्री के अलावा कुल 38 मंत्री बने रहेंगे और इसमें महिलाओं और पुरुषों की संख्या बराबर है।यह फेरबदल पूर्व उप प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री क्रिस्टिया फ्रीलैंड के इस्तीफा के कुछ दिनों बाद हुआ। जुलाई से अब तक कुल 9 मंत्रियों ने अपने इस्तीफे या अगले संघीय चुनाव से हटने की घोषणा की है। ट्रूडो ने एक समाचार विज्ञप्ति में कहा कि नया मंत्रिमंडल उन चीजोंको पूरा करेगा जो कनाडाई लोगों के लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं, जिसमें जीवन को और अधिक किफायती बनाना और अर्थव्यवस्था को बढ़ाना शामिल है।प्रधानमंत्री ने कहा कि टीम आवास, बाल देखभाल और स्कूल भोजन पर आगे बढ़ना जारी रखेगी। इसके साथ-साथ लोगों की जेब में अधिक पैसा डालने के लिए काम करेगी।न्यू डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता जगमीत सिंह ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर कनाडाई लोगों के लिए एक पत्र पोस्ट किया, जिसमें कहा गया कि उनकी पार्टी 27 जनवरी से शुरू होने वाले हाउस ऑफ कॉमन्स की अगली बैठक में ट्रूडो सरकार को गिराने के लिए अविश्वास प्रस्ताव लाएगी। प्रधानमंत्री से उम्मीद है कि वह छुट्टियों के दौरान लिबरल नेता के रूप में अपने भविष्य पर विचार करेंगे। कंजर्वेटिव नेता पियरे पोलीवरे, जिनकी पार्टी जल्द ही चुनाव होने पर बड़े बहुमत से जीतने की राह पर है, उन्होंने शुक्रवार को कहा कि वह गवर्नर जनरल से संसद को तत्काल फिर से बुलाने के लिए कहेंगे ताकि सांसद सरकार को तुरंत गिरा सकें।

रूस के कजान में 9/11 जैसा हमला : यूक्रेन के 8 ड्रोन हमले से दहशत, एयरपोर्ट पर उड़ानें रद्द

रुस, (आरएनएस) । रूस के कजान शहर में शनिवार रात यूक्रेन द्वारा किए गए ड्रोन हमले से दहशत फैल गई। रिपोर्ट्स के अनुसार, यूक्रेन ने कजान पर 8 ड्रोन दागे, जिनमें से 6 रिहायशी इमारतों को निशाना बनाया गया। इन हमलों ने शहर में 9/11 जैसे हालात पैदा कर दिए हैं। कजान एयरपोर्ट पर सभी उड़ानें एहतियातन रोक दी गई हैं, और शहर में आपातकालीन स्थिति घोषित कर दी गई है।

ड्रोन हमलों से प्रभावित रिहायशी इलाकों में आगजनी और भारी नुकसान की खबरें सामने आई हैं। स्थानीय प्रशासन ने तत्काल राहत कार्य शुरू कर दिया है। दमकल और बचाव दल ने आग पर काबू पाने के लिए मोर्चा संभाला। हालांकि, अब तक की जानकारी के मुताबिक, इन हमलों में कितने लोगों की जान गई है, यह स्पष्ट नहीं हो सका है।

कजान एयरपोर्ट पर सभी उड़ानें रोक दी गई हैं, और यात्रियों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया है। एयरपोर्ट अधिकारियों ने बयान जारी कर कहा है कि सुरक्षा स्थिति का आकलन करने के बाद ही उड़ानों को पुन: शुरू किया जाएगा।

यूक्रेन ने इन हमलों की जिम्मेदारी ली है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह हमला रूस के सैन्य ठिकानों को कमजोर करने की रणनीति का हिस्सा हो सकता है। ड्रोन हमले में इस्तेमाल की गई तकनीक को लेकर जांच चल रही है।

रूसी प्रशासन ने इन हमलों को खतरनाक और उकसाने वाला कदम करार दिया है। रूसी रक्षा मंत्रालय ने बयान जारी कर कहा कि भविष्य में इस तरह के हमलों से निपटने के लिए कड़े कदम उठाए जाएंगे। कजान में सुरक्षा बढ़ा दी गई है और आसपास के इलाकों में भी हाई अलर्ट जारी कर दिया गया है।

यह हमला रूस-यूक्रेन संघर्ष को और गहरा कर सकता है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने इस हमले की निंदा की है और तनाव कम करने की अपील की है। विश्लेषकों का कहना है कि यह घटना यूरोप और बाकी दुनिया के लिए नई चुनौतियां पेश कर सकती है।

कजान में हुए इन ड्रोन हमलों ने रूस-यूक्रेन युद्ध के तनाव को और बढ़ा दिया है। रिहायशी इलाकों पर हमलों ने नागरिकों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। आने वाले दिनों में इस घटना का असर रूस-यूक्रेन संबंधों और वैश्विक राजनीति पर देखने को मिल सकता है।

सूडान के एल फशर में जारी संघर्ष में 800 नागरिकों की मौत : संयुक्त राष्ट्र

जिनेवा, (आरएनएस)। पश्चिमी सूडान में उत्तरी दारफुर राज्य की राजधानी एल फशर में जारी घेराबंदी के कारण मई 2024 से अब तक कम से कम 782 लोग मारे गए और 1,143 से अधिक घायल हुए हैं। यह जानकारी संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त कार्यालय (ओएचसीएचआर) ने दी।

रिपोर्ट के अनुसार, इस वर्ष जून में लड़ाई काफी बढ़ गई थी और संघर्षरत पक्षों के बीच आवासीय क्षेत्रों में भीषण लड़ाई हुई। लोग गोलीबारी में फंस गए क्योंकि घरों का इस्तेमाल लड़ाई के लिए किया जाने लगा। साथ ही बाजारों पर हमला किया गया और लूटपाट की गई।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, कई नागरिकों ने अपने घरों, बाजारों, अस्पतालों के पास और सड़कों पर अपनी जान गंवा दी।

रिपोर्ट में कहा गया कि हजारों लोग शहर में फंसे हुए हैं, उन्हें सुरक्षित बाहर निकलने की कोई गारंटी नहीं है। साथ ही संघर्ष में शामिल सभी पक्षों द्वारा अंधाधुंध हमलों से और लोगों की मौत का खतरा बना हुआ है।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त वोल्कर तुर्क ने भी शुक्रवार को जारी एक बयान में एल फशर की घेराबंदी को तत्काल समाप्त करने की अपील की।तुर्क ने संघर्ष में शामिल सभी पक्षों से नागरिकों, नागरिक बुनियादी ढांचे पर हमले बंद करने, अंतरराष्ट्रीय कानूनी दायित्वों का पालन करने और संघर्ष बढ़ने से रोकने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से तत्काल हस्तक्षेप करने की अपील की। जनरल अब्देल फत्ताह अल-बुरहान के नेतृत्व में सूडानी सेना और उनके पूर्व डिप्टी मोहम्मद हमदान डागालो के नेतृत्व में आरएसएफ 18 महीने से अधिक समय से संघर्ष में उलझे हुए हैं। इस युद्ध से एक गंभीर मानवीय संकट पैदा हो गया है, जिसमें 1 करोड़ 20 लाख से अधिक लोगों को घरों से विस्थापित कर दिया गया है और संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों को राहत पहुंचाने में संघर्ष करना पड़ा है।

पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा में बड़ा आतंकी हमला, 16 सैनिकों की मौत हुई और 8 घायल

इस्लामाबाद (आरएनएस) पाकिस्तान के खैबर पख्तूनख्वा के अपर जिले में एक बड़ा आंतकी हमला हुआ है। इसमें पाकिस्तान के 16 सैनिकों की मौत हुई और 8 घायल हो गए।

रिपोर्ट के मुताबिक एक पुलिस अधिकारी ने कहा, लिटा सर क्षेत्र में एक सुरक्षा चौकी पर देर रात हमला हुआ।इसके पहले 5 अक्टूबर को कई आतंकी हमलों में 16 पाकिस्तानी सैनिकों की मौत हो गई थी। खुर्रम जिले में हमले में सात सैनिक मारे गए थे, वहीं दो लोग घायल हुए थे। विश्व स्तर पर नामित आतंकवादी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) ने कथित तौर पर हिंसा की जिम्मेदारी ली थी। बताया जा रहा शनिवार को हुए हमले में भी टीटीपी आतंकियों का हाथ है। टीटीपी का हमला पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच तनाव का कारण है।आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक खैबर पख्तूनख्वा में टीटीपी के नेतृत्व वाले तीव्र हमलों और बलूचिस्तान प्रांत में अलगाववादी जातीय बलूच विद्रोहियों के कारण इसी साल सैकड़ों सुरक्षाकर्मियों की जान चली गई। पाकिस्तान का आरोप है कि टीटीपी आतंकियों को अफगानिस्तान की तालिबान सरकार की ओर से समर्थन मिला है। हालांकि तालिबान कहता रहा है कि वह अपनी जमीन का इस्तेमाल आतंकी गतिविधियों के लिए नहीं होने दे रहा है।

एच5एन1 बर्ड फ्लू वायरस से मानव संक्रमण का खतरा फिलहाल कम : डब्ल्यूएचओ

जिनेवा (आरएनएस) । विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने हाल ही में बताया है कि इन्फ्लूएंजा ए (एच5एन1) वायरस का खतरा फिलहाल दुनिया भर में कम है।समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) और विश्व पशु स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूओएएच) के सहयोग से विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक मूल्यांकन के बाद बताया है कि मानव संक्रमण मुख्य रूप से संक्रमित पशुओं या दूषित वातावरण के संपर्क में आने से होता है।इसके मामलों में वृद्धि के बावजूद, कुल संख्या कम बनी हुई है, जिसका दुनिया के सार्वजनिक स्वास्थ्य पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा है। हालांकि, जानवरों से जानवरों में संक्रमण जारी है, खास तौर पर उन क्षेत्रों में जहां प्रभावी निवारक उपायों का अभाव है। इससे संक्रमित जानवरों के संपर्क में आने वाले खेत मजदूरों और अन्य लोगों को विभिन्न प्रकार के खतरों का सामना करना पड़ता है।इसी साल

17 दिसंबर को जिनेवा में आयोजित प्रेस ब्रीफिंग के दौरान, विश्व स्वास्थ्य संगठन, एफएओ और डब्ल्यूओएएच के विशेषज्ञों ने वैश्विक एच5एन1 स्थिति का विस्तार से वर्णन किया तथा वायरस के संभावित विकास के बारे में चेतावनी दी।विश्व स्वास्थ्य संगठन की उभरती बीमारियों की विशेषज्ञ मारिया वान केरखोव ने बताया कि 2024 तक एच5एन1 संक्रमण के 76 मामले दर्ज किए जा चुके हैं। इन मामलों में से 61 मामले सिर्फ अमेरिका के हैं, जो मुख्य रूप से कृषि से जुड़े कार्य करने वाले लोगों में पाए गए हैं।हालांकि एच5एन1 मुख्य रूप से पोल्ट्री वायरस है, जिसके मानव-से-मानव फैलाव का कोई सबूत नहीं मिला है, लेकिन वैन केरखोव ने आगाह किया कि यह वायरस तेजी से अपने आप को ढाल सकता है। मानव संक्रमण के अलावा, अमेरिका ने वन्यजीवों और पोल्ट्री में व्यापक एच5एन1 प्रकोप की सूचना दी है, साथ ही 15 राज्यों में डेयरी मवेशियों में हाल ही में संक्रमण की जानकारी दी है। एफएओ में वरिष्ठ पशु स्वास्थ्य अधिकारी मधुर ढींगरा ने वैश्विक पोल्ट्री उद्योगों पर महत्वपूर्ण आर्थिक प्रभाव पर जोर दिया, जिससे प्रभावित क्षेत्रों में खाद्य और पोषण सुरक्षा को खतरा है। पोल्ट्री के अलावा, वायरस ने 500 से अधिक पक्षी प्रजातियों और 70 स्तनधारी प्रजातियों को संक्रमित किया है।

खेल समाचार

अश्विन के संन्यास पर जडेजा ने कहा, आखिरी क्षण में पता चला

मेलबर्न, (आरएनएस)। भारत के ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा ने खुलासा किया कि कैसे रविचंद्रन अश्विन के अचानक संन्यास ने प्रशंसकों और टीम के साथियों को चौंका दिया। उन्होंने कहा कि उन्हें सार्वजनिक घोषणा से कुछ क्षण पहले ही इसके बारे में पता चला।

जडेजा ने मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में संवाददाताओं से कहा, मुझे आखिरी क्षण में संन्यास के बारे में पता चला। प्रेस कॉन्फ्रेंस से पांच मिनट पहले। यह चौंकाने वाला था।

उन्होंने कहा, हमने पूरा दिन साथ बिताया, और उसने मुझे संकेत भी नहीं दिया। हम सभी जानते हैं कि अश्विन का दिमाग कैसे काम करता है (हंसते हुए)।

अश्विन और जडेजा एक दशक से अधिक समय से टेस्ट क्रिकेट में भारत के गेंदबाजी आक्रमण की आधारशिला रहे हैं। एक साथ 58 टेस्ट खेलते हुए, उन्होंने एक शानदार स्पिन जोड़ी बनाई, जिसके बीच 587 विकेट लिए। उनकी साझेदारी ने अनिल कुंबले और हरभजन सिंह की दिग्गज जोड़ी को पीछे छोड़ दिया, जिन्होंने 501 विकेट लिए थे।

अश्विन का संन्यास चौंकाने वाला है, लेकिन भारतीय क्रिकेट में बदलाव का संकेत भी है। जडेजा ने अपने गेंदबाजी साथी के जाने से पैदा हुए खालीपन को स्वीकार किया, लेकिन युवा खिलाड़ियों के लिए खुलने वाले अवसरों के बारे में आशावादी विचार भी व्यक्त किया।

उन्होंने कहा, हम इतने सालों से गेंदबाजी साथी रहे हैं। हम एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। हम बल्लेबाजों के खिलाफ योजना बनाते थे। मुझे बहुत सी

चीजें याद आएंगी। हालांकि, उन्होंने जल्दी ही भविष्य पर ध्यान केंद्रित कर लिया। उम्मीद है कि कोई बेहतर स्पिनर और ऑलराउंडर अश्विन की जगह लेगा। भारत में हमेशा अच्छी प्रतिभा होती है और कोई भी अपूरणीय नहीं है। यह किसी भी युवा खिलाड़ी के लिए मौका भुनाने और अपनी छाप छोड़ने का सुनहरा अवसर है।जडेजा की टिप्पणी गाबा में 77 रनों की पारी के बाद भी आई, एक ऐसी पारी जिसने भारत को श्रृंखला में वापसी करने में मदद की, जो वर्तमान में 1-1 से बराबर है। अपने प्रदर्शन पर विचार करते हुए, उन्होंने कहा कि इस पारी ने उन्हें बहुत आत्मविश्वास दिया है।

उन्होंने कहा, जब टीम मुश्किल स्थिति में हो, तो बाहर स्कोर करना आपको आत्मविश्वास देता है। मानसिकता वही रहेगी। आपको मैच की स्थिति के अनुसार खेलना होगा और मैं टीम की भूमिका के अनुसार खेलूंगा।

जडेजा की पारी ने न केवल मैच बचाया बल्कि क्रिकेट जगत को एक ऑलराउंडर के रूप में उनकी अपार उपयोगिता की याद भी दिलाई। दिलचस्प बात यह है कि जडेजा पर्थ और एडिलेड में सीरीज के पहले दो टेस्ट में नहीं खेले। हालांकि कुछ लोग इसे एक चूके हुए अवसर के रूप में देख सकते हैं, जडेजा का मानना है कि यह उनके लिए फायदेमंद रहा।

उन्होंने कहा, मैंने पहले दो मैच नहीं खेले, इससे मुझे अधिक अभ्यास करने में मदद मिली और मैं परिस्थितियों के अनुकूल हो गया। नेट्स में की गई कड़ी मेहनत ने मुझे मैच में मदद की। सीरीज 1-1 से बराबर होने के साथ, भारत के पास ऑस्ट्रेलिया में लगातार तीसरी टेस्ट सीरीज जीतकर इतिहास रचने का मौका है। जडेजा इस बात से अच्छी तरह वाकिफ हैं कि यह दांव पर है और इससे मिलने वाला अवसर भी।

जडेजा ने कहा, हम अच्छी स्थिति में हैं, तीन मैचों के बाद भी यह 1-1 की बराबरी पर है। यह दिलचस्प होने वाला है। अगर हम अगले दो में से एक मैच भी जीत जाते हैं, तो भी हम सीरीज बरकरार रखेंगे, क्योंकि हमने पिछले दो मैच यहीं जीते हैं। यह खुद को आगे बढ़ाने और मेलबर्न में अच्छा प्रदर्शन करने का अच्छा मौका है।

केएल राहुल के साथ कौन करेगा ओपनिंग? खतरनाक होने वाली है दिल्ली कैपिटल्स की जोड़ी

नईदिल्ली, (आरएनएस) । आईपीएल 2025 मेगा ऑक्शन में केएल राहुल को दिल्ली कैपिटल्स ने 14 करोड़ रुपये में खरीदकर अपने साथ जोड़ लिया. हालांकि, अब तक फ्रेंचाइजी ने इस बात की आधिकारिक घोषणा नहीं की है की केएल ही टीम के कप्तान बनेंगे. मगर, ये बात तो तय है की केएल अपकमिंग सीजन में दिल्ली के लिए कप्तानी करते नजर आएंगे. लेकिन, सवाल ये है की केएल के साथ ओपनिंग करने कौन आएगा? आइए आपको केएल के ओपनिंग पार्टनर के बारे में बताते हैं।

भारतीय स्टार क्रिकेटर केएल राहुल आईपीएल 2025 में दिल्ली कैपिटल्स की जर्सी में नजर आने वाले हैं. जहां, जाहिर तौर पर एक बार फिर वह पारी की शुरुआत करने मैदान पर उतरेंगे. केएल एक शानदार ओपनर हैं, जो कंसिस्टेंसी के साथ रन बनाने के लिए जाने जाते हैं।

लेकिन, लोगों के मन में सवाल है की केएल के साथ पारी की शुरुआत कौन करेगा? यदि आप भी इसका जवाब तलाश रहे हैं, तो आपको बता दें दिल्ली ने आरटीएम कार्ड का इस्तेमाल करते हुए जेक फ्रेसर मैकगर्क को अपने साथ वापस जोड़ा. इस खिलाड़ी का केएल के साथ ओपन करना तय माना जा रहा है, क्योंकि उन्होंने पिछले सीजन भी तूफानी शुरुआत दिलाई थीं।

जेक फ्रेजर-मैकगर्क ने पिछले सीजन ही दिल्ली कैपिटल्स का हिस्सा रहते हुए अपना आईपीएल डेब्यू किया. फ्रेंचाइजी ने कुल 9 मैच खेले हैं, जिसमें उन्होंने 36.67 के औसत और 234.04 की खतरनाक स्ट्राइक रेट से 330 रन बनाए हैं. इस दौरान उन्होंने 4 अर्धशतक भी लगाए हैं. वह अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी के लिए मशहूर हैं, पिछले सीजन उन्होंने 32 चौके और 28 छक्के जड़े थे।

अक्षर पटेल, कुलदीप यादव, केएल राहुल, ट्रिस्टन स्टब्स, अभिषेक पोरेल, मिशेल स्टार्क, हैरी ब्रूक, जेक फ्रेजर-मैकगर्क, टी. नटराजन, करुण नायर, समीर रिजवी, आशुतोष शर्मा, त्रिपुराना विजय, माधव तिवारी, मोहित शर्मा, फाफ डुप्लेसी, मुकेश कुमार, दर्शन नालकांडे, वी. निगम, दुष्मंथा चमीरा, डोनोवन फरेरा, अजय मंडल, मनवंत कुमार।

पीएफ धोखाधड़ी के आरोपों के बाद पूर्व क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी

नईदिल्ली, (आरएनएस)। पूर्व भारतीय क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा से जुड़ी एक बड़ी खबर सामने आ रही है। उनके खिलाफ अरेस्ट वॉरंट जारी हुआ है। उथप्पा पर पीएफ फंड घोटाले का आरोप लगाया गया है, जिसके बाद पुलिस उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी, क्योंकि क्षेत्रीय पीएफ आयुक्त सदाक्षरी गोपाल रेड्डी ने इसके निर्देश दिए हैं।

वारंट पीएफ क्षेत्रीय आयुक्त शदाक्षरी गोपाल रेड्डी ने जारी किया, जिन्होंने पुलकेशिनगर पुलिस को आवश्यक कार्रवाई करने का निर्देश भी दिया. सेंचुरीज़ लाइफस्टाइल ब्रांड प्राइवेट लिमिटेड नामक एक प्राइवेट कंपनी का मैनेज करने वाले उथप्पा पर कर्मचारियों के वेतन से पीएफ अंशदान काटने और उनके खातों में पैसे ना डालने का आरोप है।

रॉबिन उथप्पा पर 23 लाख रुपये के घोटाले का आरोप है. मिली जानकारी के मुताबिक, उन्होंने अपने कर्मचारियों की सैलरी से पीएफ के नाम से पैसे काटे, लेकिन उनके अकाउंट में ट्रांसफर ही नहीं किए. 4 दिसंबर को लिखे पत्र में, आयुक्त रेड्डी ने पुलिस को गिरफ्तारी वारंट को जारी करने का निर्देश दिया।

हालांकि, वारंट को पीएफ कार्यालय में वापस कर दिया गया क्योंकि माना जाता है कि उथप्पा ने अपना घर बदल लिया है. अधिकारी अब क्रिकेटर का पता लगाने और कानून का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए आगे की जांच कर रहे हैं।

भारतीय क्रिकेटर रॉबिन उथप्पा काफी टैलेंटेड प्लेयर रहे. उन्होंने भारतीय टीम के लिए 46 वनडे और 13 टी-20आई मैच खेले, जिसमें क्रमशः 934 और 249 रन बनाए. मौजूदा समय में उथप्पा कॉमेंट्री करते नजर आते हैं।

अतीत में पोंटिंग के साथ मेरी अच्छी दोस्ती रही है : श्रेयस अय्यर

नई दिल्ली,(आरएनएस) । भारतीय बल्लेबाज श्रेयस अय्यर ने कहा कि वह आईपीएल 2025 के लिए पंजाब किंग्स की टीम में एक बार फिर रिकी पोंटिंग के साथ विचार-विमर्श करने के लिए उत्सुक हैं, और याद किया कि कैसे उन्होंने टूर्नामेंट में पहले ऑस्ट्रेलिया के

दिग्गज कप्तान के साथ अच्छी दोस्ती की थी।

पोंटिंग और अय्यर तीन सत्रों तक दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच और कप्तान थे, जहां टीम 2020 में एक बार उपविजेता रही थी। लेकिन इस साल की शुरुआत में पोंटिंग को पंजाब का मुख्य कोच नामित किया गया और पिछले महीने जेद्दा में नीलामी में फ्रैंचाइज़ी ने अय्यर को 26.75 करोड़ रुपये में हासिल किया, जिससे उनका फिर से साथ आना लगभग तय हो गया।

मैं समझ सकता हूँ कि प्रशंसकों के बीच क्या भावनाएं होंगी। रिकी के आने से, हमने अतीत से एक बेहतरीन दोस्ती साझा की है। हम कई पहलुओं पर अपनी सोच को आगे बढ़ाएंगे और विचार-विमर्श करेंगे। उम्मीद है कि हम पहले मैच से ही अच्छा प्रदर्शन करेंगे।शनिवार को फ्रैंचाइजी के बयान में अय्यर ने कहा, पंजाब किंग्स का हिस्सा बनने के लिए बेहद उत्साहित हूं। मैं पंजाब किंग्स परिवार में शामिल होने का इंतज़ार नहीं कर सकता। चार ट्रॉफी जीतना मेरे लिए एक शानदार साल रहा है। मेरा मुख्य लक्ष्य पंजाब के लिए आईपीएल ट्रॉफी जीतना है। अय्यर आईपीएल 2024 खिताब जीतने वाली कोलकाता नाइट राइडर्स की कप्तानी करने और हाल ही में बेंगलुरु में मुंबई को अपना दूसरा सैयद मुश्ताक अली टी20 ट्रॉफी खिताब दिलाने के बाद पंजाब सेट-अप में शामिल हुए हैं।

19 साल के कोंस्टास के पास रिकार्ड बनाने का अवसर

मेलबर्न (ए)। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच चौथे टेस्ट मैच में 19 साल के युवा बल्लेबाज सैम कोंस्टास अगर पदार्पण करते हैं तो वह एक रिकार्ड अपने नाम करेंगे। कोंस्टास पिछले 70 साल में ऑस्ट्रेलिया के सबसे युवा टेस्ट बल्लेबाज होंगे। इससे पहले साल 1952 में इयान क्रेग ने 17 साल 239 दिन की उम्र में डेब्यू किया था। ऑस्ट्रेलिया ने कोंस्टास को बचे हुए दो टेस्ट मैचों के लिए टीम में शामिल किया है। कोंस्टास ने न्यू साउथवेल्स के लिए शेफील्ड शील्ड के दो मैचों में शतक जमाया। भारत ए के खिलाफ एमसीजी पर मैच में उन्होंने नाबाद 73 रन बनाए जबकि कैनबरा में भारत के खिलाफ प्रधानमंत्री एकादश के लिए गुलाबी गेंद के मैच में 107 रन की पारी खेली।

ऑस्ट्रेलिया के मुख्य चयनकर्ता जॉर्ज बेली ने कहा, 'सैम को पहली बार टेस्ट टीम में शामिल किया गया है। उसकी बल्लेबाजी की शैली अलग है। हमें विश्वास है कि नाथन के पास काबिलियत है और उसे भविष्य में टेस्ट क्रिकेट में और मौके मिलेंगे। उसे बाहर रखने का फैसला कठिन था।

बॉक्सिंग डे टेस्ट में कोहली की भूमिका अंतर पैदा करने वाली हो सकती है : बांगर

नई दिल्ली, (ए)। भारत के पूर्व मुख्य कोच संजय बांगर का मानना है कि मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में होने वाला बॉक्सिंग डे टेस्ट विराट कोहली के लिए इस अवसर पर खुद को साबित करने और खुद को भारत की बल्लेबाजी लाइनअप की धुरी के रूप में फिर से स्थापित करने का एक बेहतरीन मौका है।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी 1-1 से बराबर होने के साथ, यह मैच भारत की श्रृंखला जीतने और विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) के फाइनल में पहुंचने की संभावनाओं को मजबूत करने की उम्मीदों के लिए महत्वपूर्ण है।

कोहली का मौजूदा श्रृंखला में प्रदर्शन मिला-जुला रहा है। पर्थ में उनके शतक ने भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई, लेकिन अन्य मैचों में उनका प्रदर्शन निराशाजनक रहा है।

रोहित की बेटी समायरा ने स्कूल के वार्षिक समारोह में किया डांस, वीडियो सामने आया

मुम्बई (ए)। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा जहां ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट सीरीज खेल रहे हैं। वहीं उनकी बेटी ने स्कूल में सालाना वार्षिक समारोह में शानदार डांस कर सबका ध्यान खींचा है। समायरा धीरूभाई अंबानी इंटरनेशनल स्कूल में पढ़ती है। स्कूल के इस वार्षिक समारोह में समायरा अपनी मम्मी रितिका सजदेह के साथ पहुंची थी। समायरा की स्कूल के कार्यक्रम की एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही है, जिसमें वह डांस कर रही हैं। वहीं रितिका दर्शकों के बीच बैठकर इसे देखती नजर आईं। वह इस दौरान तालियां बजाकर बेटी का उत्साह बढ़ाती भी नजर आयीं।

समायरा इस माह के अंत में 6 साल की हो जाएगी। दूसरी ओर भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी का चौथा टेस्ट मैच 26 दिसंबर से मेलबर्न क्रिकेट मैदान में खेला जाना है। इस टेस्ट को बॉक्सिंग डे टेस्ट भी कहा जाता है। हालांकि यह सीरीज इस वक्त काफी रोमांचक मोड़ पर खड़ी है। 3 टेस्ट मैच के बाद सीरीज 1-1 की बराबरी पर चल रही है।

कमिश्नर रानी पिपरिया में सुशासन सप्ताह के अंतर्गत आयोजित मुख्यमंत्री जनकल्याण शिविर में हुए शामिल

शिविर में ग्रामीणों को विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम संभाग कमिश्नर के जी तिवारी शनिवार को सोहागपुर तहसील के ग्राम रानी पिपरिया में सुशासन सप्ताह के अंतर्गत आयोजित मुख्यमंत्री जन कल्याण शिविर में शामिल हुए। कमिश्नर ने रानी पिपरिया के ग्रामीणों को शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी एवं ग्राम में हो रहे विकास कार्यों की जानकारी भी ली। कमिश्नर ने ग्रामीणों से कहां की शिविर में अपनी शिकायतों एवं समस्याओं के संबंध में आवेदन दें सभी आवेदनों का प्राथमिकता से यथोचित निराकरण किया जाएगा। कमिश्नर ने शिविर में आए ग्रामीणों को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति योजना एवं अटल पेंशन योजना की जानकारी दी, साथ ही संबल योजना से मिलने वाले लाभ की जानकारी दी और कहां की सभी पात्र व्यक्ति संबल योजना का लाभ अवश्य लें। कमिश्नर ने बताया की जगह-जगह शिविर आयोजित कर 15 विभागों की 45 योजनाएं एवं 14 विभागों की 63 सेवाओं का लाभ आम जनता को प्राथमिकता से दिलाया जा रहा है। उन्होंने शिविर में आए ग्रामीणों को नि:शक्त विवाह प्रोत्साहन योजना, विधवा विवाह प्रोत्साहन योजना, दिव्यांग पेंशन, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, कल्याणी पेंशन आदि के संबंध में जानकारी दी। शिविर में मौजूद ग्रामीणों ने अपनी समस्याओं से कमिश्नर को अवगत कराया। राजेश कुशवाहा ने बताया कि उनके जमीन का नामांतरण होना है, वही सीताबाई ने बताया कि अब तक उन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ नहीं मिला है। साथ ही उनकी पोती 4 माह की हो चुकी है लेकिन अभी भी जननी सुरक्षा का पैसा उन्हें प्राप्त नहीं हुआ है। मौके पर मौजूद अधिकारियों ने बताया कि जल्दी ही जननी सुरक्षा योजना का पैसा शीघ्र ही हितग्राही को दिलाया जाएगा। श्रीमती सीताबाई ने बताया कि अब तक उन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ नहीं मिला है। सरपंच ने अवगत कराया की प्रधानमंत्री आवास योजना में सीताबाई का नाम हितग्राहियों की लिस्ट में 114 नंबर है। वर्तमान में 69 नंबर वाले प्रतिक्षा सूची वालों को प्रधानमंत्री आवास का लाभ मिला है। कुछ समय बाद जब इनका नंबर आएगा तो इन्हें भी प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ दिलाया जाएगा। कमिश्नर ने शिविर में आए ग्रामीणों को बताया कि 11 दिसंबर से मुख्यमंत्री जन कल्याण अभियान प्रारंभ हो चुका है जो 26 जनवरी तक चलेगा। इस दौरान सभी योजनाओं का लाभ ग्रामीणों को प्राथमिकता से दिलाया जाएगा। कमिश्नर ने शिविर में ग्रामीणों से अविवादित नामांतरण, सीमांकन बंटवारा, एवं अन्य राजस्व मामलों को लेकर आ रही समस्याओं की जानकारी ली। ग्रामीणों ने बताया कि गांव में पानी निकासी की व्यवस्था नहीं है विशेष तौर पर जीवन कॉलोनी में निकासी की कोई व्यवस्था नहीं है। विद्युत विभाग द्वारा मनमाना बिजली का बिल दिया जा रहा है। कमिश्नर ने पानी निकासी के लिए आवश्यक निर्देश जारी किए साथ ही विद्युत विभाग के यंत्री को निर्देश दिए कि वह सभी के मीटर चेक करें और देखें की क्षमता से ज्यादा बिजली बिल ग्रामीणों को क्यों दिए जा रहे हैं। ग्राम के सचिव ने बताया कि 70 प्लस वालों के सभी लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाए जा चुके हैं। साथ ही सामान्य आयुष्मान कार्ड भी बना दिए गए हैं। एक महिला ने बताया कि कागज पर उनके पास एक एकड़ जमीन है लेकिन दबंगो द्वारा उनकी जमीन धीरे-धीरे दबाई जा रही हैं। कमिश्नर ने तत्संबंध में जांच कर उचित कार्यवाही करने के निर्देश दिए। रानी पिपरिया के सरपंच दिनेश पटेल के द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राहियों के नाम सूचना पटल पर इंद्राज किए जाने पर कमिश्नर ने सरपंच की सराहना की और जनपद पंचायत सोहागपुर के मुख्य कार्यपालन अधिकारी संजय अग्रवाल को निर्देश दिए कि वह अपने सभी ग्राम पंचायतों में प्रधानमंत्री आवास योजना के आगे लाभ प्राप्त करने वाले हितग्राहियों के नाम अवश्य लिखें ताकि सभी को अपने नंबर का पता रहे। रानी पिपरिया में कमिश्नर श्री तिवारी ने अशोक के पौधे का रोपण किया। इस दौरान उपायुक्त राजस्व गणेश जायसवाल, मुख्य अभियंता जल संसाधन विभाग राजाराम मीणा, नायब तहसीलदार श्रीमती नीरू जैन एवं अन्य संबंधित अधिकारी गण उपस्थित रहे।

स्वामित्व योजना अंतर्गत हितग्राहियों को भूमि स्वामी अधिकार अभिलेख के वितरण हेतु कार्यक्रम 27 को

नर्मदापुरम(निप्र)। संयुक्त कलेक्टर नर्मदापुरम ने बताया कि भारत सरकार के पंचायती राज मंत्रालय द्वारा स्वामित्व योजना का केन्द्र स्तरीय कार्यक्रम 27 दिसम्बर को किया जाना है। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रधानमंत्री द्वारा वीडियों कांफ्रेंस के माध्यम से संपूर्ण देश से चयनित स्वामित्व योजना के लाभार्थियों से बात करेंगे, साथ ही इलेक्ट्रानिक माध्यम से अधिकार अभिलेख का वितरण किया जाएगा। योजना के अंतर्गत सभी जिलों में पात्र हितग्राहियों को भूमि स्वामी अधिकार अभिलेख का वितरण सांसद, विधायक, जन प्रतिनिधियों की उपस्थिति में समरोहपूर्व किया जाना है। तत्संबंध में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत, समस्त तहसीलदार एवं समस्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत जिला नर्मदापुरम को निर्देशित किया गया कि हितग्राहियों को भूमि स्वामी अधिकार अभिलेख का वितरण कार्यक्रम 27 दिसम्बर को सभी ग्राम पंचायतों एवं जिला स्तर पर भारत सरकार, पंचायती राज मंत्रालय द्वारा जारी दिशा निर्देशों के अनुसार किया जाना सुनिश्चित करें।

स्प्रिंगडेल्स स्पेक्ट्रम अर्थात शिक्षा का कैनवास प्रतिभा से चित्रित क्षितिज

नर्मदापुरम (निप्र)। आर्ट एग्जिबिशन एक शानदार अवसर है प्रतिभा की स्पष्ट प्रस्तुति, कलाकारों का अपने दर्शकों को संदेशए जागरूकता बढ़ाने व एक नया विचार साझा करने का अवसर देती हैं। इस प्रदर्शनी को आयोजित करने का उद्देश्य विद्यालय अध्यनरत बाल कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए मंच प्रदान करना है। कला भावनाओं को अनोखे ढंग से व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम प्रदान करने हेतु स्प्रिंगडेल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शनिवार को वार्षिक इवेंट क्षितिज का आयोजन किया गया। जिसमें बच्चों अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए 700 उत्कृष्ट पेंटिंग्स बनाई तथा 250 आकर्षक वॉल हैंगिंग्स प्रदर्शित किए साथ ही स्कूल के प्रत्येक स्थान को बच्चों ने अपने हाथ से बनी हुई कलाकृतियों से बड़े ही आकर्षक रूप में सजाया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि राज्यसभा सदस्य श्रीमती माया नारोलिया, विशिष्ट अतिथि लोकसभा सदस्य दर्शन सिंह चौधरी अध्यक्ष डिप्टी कलेक्टर डॉ बबिता राठौर रहे एवं चेयरमैन संज्ञा शिक्षा एवं समाज कल्याण समिति के चेयरमैन पी के चटर्जी एवं डायरेक्टर श्रीमती प्रोनोती चटर्जी उपस्थित रहीं तथा समापन समारोह के मुख्य अतिथि शासकीय होम साइंस कॉलेज प्राचार्य डॉ कामिनी जैन जिला यूथ एंड स्पोर्ट्स ऑफिसर सुश्री उमा पटेल एवं अध्यक्ष नर्मदापुरम मठ मंदिर समिति अध्यक्ष डॉ गोपाल प्रसाद खड्डर रहे।

व्यवसाय विस्तार के लिए वरदान साबित हो रही पीएमएफएमई योजना

नर्मदापुरम(निप्र)। प्रधानमंत्री सूक्ष्मखाद्य प्रसंस्करण उद्योग उन्नयन योजना (PMFME) ने न केवल छोटे उद्यमियों को आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में मदद की है, बल्कि इससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और सामाजिक बदलाव भी आए हैं। एक ऐसी ही सफलता की कहानी है सत्यम बाथरी की, जो नर्मदापुरम जिले के माखननगर विकासखंड के निवासी हैं। सत्यम बाथरी की सफलता की कहानी प्रेरणादायक है, और यह PMFME योजना के प्रभावी क्रियान्वयन का एक बेहतरीन उदाहरण है, जिसने उन्हें और उनके समुदाय को न सिर्फ आर्थिक रूप से सशक्त किया, बल्कि उनकी दिशा में सकारात्मक बदलाव भी लाया। अपने बारे में बताते हुए सत्यम बाथरी ने कहा कि उन्होनें अपने परिवार के सहयोग से दुग्ध उत्पाद उद्योग की शुरुआत की, जो अब उनकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के साथ-साथ क्षेत्रीय रोजगार का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन चुका है। उन्होंने अपनी मेहनत और समर्पण से 11 लाख रुपए की सालाना आय अर्जित की, जो अब बढ़कर 84 लाख रुपए प्रति वर्ष हो गई है।

रोजगार मेले में 353 छात्र छात्राओं की उपस्थिती रही 198 छात्र छात्राओं का प्राथमिकता के लिये चयन

नर्मदापुरम। माखन नगर (निप्र)। कलेक्टर के निर्देशानुसार एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन माखन नगर में किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि मनीष चतुर्वेदी मंण्डल अध्यक्ष, सुश्री निराजना दुबे पार्षद , अनुप कुमार शेन्द्रे प्राचार्य शासकीय आई.टी.आई माखन नगर एवं महाविद्यालय प्राचार्य डॉ नीता चौबे जिला रोजगार अधिकारी डॉएबी खान एवं धर्मेश तिवारी द्वारा रोजगार मेले में विशेष भूमिका रही। एवं प्रो आर के चौकीकर प्रो आर.एस. पटेल प्रो डी एस खत्री डॉ आई.एस कनेश डॉ अमिताभ शुक्ला डॉ क्षमा मेहरा टीपीओ जिसमें 353 छात्र छात्राओं की उपस्थिती रही एवं 198 छात्र छात्राओं का प्राथमिकता के लिये चयन किया गया। एवं कुछ छात्र-छात्राओं को ऑफर लेटर मंच द्वारा प्राप्त हुए। रोजगार मेले में निजी क्षेत्र में रोजगार दिलाने वाली 14 कंपनिया उपस्थित रही।

मेडिटेशन ट्रेनर नेहा लखेरा द्वारा कॉलेज में कराया गया ध्यान अभ्यास

भैरूंदा/नसरुल्लागंज (संजय कलमोर)। शासकीय महाविद्यालय, भैरूंदा के द्वारा शनिवार 21 दिसंबर को प्रथम विश्व ध्यान दिवस के उपलक्ष में आंतरिक शांति, वैश्विक सद्भाव के विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मेडिटेशन ट्रेनर बी.के. नेहा लखेरा द्वारा विद्यार्थियों, एनएसएस के स्वयंसेवकों और शिक्षकों को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। उन्होंने बताया कि मेडिटेशन विचारशून्यता नहीं बल्कि पॉजिटिव विचारों को एक डायरेक्शन देना है जिससे हमारे जीवन में मानसिक शांति, आनंद, खुशी की अनुभूति होती है साथ ही नफरत,डर, ईर्ष्या जैसी नेगेटिव भावनाएं खत्म होती होती है। उन्होंने बताया कि डॉक्टर के अनुसार 90 प्रतिशत से अधिक शारीरिक बीमारियां भी मन की गलत सोच, तनाव, अवसाद, अनिद्रा, चिंता आदि से उत्पन्न होती है लेकिन ध्यान से हमारा मन शक्तिशाली होता है और यदि मन शक्तिशाली है तो जीवन में आने वाली समस्याएं और परिस्थिति हम पर हावी नहीं हो पाते इसलिए सभी को प्रतिदिन कम से कम 10 मिनट ध्यान का अभ्यास जरूर करना चाहिए।

पचमढ़ी महोत्सव 2024-25: साहसिक गतिविधियों और सांस्कृतिक समृद्धि का संगम

26 दिसंबर से 1 जनवरी तक आयोजित किया जाएगा पचमढ़ी महोत्सव इस वर्ष कॉर्निवल का आयोजन रहेगा मुख्य आकर्षण का केन्द्र

नर्मदापुरम (निप्र)। मध्यप्रदेश के पर्यटन स्थल पचमढ़ी में इस वर्ष 26 दिसंबर से 1 जनवरी 2025 तक आयोजित होने वाला पचमढ़ी महोत्सव 2024-25 पर्यटकों के लिए एक अनूठा अनुभव साबित होगा। साहसिक गतिविधियों से लेकर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों तक, इस महोत्सव में हर उम्र और रुचि के पर्यटकों के लिए कुछ न कुछ खास होगा।

साहसिक गतिविधियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम

इस वर्ष पचमढ़ी महोत्सव में साहसिक ट्रेकिंग, कैम्पिंग, साइकलिंग, और अन्य साहसिक गतिविधियों का आयोजन होगा। इसके साथ ही सांस्कृतिक लोक नृत्य, संगीत, आर्मी बैंड और योग की विशेष प्रस्तुतियाँ पर्यटकों को आकर्षित करेंगी। खासतौर पर, पचमढ़ी रन, भोजन मिलेट कैफे, जैविक खाद्य महोत्सव और ताजे प्राकृतिक उत्पादों का आनंद लेने का अवसर मिलेगा। साथ ही पक्षी दर्शन, प्रकृति भ्रमण और तितली दर्शन जैसी गतिविधियाँ पर्यटकों को प्रकृति के करीब लाएंगी।

हेरिटेज और धार्मिक पर्यटन

हेरिटेज रॉक आर्ट पेंटिंग, हेरिटेज वॉक, तारों का अवलोकन, और धार्मिक स्थल जैसे चौरागढ़, महादेव मंदिर और अन्य मंदिर यात्रा भी महोत्सव का हिस्सा होंगे। ये गतिविधियाँ पचमढ़ी की सांस्कृतिक और धार्मिक धरोहर का अन्वेषण करने का अनूठा अवसर प्रदान करेंगी।

विशेष आकर्षण और संगीत प्रस्तुतियाँ

पचमढ़ी महोत्सव के दौरान 26 दिसंबर को एक रंगारंग कार्निवल का आयोजन होगा, जो कि महोत्सव का मुख्य आकर्षण का केन्द्र होगा। जिसमें पर्यटकों का स्वागत किया जाएगा। इसके बाद, 29 दिसंबर को मिलिट्री बैंड द्वारा एक सुमधुर संगीत प्रस्तुति दी जाएगी। महोत्सव में खासतौर पर 30 दिसंबर को सारेगामापा और बॉलीवुड गायिका इशिता विश्वकर्मा अपने मधुर स्वरों से महोत्सव को संगीतमय बनाएंगी। 31 दिसंबर को हास्य कवि हिमांशु बवंडर (शर्मा) पर्यटकों के लिए हंसी-ठहाकों के साथ वर्ष 2024 को विदाई देंगे। नववर्ष उत्सव के दौरान पर्यटक पचमढ़ी में वर्ष 2025 के पहले सूर्योदय का आनंद लेंगे। पचमढ़ी का प्राकृतिक सौंदर्य और शांति नए साल का स्वागत करने के लिए एक उत्तम स्थल प्रदान करेगा। पचमढ़ी महोत्सव का एक सप्ताह का यह आयोजन पर्यटकों को साहसिक गतिविधियों, सांस्कृतिक समृद्धि और धार्मिक अनुभवों का संपूर्ण मिश्रण प्रदान करेगा, जिससे हर व्यक्ति को एक सकारात्मक और उत्साही अनुभव प्राप्त होगा। पचमढ़ी महोत्सव 2024-25 पर्यटन, संस्कृति और साहसिक गतिविधियों का अद्वितीय संगम साबित होगा, और पर्यटकों के लिए यादगार पल प्रदान करेगा।

खुशियों की दास्तान

शासन की योजना से 6 माह की बच्ची भाव्या का हुआ सफल ऑपरेशन

नर्मदापुरम(निप्र)। मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्वास्थ्य हित में चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं में से एक राष्ट्रीय बाल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत जिले के माखन नगर ब?लाक के ग्राम बागरातवा निवासी वीरेन्द्र कतिया की 6 माह की बेटी भाव्या को आरबीएसके. योजना का लाभ मिला। आरबीएसके टीम माखननगर जिसमें डॉ. गुलाबदास यादव, पूजा शुक्ला एवं टीना गुलाटी द्वारा ग्राम की आगनबाड़ी केन्द्र में 11 मई 2024 को बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। टीम द्वारा 6 माह की बच्ची भाव्या कतिया कटे फटे होंठ एवं तालू विकृति से चिहिन्त किया गया। जिसको उच्च इलाज हेतु डीईआईसी नर्मदापुरम रिफर किया गया। जहां पर चिकित्सा विशेषज्ञों ने बताया की बालिका का इलाज भोपाल के उच्च संस्थान में होना संभव है। जिस पर डीईआईसी टीम द्वारा सीएमएचओ डॉ. दिनेश देहलवार सर से विस्तृत जानकारी प्रदान की एवं सीएमएचओ द्वारा बालिका के उपचार हेतु बिसोनिया चिकित्सालय भोपाल जाने हेतु निर्देशित किया। जहां 09 जून 2024 को बच्ची का कटे फटे होंठ एवं तालू का नि:शुल्क एवं सफल ऑपरेशन हुआ। जिससे बालिका एवं बालिका का परिवार खुशियों से झूम उठा। तथा परिवार द्वारा मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, कलेक्टर सोनिया मीना, सीएमएचओ डॉ. दिनेश देहलवार एवं आर.बी.एस.के टीम का हृदय से बहुत बहुत आभार व्यक्त किया गया।

समेरिटंस विद्यालय का अनूठा प्रयोग पेरेंटिंग एक चैलेंज, सामाजिक दायित्व ,व्याख्यानमाला में विषेषज्ञों ने रखे विचार

नर्मदापुरम(निप्र)। वर्तमान समय में बच्चों का पालन.पोषण उनकी शिक्षा और संस्कार एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है। समाज में नैतिक मूल्यों की गिरावट मोबाइल फोन का बढ़ता उपयोग और अन्य परिस्थितियों के चलते समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। शिक्षक पालक और बालक के बीच संबंध शिथिल होते जा रहे हैं। इन्हीं सब समस्याओं के समाधान खोजने के उद्देश्य से समेरिटंस विद्यालय सांदीपनी परिसर में शनिवार को एक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। तीन सत्र की इस व्याख्यान माला में विषय विशेषज्ञों ने अपने विचार और अनुभव सांझा किए। कार्यक्रम में शिक्षकए अभिभावकों और बच्चों ने भी अपनी सक्रिय सहभागिता निभाई। आयोजन के संबंध में संस्था के डायरेक्टर डा आशुतोष कुमार शर्मा ने बताया कि यह एक रचनात्मक और सार्थक पहल है। इससे निश्चित रूप से हम समस्याओं के समाधान की दिशा में अग्रसर होंगे और बच्चों को तुलनात्मक रूप से अधिक श्रेष्ठ शिक्षा और संस्कार दे सकेंगे। उन्होंने बताया कि शिक्षक पालक और बालक तीनों सब एक समान विचार के साथ एक दिशा में चलते हैं तभी परिणाम अच्छे हो सकते हैं। यदि इन तीनों में आपसी सामंजस्य नहीं होगा और विरोधाभास होगा तो आशानुरूप परिणाम नहीं आएंगे। इन तीनों के बीच आपसी समझ विश्वास श्रद्धा और मधुर संबंध होना आवश्यक है।

संवाद से ही निकलेगा समाधान: शुक्ला

शासकीय एसएनजी विद्यालय के प्राचार्य संदीप शुक्ला ने प्रथम सत्र में विद्यार्थी शिक्षक और अभिभावक त्रिवेणी बनाम त्रिकोण विषय पर कहा कि यह सही है कि वर्तमान में इन तीनों के बीच कई बार सामंजस्य गड़बड़ा जाता है। ऐसे में हमें अधिक से अधिक संवाद कायम करना होगा। इसकी पहल विद्यालय या अभिभावक दोनों ओर से होनी चाहिए। इससे ही समस्या का समाधान निकलेगा। तीनों के बीच यदि सतत चर्चा चलती रहेगी तो कभी गतिरोध पैदा ही नहीं होगा।

अनुशासन बाहर भी और अंदर भी: एसडीओपी सैनी

न केवल विद्यार्थी जीवन में अपितु संपूर्ण जीवन में अनुशासन का विशेष महत्व है। इसके बिना जीवन सार्थक नहीं होगा। अनुशासन बाहरी आचार-व्यवहार के साथ ही आंतरिक भी होना जरूरी है। यह बात द्वितीय सत्र में एसडीओपी पराग सैनी ने कानून की मर्यादा और अनुशासन विषय पर कही। उन्होंने कहा कि आपके बोलने चलने खड़े होनेए बैठने खाने.पीने हर तरह के कार्य में अनुशासन झलकना चाहिए। अनुशासन परिस्थिति और स्थान के साथ बदलता रहता है। हमें उसी के अनुसार आचरण करना चाहिए। क्लास रूम का अलग अनुशासन है तो खेल मैदान का अलग।

सनातन की नींव पर ही बनेगा संस्कारों का भवन : व्यास

अंतिम और समापन सत्र में शिक्षाविद् संतोष व्यास ने बच्चों में संस्कार विषय पर बोलते हुए कहा कि संस्कारों का भवन तो सनातन की नींव पर ही बन सकेगा। बदले आधुनिक परिवेश में हम सनातन परंपराओं को छोड़ते जा रहे हैं इसी कारण संस्कारहीनता का संकट खड़ा हो गया है। हमें दिखावे में न उलझकर बच्चों को सनातन से जोड़ने की प्रक्रिया प्रारंभ करनी चाहिए। यह काम एक झटके में नहीं होगा।

इसके लिए निरंतर प्रयास करने होंगे। इसके लिए हमें स्वयं की जीवन शैली में बदलाव करना होगा क्योंकि बच्चे कहने से नहीं अपितु देखने से सीखते हैं। कार्यक्रम का संचालन और विषय की भूमिका प्रमोद शर्मा ने रखी जबकि समापन वक्तव्य प्राचार्य श्रीमती प्रेरणा रावत ने दिया।

स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक कृष्णकांत सक्सेना की ओर से श्री बालाजी प्रिंटर्स, प्लाट नं. 21, सेक्टर-एच, इंडस्ट्रियल एरिया, गोविंदपुरा भोपाल से मुद्रित तथा "शिवरानी भवन", क्षितिज किरण स्ट्रीट, कोठी बाजार, नर्मदापुरम (होशंगाबाद) से प्रकाशित। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा। मो. 9425025999 (नर्मदापुरम मो. 9926434695) ई-मेल - dainikkshitijkiran@gmail.com, वेबसाइट- www.kshitijkiran.com